आर.एन.आई. नं. 7387/63
मुद्रण तिथि : 15-16 सितम्बर 2022
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 सितम्बर 2022
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 60 अंक : 11
मूल्य : 10/- पृष्ठ संख्या : 76
डाक पंजीयन संख्या BIKANER/022/2021-23
Office Posted At R.M.S., Bikaner

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

धार्मिक

पाक्षिक

राम चमकते भानु समाना

संघ समर्पणा ही परम ध्येय हो

सुविचार

बिन्दु से सिन्धु तक

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

- विद्या से सदाचार व सदाचार से जीवन में पात्रता आए, तो ही वह सचमुच में विद्या है।
- हमारे पास भाव हैं तो शब्द लाभकारी हो सकते हैं, यदि भाव ही नहीं तो शब्द लाभदायी नहीं हो सकते।
- चाबी से जैसे तिजोरी का ताला खुल जाता है, वैसे ही परमात्म स्तुति से हमारे अन्तर के द्वार उद्घटित हो जाते हैं।
- तुम्हें जो मनुष्य जन्म मिला है वह हीरे से भी अत्यंत मूल्यवान है। इसे स्वार्थ की अंगूठी में जड़ रहे हो या परमार्थ की अंगूठी में? सोचो!
- जल में लकीर खींचने से लकीर नजर नहीं आती है, वैसे ही हमारे मन पर कोई रेखा बने नहीं, मन पर कोई निशान रहे नहीं, इसका ध्यान रखा जाए।
- चिन्ता है तो चित्त में चंचलता आए बिना नहीं रहेगी। चंचलता भय की जननी है, जो भय का पालन-पोषण करती है।
- प्रतिकूल परिस्थितियों में भी कर्तव्य भाव जागृत रहे। प्रकाश, चैतन्य की दिशा में पैर आगे बढ़ते रहें। ऐसी चेतना हमारे भीतर जागृत हो यह प्रयास करना चाहिए।
- साधक जब साधना हेतु उद्यत होता है, तब अनेक बाधाएं भी उपस्थित होती हैं। इन बाधाओं को दूर कर लेने के बाद ही साधना का पथ दृष्टिगत होता है।
- सबसे उत्तम प्रयास यह होगा कि सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति में गुण ढूंढ़ने शुरू करें और उनके गुणों के प्रति अहोभाव भी प्रकट करें।
- भोजन का रस बनने व पाचन होने पर शरीर में शक्ति का संचार होता है वैसे ही आध्यात्मिक क्षेत्र में ज्ञानार्जन एवं स्वाध्याय हो, स्वाध्याय के पश्चात् उस पर चिंतन-मनन हो तो श्रद्धामय शक्ति का संचार होता है।
- समुद्र के ऊपरी स्तर पर तरंगें परिलक्षित होती है किन्तु अन्दर में शांति होती है। वैसे ही मानसिक स्तर पर कभी हलचल हो जाए तो अन्तर में उस हलचल को आश्रय नहीं देना चाहिए।
- पानी में इतनी शक्ति है कि यदि बार-बार उसकी चोट पड़े तो पत्थर को भी काट देता हैं, वैसे ही हमारे भीतर भी अनन्त गुणा शक्ति विद्यमान है, पर हम राग-द्वेष की परतों को हटाकर उस शक्ति को उद्घाटित नहीं कर पाते हैं।
- परमात्म रूपी दर्पण की सहायता से अपनी आत्मा को शृंगारित करने का प्रयास करें, क्योंकि यह सत्य है कि भीतर कुछ और तथा बाहर कुछ और बने रहेंगे तो अपने वास्तविक सौंदर्य-चरित्र सौंदर्य को नहीं निखार पाएंगे।

संघ हमारा अविचल मंगल, नन्दनवन-सा महक रहा।
हम सब इसके फूल व कलियां, सुन्दरतम निज संघ अहा।।1।।

आ ग म वा णी

असुभो जो परिणामो सा हिंसा।

–विशेषावश्यकभाष्य (1766)

निश्चय-नय की दृष्टि से आत्मा का अशुभ परिणाम ही हिंसा है।

According to the absolute standpoint, violence is nothing but the impious disposition of the soul itself.

दुक्खं खु णिरणुकंपा।

–निशीथभाष्य (5633)

किसी के प्रति निर्दयता का भाव रखना वस्तुत: दु:खदायी है।

To harbour a feeling of inclemency towards the others is really miserable.

अहिंसैव जगन्माता ऽ हिंसैवानन्दपद्धति:।
अहिंसैव गति:साध्वी श्रीरहिंसैव शाश्वती।।

–ज्ञानार्णव (पृ. 115)

अहिंसा ही जगत् की माता है, अहिंसा ही आनन्द का मार्ग है,
अहिंसा ही उत्तम गति है तथा अहिंसा ही शाश्वत लक्ष्मी है।

Non-Violence is the universal mother, it is the path of happiness, it is the nobility of disposition and it is the eternal spiritual wealth.

प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा।

–तत्त्वार्थसूत्र (7/8)

प्रमत्तयोग (प्रमाद) द्वारा पर-प्राणों का नाश करना हिंसा है।

To hurt others due to negligence is violence.

हिंसन्नियं वा न कहं कहेज्जा।

–सूत्रकृतांग (10/10)

ऐसी कोई कथा-बात भी नहीं कहनी चाहिए, जिससे हिंसा को बढ़ावा मिले।

One must not say something that may promote violence.

साभार– प्राकृत मुक्तावली

संघ समष्टि का हित करता, व्यष्टि उसमें शामिल है।
संघ हेतु निज स्वार्थ तजे जो, वही प्रशंसा काबिल है।।3।।

अनुक्रमणिका

जीवनी/धर्मदेशना

CELEBRATION OF THE DEEKSHA CEREMONY –07

विहंगावलोकन 09

संघ-शक्ति का महात्म्य-13

श्रद्धा-समर्पणा का मूलाधार – अहं का विसर्जन-18

ज्ञान सार

ऐसी वाणी बोलिए 22

श्रीमद् भगवतीसूत्र 25

श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र-26

तत्त्व ज्ञान

समकित के 67 बोल-29

संस्कार सौरभ

संघ सेवा : अपूर्व अवसर-33

साधुमार्गी फैक्ट्स 35

संघ साधना 37

महासती द्रौपदी 40

संस्कार 44

संघ 45

अहंकारी नहीं.. 'संस्कारी' बनें-47

भक्ति रस

राम दरबार 12

वीर गौतम-सी तस्वीर-36

मन चंचल मतवाला है-46

विविध

बालमन में उपजे ज्ञान-49

गुड बॉक्स 51

उदयपुर समाचार 53

वीर प्रभु के उपदेशों ने, संघ की महिमा गाई है।
सुर-नर वन्दन करे संघ को, संघ साधना भाई है।।2।।

सिक्के के दो पहलू

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

प्रवृत्ति और निवृत्ति, विधि और निषेध, एक ही सिक्के के दो पहलू हैं या एक ही रथ के दो चक्र हैं। सिक्के के दोनों ओर कुछ अंकन किया हुआ होता है। दोनों ओर का अंकन सही और ठीक-ठीक स्थिति में होने पर ही सिक्का सही माना जाता है। उसके दोनों पहलू यथावत् होने पर ही वह अपना सही मूल्य पाता है। यदि सिक्का एक तरफ से घिसा-पिटा हो तो वह अपना सही मूल्य नहीं पा सकता। एक चक्र के द्वारा रथ की गति संभव नहीं है। रथ के दोनों पहिए जब साथ-साथ घूमते हैं तब रथ की गति होती है और उसके द्वारा मंजिल पर पहुंचा जा सकता है। इसी तरह प्रवृत्ति और निवृत्ति रूपी दोनों चक्रों से ही धर्म-रथ की गति हो सकती है। प्रवृत्ति और निवृत्ति एक ही धर्मरूपी सिक्के के दो पहलू हैं। एक के बिना दूसरा अपूर्ण है। ये दोनों एक-दूसरे के पूरक होते हैं, विरोधी नहीं। अशुभ से हटना निवृत्ति है और शुभ में लगना प्रवृत्ति है। विधि प्रवृत्तिपरक है और निषेध निवृत्तिपरक। जब अशुभ से निवृत्ति की जाती है तो शुभ में प्रवृत्ति होने पर अशुभ से निवृत्ति सहज हो जाती है। ये दोनों जीवन में साथ-साथ चलते हैं।

साभार- नानेशवाणी-45

प्रयास, पद के लिए नहीं

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

कार्यकर्त्ता को पद प्राप्ति का लक्ष्य नहीं रखना चाहिए। यदि पद प्राप्त हो तो उसे इतना दृढ़ भी नहीं होना चाहिए कि मैं पद नहीं लूंगा। यदि उसमें योग्यता है तो उसे पद ग्रहण करना चाहिए। उसके साथ ही उसे विचार करना चाहिए कि पद प्राप्त होने का अर्थ है - दायित्व विस्तार। पहले से मेरा उत्तरदायित्व बढ़ गया है। पद की गरिमा के अनुरूप मुझे पूरे मनोयोग से दायित्व का निर्वाह करना चाहिए। उसे यह भी विचार करना चाहिए कि इसके माध्यम से मुझे योग्यता बढ़ाने का भी अवसर मिला है। मैं इसके माध्यम से अपनी अर्हताओं को विकसित करुं, संभावनाओं को साकार करुं। यह अवसर मुझमें रही संभावनाओं को साकार रूप देने के लिए प्राप्त हुआ है, न कि मात्र जश्न मनाने के लिए। सच्चा कार्यकर्त्ता कार्य को जश्न मानता है। वह अलग से जश्न मनाने में विश्वास नहीं करता है। मनाया जाने वाला जश्न अल्पजीवी होता है, जबकि कार्यरूप से मनाया गया जश्न दीर्घजीवी होता है। दोनों का आनन्द भी भिन्न-भिन्न होता है। कार्य की क्रियान्विति रूप में जो जश्न होता है, वह गहरा आत्मतोष देने वाला होता है।

पद प्राप्ति का गर्व तो करना ही नहीं चाहिए, क्योंकि वह उसका लक्ष्य नहीं था। उसका लक्ष्य श्रेष्ठ कार्यकर्त्ता बनने का होता है, उसे उसी रूप में स्वयं को आगे बढ़ाना चाहिए। कार्यकर्त्ता को अपने सामर्थ्य को विकसित करते रहना चाहिए। वह तब होता है, जब वह कार्य को सम्पादित करने में निरन्तर लगा रहे। जो कार्य सम्पादित हो चुका है, उसे और कितना श्रेष्ठ आकार दिया जा सकता है। उसमें और कितना सौन्दर्य भरा जा सकता है ? उसे और कितना कलात्मक रूप दिया जा सकता है ? इस पर भी उसका चिन्तन गतिशील रहना चाहिए। पद प्राप्ति लक्ष्य न हो।

यदि प्राप्त हो तो उसे योग्यता को बढ़ाने का अवसर समझते हुए पद की गरिमा को बढ़ाने के लिए उसके अनुरूप कार्य सम्पादित करने का लक्ष्य रखना चाहिए।

दिनांक : 30 जुलाई 2015

साभार- अनाहत नाद

नंदनवन-सा संघ अहा

चतुर्विध संघ
(साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका)
लगभग 2600 वर्ष पूर्व स्थापित

साधुमार्ग परम्परा के 74वें पाट पर
आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म.सा.
(लगभग 200 वर्ष पूर्व)

वर्तमान में आचार्य श्री रामलालजी म.सा.
(82वें पाट पर)
आपश्रीजी की नैश्राय में 450 से साधु-साध्वीवृंद

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
(स्थापना 30 सितम्बर 1962) (सदस्य : 88,085)

धार्मिक | शैक्षणिक | साहित्य | संस्कार | व्यसनमुक्ति

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति
(स्थापना : 1967) (सदस्य : 16,000)
शैक्षणिक
सर्वधर्मी सहयोग
महिला सशक्तिकरण
जैन संस्कार पाठ्यक्रम

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी समता युवा संघ
(स्थापना : 1979) (सदस्य : 6,352)
उत्क्रांति
व्यसनमुक्ति अभियान
रक्तदान शिविर
समता शाखा

साधुमार्गी ग्लोबल कार्ड : 35,574 से अधिक

व्यक्तिवाद विद्वेष बढ़ाता, संघवाद दे प्रेम सदा।
व्यक्ति भाव को छोड़ समर्पण, संघ भाव में रहे सदा।।4।।
(PUJYA HUKMESH)

CELEBRATION OF THE DEEKSHA CEREMONY

Golden Glipmses of ACHARYA SHRI HUKMICHANDJI M.S.

Under the "Achar Vishuddhi Mahotsav" the english translated series of "Pujya Hukmesh" is presented below to make the readers aware about the life of ACHARYA SHRI HUKMICHAND JI M.SA.

Continued from 15-16 Aug. 2022-

Dear children! The Chaplot family reached Todai with Hukmichand. They were a little sad as Deeksha was finalized to be given in Boondi, but finally, everyone got involved in preparing for the Deeksha ceremony. As soon as the close relatives living in different areas got this news, everyone started reaching Todai in bewilderment.

The entire city was celebrating it like a festival. Some were bringing the Vairagi back to their home with joy for lunch and dinner, while some were singing auspicious Deeksha songs, distributing prabhavana and some were applying mehndi to the vairagi. In doing so, the day of Deeksha also arrived.

On that day, everyone left Todai with a huge procession, and singing auspicious songs, they reached Boondi where the people of Boondi welcomed them with immense joy and everyone proceeded to Sthanak. There, after listening to Mangal Path, arrangements for their stay were done in a huge mansion, after which every family took Hukmichand to their home for lunch. Thereafter, brought to the place of his residence with bandwagons.

In this way, an atmosphere of celebration for Deeksha was created in every street and locality of Boondi. Seeing Hukmichand's bright face and beautiful detached emotion, everyone was appreciating the virtue of Pujya Shri Ji, as well as taking pride in Kota Gachha and Jainism. Here, after the end of Chaturmas, Pujyashri came back and was staying in a house outside the city (Boondi).

Head shaving, change of clothes, and Deeksha

Dear children! With the sunrise of **संवत् 1879 मिगसर सुदी द्वितीया**, Hukmichand reached the place designated for his Deeksha ceremony. They left their residence with a huge celebration and reached there walking on the major streets of Boondi. Elephants, horses, camels, etc. were arranged by the Boondi Sangh. Hukmichand came out of the city, where Pujyashri was seated with his disciples. Thereafter, he got down from the palanquin, reached Guru's feet, worshiped him with rituals, listened to Mangalpath,

and finally sat down in the northeast corner.

There he took off all the clothes that adorned his body and sat down to shave his head. The family barber who came from Todai considered this occasion as his great virtue and was honored in doing so. With great joy, he shaved Hukm's hair, leaving the hair like a ponytail in the middle of his head. Then the family members applied natural scrub (उबटन) on Hukm and after his bath, he was given **स्वलिंग सूचक चोलपट्टक, चादर, सदोरक मुखवस्त्रिका** to wear, **रजोहरण** in his hand, four vessels (**पात्र**) and limited clothes. Thereafter he was brought to a fully packed pandaal for the main ceremony. Their Pujya Shri Ji was sitting on the high table. Hukm got there and was made to stand right in front of Pujyashri while Honorable Ratanchand Ji Chaplot and Motibai stood next to their families.

Shedding tears from their eyes, they started requesting - "Gurudev! Take this Chaplot son as alms (**भिक्षा**) in form of your disciple and give him Jaineshwari Deeksha along with teachings such that he becomes more self-aware and attains salvation as soon as possible. Also, may he become a great influence on Jinshasana and increase the fame and glory of his parents, guru, and the entire Chaplot family."

After that Hukm paid his respects to Gurudev and all other saints by doing Vandana namaskar and said:- "Gurudev! Frightened by the world blazing like this forest, I have come to your feet by leaving behind love and attachment of family and mother in order to live the life of a saint. Now, by your incredible grace, please grant me the cool shade of the Kalpavriksha in the form of Deeksha; the provider of eternal happiness; by which I may be freed from the cycle of birth and death at the earliest."

Thus everyone listened to the sentimental request of Hukmichand. After that Pujya Shri Ji took the permission of the parents, along with family members and the entire Sangh. Then recited Mahamantra followed by **इच्छाकारेणं, तस्स उत्तरी**. After that, meditated 2 **लोगस्स** and then recited **ध्यान शुद्धि**. Next, after reciting the **लोगस्स**, uttered **करेमि भंते पाठ** three times and renounced him of all **सावद्य योगों** (all sorts of violence) in **तीन करण–तीन योगों** for his entire life.

Then recited **णमोत्थु णं सूत्र (शक्रस्तव)** and removed his last hair from his head (**लुंचन**). Then, after accepting him as his disciple, he blessed Saint Hukmichand and his naming ceremony was done. As soon as the naming was completed, the entire pandaal echoed with the shouts of Muni Shri Hukmichand Ji. After listening to the Mangal path from Pujya Shri Ji, everyone had food and returned back to their respective places. After exactly 7 days, by the method of **छेदोपस्थापनीय चारित्र**, by doing **महाव्रतारोपण**, he was given **बड़ी दीक्षा**.

Continued...

व्यक्ति अकेला निर्बल होता, संघ सबल होता मानें।
''संघे शक्तिः कलौ युगे'' की, सत्य भावना पहचानें।।5।।

विहंगावलोकन

15-16 अगस्त 2022 अंक से आगे... **जीवनी अंश - परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री श्रीलालजी म.सा.**

(आचार्य प्रवर 1008 श्री श्रीलालजी म.सा. के देवलोकगमन के पश्चात् उनके गुणानुवाद से हर कोई अपने आपको पावन कर रहा था। ऐसे अद्भुत योगी के अनेक गुणों का सारगर्भित विवेचन आपने गतांक में पढ़ा, अब उसके आगे का सार प्रस्तुत है।)

उस समय वहाँ वे दो ही श्रावक थे और दोनों पूज्यश्री के परमभक्त थे। एकान्त में भी पूज्यश्री दूसरे पक्ष वाले को परमप्रिय समझ बातचीत करते थे।

उपरोक्त घटना घटी उसी दिन पूज्यश्री ने बातचीत में बालचंदजी श्रीमाल से कहा कि मेरे सम्बन्ध में इस मामले में कुछ भी लेख, निंदा या स्तुतिरूप तुम्हें नहीं छपाने चाहिए। इसकी सौगन्ध ले लो, परन्तु उन्होंने कुछ उत्तर नहीं दिया। पूज्यश्री ने फिर समझाया कि यदि तुम सौगन्ध नहीं लेओगे तो मैं तुमसे बोलना बंद कर दूंगा। तब उन्होंने उसी समय सौगन्ध ले ली।

दूसरे उनकी निंदा करते हैं, ऐसे शब्द कभी वे सुनते तो उस मौके पर पूज्यश्री की गम्भीर मुखमुद्रा पर उसका अणुमात्र भी असर नहीं होता था तथा अपने मुँह से निंदा या अप्रसन्नता का एक भी शब्द कभी नहीं निकालते थे।

किसी भी धर्म वाले के साथ बड़ाई के कारण शास्त्रार्थ करने, वितंडावाद में उतरने के लिए पूज्यश्री बिलकुल खुश न थे, जिसका मुख्य कारण अपना वाणी-विवेक बचाये रखना ही था।

संवत् 1975 के चातुर्मास में एक समय उदयपुर में पूज्यश्री के व्याख्यान में एक वक्ता ने अपने भाषण में अमुक पक्ष के साधुओं की प्रवृत्ति के लिए सत्य, परन्तु कटु टीका की। इस टीका के मंगलाचरण में ही पूज्यश्री पाट से उठकर चले गए।

उदयपुर में तीन आचार्यों के चातुर्मास संवत् 1971 में एक साथ हुए थे। उस समय तेरहपंथी एवं मूर्तिपूजक भाइयों ने निंदा ट्रेक्टबाजी (प्रचार पत्र) इत्यादि कई क्लेशवर्धक प्रवृत्तियाँ कीं, परन्तु पूज्यश्री ने अनुपम क्षमा और शान्ति धारण कर निंदकों को प्रशंसक बना लिया था। उनके साथ पूज्यश्री का प्रेममय बर्ताव 'द्वेष का नाश द्वेष से नहीं अपितु प्रेम से ही होता है' इस आत्मवाक्य को चरितार्थ करता था।

तपश्चर्या

एकांतर- पूज्यश्री के 33 चातुर्मासों में से एक भी चातुर्मास शायद ही ऐसा गया होगा कि जिसमें आषाढ़ चौमासे से संवत्सरी तक उन्होंने एकांतर उपवास न किए हों। कई वक्त वे कार्तिक पूर्णिमा तक एकान्तर उपवास रखते थे। बेला, तेला चौला, पंचौला तो उन्होंने इतने किए हैं कि उनकी पूरी-पूरी गिनती करना भी कठिन है। पूज्य पदवी प्राप्त होने के पश्चात् 6 वर्ष तक तो हर महीने से एक-एक तेला बिना नागा करते थे। फिर भी कोई एक ही ऐसा मास गया होगा कि जिसमें पूज्यश्री ने तेला न किया हो। छः, सात और आठ उपवास के भी उन्होंने कई स्तोक किए हैं। सात-सात, आठ-आठ उपवास के दिन भी पूज्यश्री स्वयं ही व्याख्यान फरमाते थे। तेरह उपवास का भी एक स्तोक पूज्यश्री ने किया था।

वैयावृत्य- स्वयं आचार्य होने एवं शिष्य समुदाय भी अति विनीत होने पर भी आप स्वयं बाहर से पानी लाते और शिष्यों के लिए भी ला देते थे। इतना ही नहीं,

पात्र, झोली, पल्ले इत्यादि धोने या पानी छानने इत्यादि के कार्य में भी वे शिष्यों की पूरी मदद करते थे। उनके विनयवंत शिष्य ये काम न करने के लिए पूज्यश्री से बार-बार निवेदन करते, परन्तु वे अपने स्वभाव के कारण प्रमाद न कर कोई न कोई धर्म कार्य या वैयावृत्य में लगे रहते थे।

अल्पनिद्रा और स्वाध्याय- पूज्यश्री रात को 10 या 12 और कभी-कभी एक-दो बजे तक निद्राधीन न होते थे और दो या तीन बजे जागृत हो जाते थे। एक प्रहर से अधिक निद्रा वे कदाचित् ही लेते थे। नित्यप्रति रात को दो से तीन बजे तक निद्रा से जागृत हो सूत्र का स्वाध्याय करते थे। बहुत-से सूत्र उन्होंने कंठस्थ कर लिए थे। उसमें दशवैकालिक सूत्र का पाठ तो वे सबसे पहले कर लेते थे, फिर उत्तराध्ययन सूत्र के कितने ही अध्ययनों का पाठ करते थे। इसके पश्चात् आचारांग, सूत्रकृतांग, नंदी, सुखविपाक इत्यादि जो सूत्र कंठस्थ थे उनमें से किसी सूत्र का स्वाध्याय करते थे, फिर अर्थ का चिंतवन और तत्त्वविचार में लीन हो अप्रमादपन से रात निर्गमन करते थे। संख्याबद्ध स्तोक उन्हें कंठस्थ थे। कंठस्थ स्तोक की पर्यटना वे हमेशा करते थे। उनमें भी 24 तीर्थंकरों का लेखा, ज्ञानलब्धि इत्यादि कई थोकड़ों की पर्यटना तो वे नित्यप्रति करते थे।

कभी-कभी एक-आध घंटे की निद्रा ले वे जागृत हो जाते और स्वाध्यायादि में प्रवृत्त रहते थे। फिर निद्रा आने लगती तो स्वाध्याय करने के पश्चात् एक-आध घंटा निद्रा ले लेते और प्रतिक्रमण के पहले जागृत हो जाते थे। सूत्रों का स्वाध्याय कई समय वे अपने शिष्यों के साथ करते। शिष्य भी जल्दी उठकर पूज्यश्री के साथ स्वाध्याय करने लग जाते थे।

धीरे-धीरे परन्तु गंभीर और सुमधुर स्वर से इस स्वाध्याय को सुनने का जिन-जिन भाग्यशाली साधु-श्रावकों को सुअवसर प्राप्त हुआ है वे कहते हैं कि हमारे जीवन की वे सफल घटिकाएं थीं, उस समय का दृश्य कितना रम्य, बोधप्रद और आकर्षक था कि सिर्फ अनुभव से ही ज्ञात हो सकता है। सूत्र की अलौकिक वाणी का प्रवाह रात्रि की नीरव शांति में पूज्यश्री जैसे पवित्र पुरुष के मुखकमल में से बहता तब उसका प्रभाव कुछ भिन्न ही पड़ता था।

बालकों को शिक्षा देने का शौक

लघुवय से ही बालकों को सत्पुरुषों के संसर्ग का लाभ मिलता रहे तो उनके चरित्र का बंध उच्चतम हो जाता है। उत्तम गुण उनमें स्वयं प्रकट हो जाते हैं। इसलिए प्राचीन समय के श्रावक अपने बालकों को व्यावहारिक शिक्षा देने के पश्चात् धार्मिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए सद्गुरुओं के पास भेजते थे।

मोरवी में जब पूज्यश्री का चातुर्मास था तब जैनशाला के विद्यार्थी महाराजश्री के सत्संग का लाभ लेते थे। पूज्यश्री के दर्शन करने और वाणी श्रवण का लाभ लेने के लिए अत्यन्त आतुरता के साथ कोमल वयस्क बालक हमेशा पूज्यश्री के पास आते थे। भक्ति के रंग में रंगा हुआ उनका कोमल हृदय कमल वहां प्रफुल्लित हो जाता था और विनय से झुककर उनके शीश कमल पूज्यश्री के पद-कमल का स्पर्श करते थे। इस विधि के पश्चात् वे सब सुमधुर ध्वनि से 'जयवंता प्रभुवीर' का गायन करते थे। उस समय का दृश्य अत्यन्त रमणिक लगता था। गायन के पश्चात् वे पूज्यश्री के पास मर्यादा से बैठ जाते थे। ऐसे छोटे बालकों के योग्य कर्तव्य समझाने के लिए पूज्यश्री अपनी मधुर वाणी का प्रयोग युक्तिपूर्वक करते, जिससे बच्चों को आनंद के साथ ज्ञान प्राप्त हो और अपना कर्तव्य क्या है, उसे स्पष्ट समझ लें।

'कम खाना और गम खाना, पढ़ना ज्ञान

देखना अपना दोष, मानना गुरु वचन, सुनना शास्त्र, ग्रहण करना हितशिक्षा, देना हितोपदेश, लेना पराया गुण, सहना परीषह, चलना न्यायमार्ग, खाना गम, मारना मन, दमना इंद्रिय, तजना लोभ, भजना भगवंत, करना जीवाजीव का जतन, जपना जाप, तपना तप, खपाना कर्म, हरना पाप, मरना पंडितमरण, तरना भवसागर, करना सबका भला, धरना ध्यान, बढ़ाना क्रिया, रटना प्रभुनाम, हटाना कर्म, मांगना मुक्ति, लगाना उपयोग, करना जीवों का उपकार, रोकना गुस्सा, छोड़ना अभिमान, तजना झूठ, त्यागना चोरी, छोड़ना परस्त्री, रखना मर्यादा।'

ऐसे छोटे-छोटे वाक्य बालकों को कंठस्थ याद करवाकर उसका रहस्य वे ऐसी खूबी से तथा मनोरम दृष्टांतों से समझाते कि बालकों के हृदय पर उनकी गहन छाप पड़ जाती कि जो कभी न हट सके और एक नैतिक शिक्षा का अमल उस दिन से ही प्राय: प्रारंभ हो जाता था।

आजकल शिक्षक स्कूल में नीति पाठ रटा-रटा कर बालकों के मस्तिष्क में ठूंस-ठूंस कर भरते हैं, परन्तु उसका ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ता। घर में माता-पिता बार-बार जो शिक्षा देते हैं वे भी बालकों के गले नहीं उतरती, परन्तु ऐसे सचारित्री और प्रभावशाली महात्माओं के बोध से तल स्पर्शी प्रभाव पड़ता है। यह उनके चारित्र का ही प्रभाव समझना चाहिए। मोरवी के जैसी शुभ प्रवृत्ति राजकोट के चातुर्मास में भी पूज्यश्री की ओर से प्रचलित रही।

अवकाश मिलने पर बालकों को अपने समीप बिठाकर पंचपरमेष्ठी मंत्र सिखाते और उसकी अपार महिमा समझाते। उठते-बैठते प्रभु के नाम के गुणों का स्मरण करने की समझाइश देते। नवकार मंत्र का उच्चारण करते समय चंचल मन अन्य विषयों में गति न करे इसलिए आनुपूर्वी और अनानुपूर्वी की उपयोगिता समझाते। इतना ही नहीं, परन्तु बालकों को आनुपूर्वी की पुस्तक की मदद लिए बिना ही अंगुली के इशारे द्वारा गिनने की रीति समझाते थे। ऐसी-ऐसी रीतियां सीखना बड़े मनुष्यों को भी कठिन और कंटाले जैसा मालूम होती हैं, परन्तु पूज्यश्री की प्रशंसनीय शिक्षा पद्धति से बालकों को ये रीतियां सरल और आनन्दप्रदायक मालूम होती थी।

बालक भविष्य का संघ हैं। थोड़े वर्ष पश्चात् वीर शासन के रक्षा की धुरी इन्हीं के कंधों पर रखी जाएगी। इसलिए उन्हें अभी से ऐसी शिक्षा देना आवश्यक है कि जिससे उनके हृदय में धर्म पर प्रेम जगे। वे धर्म के सच्चे रहस्य को समझ सद्बर्तावशाली और सुखी हों एवं थोड़ी उम्र में ही वे धर्म को दिपाने वाले शासन के शृंगाररूप बन जाएं; नहीं तो ज्ञान के बिना धर्म के क्षेत्र में अंग्रेजी शिक्षा का जो परिणाम आ रहा है वह सब दृष्टिगत होता ही है।

निश्चय पर अटलता

पूज्यश्री स्वशक्ति और परिस्थिति का पूर्णता से विचार कर प्रबल बुद्धिमत्ता से जीवन के उद्देश्य निश्चित करते थे। फलां कार्य करना है और फलां नहीं करना है, यह मार्ग जाने योग्य है और वह अयोग्य है, ऐसी-ऐसी प्रतिज्ञाएं लेते, फिर प्राणी की परवाह न कर उन्हें बराबर पालते थे।

देहं पातयामि वा कार्यं साधयामि

यही उनका मुद्रा लेख था। छोटी उम्र में वे दृढ़निश्चयी थे। छोटे या बड़े प्रत्येक निश्चय में वे मेरु की तरह अटल रहते थे।

दीक्षा लेने का उनका निश्चय बदलवाने के लिए उनके कुटुम्बीजनों ने आकाश-पाताल एक कर डाला। अनेक परीषह आए, कैद में भी रहे, परन्तु ये नेक सत्याग्रही महापुरुष अपने निश्चय से तनिक भी न डिगे। साध्य प्राप्त करने की दृढ़ भावना वाले महापुरुष अपने मार्ग में चाहे जैसे आवरण आवें, उन्हें प्रबल पुरुषार्थ द्वारा किस तरह हटा देते हैं इसकी शिक्षा पूज्यश्री के जीवन में पद-पद पर मिलती है। मन वश करने के लिए निश्चय की निश्चलता एक उत्कृष्ट साधन है। जिन्होंने मन जीता, उन्होंने सब जीत लिया। मन और इंद्रियों पर विजय प्राप्त करना ही सच्चा जैन धर्म है। जगत् की सब सिद्धियां मन

की दृढ़ता से सिद्ध हो सकती हैं। पूज्यश्री आशातीत उन्नति साध सके, यह उनके मनोविग्रह का ही आधार है। उनके जैसे निश्चल, निश्चलवान, पवित्र, चारित्रवान, प्रभावक महापुरुष की भावनाएं हृदय में उतारकर उन-सा पुरुषार्थ कर स्व-परहित साधना ही कर्तव्य है और यही परम साध्य है। यह कर्तव्य और प्राप्तव्य जितना समीप-पास हो उतनी ही जीवनयात्रा की सफलता है।

अपने आर्य धर्मग्रंथों का प्रधान आशय एक्यता से भरा हुआ है, परन्तु मताग्रह के कारण ऐक्य की कड़ियां ढीली होती जाती हैं और अवनति को अवकाश मिलता जाता है। स्वयं जान-बूझकर जहर खाते हैं, जान-बूझकर अपना अकल्याण अपने हाथ से ही करते हैं, स्वार्थपूर्णता के कारण प्रकृति ने न्याय न किया, कुदरत की प्रणाली पलट जाए, निश्चयन खूंटी पर रखा जाए, वहां उदय की आशा व्यर्थ है। मीठे तरुवरों की जड़ें काट फिर पत्तों के खिरने से उनकी पूजा करना हास्यजनक गिना जाता है। संदेह के बदले सत्य का आदर होना चाहिए। संदेह में पड़े रहने से भलाई किसमें है, यह दृष्टिगत नहीं होता तो फिर भला कैसे हो?

एक अनुभवी महाशय सलाह देते हैं कि संसार में सत्य और मिथ्या का मिश्रण सब तरफ फैला हुआ दृष्टिगत होता है। उसमें सत्य को ग्रहण कर झूठ को त्याग देना ही मनुष्य कर्तव्य है। उस मनुष्य के देव और देवत्व प्राप्त करने में अधिक भोग देना पड़ता है। उस समय दृढ़ता से आगे बढ़ा जाए और असत्य के आकर्षणों से बचा जाए, यही सच्ची कसौटी है।

अंत:करण में उठते असंख्य विचारों-विकारों को वश में करने के लिए यही हृदय बल है। सर्वोत्कृष्ट बल 'साधयति आत्मकार्य मिति साधु:'।

लेखक- दुर्लभजी त्रिभुवनदासजी जौहरी, जयपुर

साभार- अद्‌भुत योगी

सितम्बर माह के इस अंक में आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा. का जीवन चरित्र 'अद्‌भुत योगी' का धारावाहिक समाप्त हुआ। महान परोपकारी आचार्यश्री का जीवन चरित्र निश्चय ही हृदय परिवर्तनकारी है। इनके संयमित जीवन से प्रेरणा लें और आत्मकल्याण के मार्ग की ओर अग्रसर होवें।

भक्ति रस

राम दरबार

-धर्मेंद्र पारख, रायपुर

उज्ज्वल है चादर थारो, उज्ज्वल तेरा रूप
पाटे पर विराज रहे, अरिहंत-सा स्वरूप
ज्ञान की गठरी खोलें, बांटे सब में समरूप
तेरे चरणों की धूल मिले, खिले मेरा आत्मस्वरूप

उज्ज्वल है दर्शन थारो, उज्ज्वल तेरा चारित्र
ज्ञान की पराकाष्ठा में बैठे जैसे कोई शूरवीर
सही राह दिखाते सबको, बढ़ाते मोक्ष की ओर
छ: काया की रक्षा हेतु कराते सबको आत्मबोध

उज्ज्वल है संयम थारो, उज्ज्वल तेरा नाम
क्रिया से महान हो, करते सबका आत्मउत्थान
साधुचर्या में लीन हो, भवी जीवों के तारणहार
नाना के हैं राम, नवम् पट पर विराजे ऐसे 'आचार्य श्री राम'

उज्ज्वल है दरबार थारो, उज्ज्वल प्रवचन की धार
जिनवाणी मुख से ऐसे निकले, जैसे अमृत की बरसात
सोच से जिज्ञासा निकले, बने नित नए आयाम
बिन मांगे मिले समस्या का समाधान,
ऐसा है मेरे गुरु का दरबार

ऐसा है मेरे गुरु कर दरबार
उज्ज्वल है राम नाम, हर युग की पहचान
धर्मेंद्र की वंदना स्वीकार करो भगवन्
दो ऐसा आशीर्वाद, धारण कर सकूं मैं भी मुनि अलंकार

एकसूत्र कोई भी तोड़े, रस्सी हस्ती को बांधे।
एक-एक मिल बना संघ यह, दु:सम्भव को भी साधे।।6।।

संघ-शक्ति का महात्म्य

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

''पद्म प्रभु जिन तुज मुज आंतरु रे...''

यह पद्म प्रभु के चरणों में प्रार्थना की कड़ियों का उच्चारण अपनी ही आन्तरिक शक्ति को जगाने का पुण्य कार्य है। परमात्मा के तुल्य शक्ति से सम्पन्न यह आत्मा इस विश्व के अन्दर सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्त्व है। इस तत्त्व की जागृति पर ही प्रगति की समूची आधारशिला टिकी हुई है। आत्मा को जागृत करने के लिए इसके सजातीय तत्त्व का सम्पादन किया जाना जरूरी है। इस आत्मा का यदि विश्व में कोई सजातीय तत्त्व है, तो वह परमात्मा ही है।

परमात्मा की परिपूर्ण विकसित अवस्था को प्राप्त करना ही इस आत्मा का ध्येय है। किन्तु इस ध्येय की ओर गति तब ही की जा सकती है, जब आत्मा स्वयं अपने स्वरूप को समझकर अपने व परमात्मा के बीच की दूरी को समाप्त करने की चेष्टा करे। परमात्मा और आत्मा, दोनों का स्वरूप समझने की दृष्टि से संसार में गहनतम हैं। इसी कारण इन स्वरूपों का विश्लेषण करना सहज नहीं होता है। इन्हें समझने के लिए यदि यथाशक्ति प्रयास किया जाए तो मनुष्य धीरे-धीरे अपने अंत:करण में इस चैतन्य देव को जागृत कर सकता है।

परन्तु इस चैतन्य देव को इस विराट विश्व में जागृत कर पाना साधारण रूप से सामान्य जन की क्षमता में नहीं होता है। कारण कि इसके लिए साधना करने की आवश्यकता होती है। सभी प्रकार की निवृत्ति में अग्रसर बनकर ही साधक सफलतापूर्वक इस जागृति-पथ पर गति कर सकता है।

संघ-शक्ति की विशेषता

तीर्थंकर देवों ने सम्यग्-ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र की उपलब्धि के जो निर्देश दिए हैं, उन निर्देशों का सामान्य साधक के लिए एकाकी रूप से पालन कर पाना सरल नहीं होता है। अकेले चलने में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है तथा कई बार ऐसा हो सकता है कि वे कठिनाइयाँ साधक को अपनी उन्नति से नीचे गिरा दें। इस कारण उन निर्देशों को अपने जीवन में साकार रूप प्रदान करने के लिए सबको साथ लेकर चलने की प्रवृत्ति अधिक फलदायी बन सकती है। संघ-शक्ति की यही विशेषता होती है कि वह पराक्रम को सामूहिक रूप देकर उसे सभी के लिए साध्य बना सकती है।

चतुर्विध संघ का निर्माण

यही कारण है कि तीर्थंकरों ने कैवल्यज्ञान की प्राप्ति होते ही चार तीर्थों की स्थापना की। उनका नाम तीर्थंकर ही इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे तीर्थों को बनाते हैं। तीर्थों को बनाने का अर्थ है कि वे संघ का निर्माण करते हैं। यह संघ चतुर्विध इसलिए कहा गया है कि इसके चार अंग होते हैं- साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका। इन चारों का समूह ही संघ होता है और संघ तीर्थ रूप होता है। इसी कारण संघ के सभी अंगों को भी तीर्थ माना गया है और इनके निर्माता तीर्थंकर कहलाते हैं।

तीर्थंकरों ने इस संघ के माध्यम से जो निर्देश दिये हैं, इस विषम स्थिति में यदि संघबद्ध होकर उनका यथोचित् पालन किया जाए, तो मनुष्य समतामय धरातल पर न केवल अपने आपको आरूढ़ कर सकता है, बल्कि सामूहिक शक्ति को सजग बनाकर सारे समाज को भी उस पर आरूढ़ बना सकता है। यह चतुर्विध संघ एक प्रकार से आध्यात्मिक दृष्टि का संघ है, जिसे वीतराग प्रभु का शासन भी कह सकते हैं। ऐसे संघ की शक्ति का जो संचय किया जाता है, वह संचय मानव-मात्र के ही क्या, प्राणी-मात्र के कल्याण के लिए होता है। इस संघ के

अन्दर जिस प्रकार के नैतिक एवं समदृष्टि वाले निर्देश हैं, वे आध्यात्मिक जीवन की ज्योति को प्रज्ज्वलित बनाने वाले हैं तथा इसी प्रकाश से वे जन-जन के मानस को आलोकित करने वाले हैं।

ज्योति चतुर्विध संघ के संगठन की

प्रत्येक मानव अपने अन्त:करण में व्याप्त अंधकार को इस चतुर्विध संघ की ज्योति के माध्यम से दूर कर सकता है तथा आत्म-जागृति की लक्ष्य पूर्ति के हित अपनी साधना को सशक्त बना सकता है। इस संघ में सभी तरह के लोग सम्मिलित हो सकते हैं, जो अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार कार्य संचालन करते हैं। वे सभी अपनी-अपनी योग्यता के आधार पर संगठन के अभिन्न अंग बन जाते हैं।

संगठन की शक्ति के आधार पर कौन-सा श्रेष्ठ लक्ष्य पूरा नहीं किया जा सकता है? इस चतुर्विध संघ के बल पर सारे विश्व में समता के विचार और व्यवहार का त्वरित प्रचार एवं प्रसार किया जा सकता है। आप इस संघ संगठन के माहात्म्य को समझकर जीवन के क्षेत्र में अपनी-अपनी स्थिति के साथ यदि उसे सम्यक् प्रकार से जोड़ने का प्रयास करें, तो संघ की सार्थक वास्तविकता भी प्रकाशित हो सकेगी तथा संघ आत्म-जागृति के कठिन कार्य को भी पुरुषार्थमय बनाने की प्रेरणा दे सकेगा।

चतुर्विध संघ के संगठन की यह ज्योति पिछले लगभग अढाई हजार वर्ष से दैदीप्यमान हो रही है। काल-प्रवाह से संगठन की शक्ति में उतार-चढ़ाव आए हैं तथा आज यह अनुभव किया जा सकता है कि वह शक्ति काफी शिथिल बनती जा रही है। किन्तु यदि आज भी जितने साधु, साध्वी, श्रावक एवं श्राविकाएँ विद्यमान हैं तथा वे भव्य आत्माएँ जो अपने जीवन का उत्सर्ग करने के लिए तत्पर हो रही हैं, वे अपने मन-भेद को एक ओर रखकर समन्वयात्मक दृष्टि से अपने जीवन एवं संघ की स्थिति को सन्तुलित तथा सुदृढ़ बनाने का प्रयास करें, तो संघ अपनी नियमित प्रगति के साथ अपनी ज्योति को अधिकाधिक प्रकाशित कर सकेगा। संघ एक-एक तार को जोड़कर समूह को इस तरह उभारता है कि दीपक से दीपक जलाया जा सके। एक-एक के सहयोग से दूसरों को सामूहिक सम्बल देने का कार्य संघ-शक्ति के सहयोग से ही संभव बन सकता है।

समन्वय और समभाव का संचार

संघ की संचालन पद्धति को समझने के लिए इस शरीर के ढाँचे को समझ लीजिए। इसमें सभी प्रकार के अंग होते हैं। जहाँ विचार करने का प्रश्न है, तो मस्तिष्क सभी प्रकार के विचारों एवं विविध कलाओं का केंद्र होता है। इस अंग में गति, विगति या प्रगति की क्षमता होती है। शरीर में जहाँ ऊपर मस्तिष्क है, वहाँ पेट का हिस्सा भी जुड़ा हुआ होता है। इसकी मदद करने के लिए दोनों भुजाएँ इसके साथ हैं। फिर देखिए, नीचे के हिस्से में कौन हैं? नीचे के हिस्से में पैर हैं, जो सारे शरीर को अपने आधार पर टिकाये रखते हैं।

इसी रूप में आप देखिए इस संघ की व्यवस्था को। इस शरीर के अंदर रहने वाले ये जितने भी महत्वपूर्ण अंग हैं, इनमें समन्वय और समभाव का कैसा संचार है? ये अंग किन-किन की अपेक्षा रखकर चल रहें हैं? सामान्यतया सुचारू संचालन की अवस्था में इनमें किसी विकृति का विशेष प्रसार नहीं होता है। एक व्यक्ति अपने विचारों में यत्किंचित् विकृति भले ही ले आए, परंतु अंगों के साथ वह विषमता का बर्ताव नहीं कर सकता है। दिखने की दृष्टि से यद्यपि सिर ऊपर दिखता है, परंतु सिर की हमदर्दी और उसका सहयोग सारे शरीर के अंदर व्याप्त होता है। जो जमीन पर चलने वाले पैर हैं, उनके साथ भी सिर सदा समता का बर्ताव करता है। सिर यह नहीं सोचता कि मैं सबसे ऊपर हूँ, तो नीचे के अंगों की परवाह क्यों करूँ ? पैर तो सबसे नीचे होते हैं, अशुचि में भी चलते हैं, तो उनकी रक्षा का उपाय क्यों करूँ या हाथों का उपयोग क्यों करूँ अथवा पेट को शक्ति क्यों दूँ? ऐसी विचारणा मस्तिष्क में नहीं उठती है। यदि मस्तिष्क ऐसा चिंतन करने लग जाए, तो इस शरीर के सारे ढ़ाँचे का रूपक ही बिगड़ सकता है। किंतु मस्तिष्क समभाव और

सहयोग की दृष्टि से कार्य करता है, तभी शरीर की संगठित गतिशीलता चल पाती है।

संगठित सहयोग की स्थिति

शरीर के ढ़ाँचे में संगठित सहयोग की स्थिति ऐसी होती है कि ज्यों ही अन्दर किसी भी भाग में कोई गड़बड़ पैदा होती है, तो सबसे पहले मस्तिष्क अपना कार्य प्रारम्भ कर देगा। सीने में दर्द हुआ, तो वह अपने यंत्र को वहीं केन्द्रित कर देगा। पीठ या पेट में दर्द हुआ, तब भी वह अपनी शक्ति को लगाने में देरी नहीं करेगा। यदि पैर में भी कांटा लग गया या पैर अशुचि से भर गया, तब भी समभाव के साथ मस्तिष्क कार्यरत होकर आँखों और हाथ को आज्ञा देगा कि वे देखकर तुरन्त कांटे को बाहर निकालें। इस प्रकार मस्तिष्क की वैचारिकता, हाथों की सेवा और सहायता, पेट के उत्तरदायित्व आदि सभी के समन्वित सहयोग से शरीर संघ की व्यवस्था सुचारु रूप से चलती है।

यह ऐसी व्यवस्था है कि सिर भी जिम्मेदारी से काम करता है, तो नीचे के अंग भी अपने-अपने स्थान पर रहते हुए अपने कर्त्तव्य को नहीं भूलते हैं। जब कभी सिर को मच्छर काटता है, तो हाथ फौरन वहाँ पहुँचकर अपनी सेवा करता है। मस्तिष्क जब कभी थक जाता है और ताजगी पाना चाहता है, तो पैर उसकी थकान दूर करने के लिए उसे घुमाने ले जाते हैं। इस सिर को अपने ऊपर रखकर नीचे के अंग उसकी भलीभाँति सेवा करते हैं, क्योंकि सिर ऊपर रहते हुए भी अपने को ऊपर नहीं मानकर समभाव के साथ पैरों की भी पूरी सेवा करता है। ऐसी ही सौहार्द्रपूर्ण संगठित सहयोग की स्थिति होती है।

संघ व्यवस्था पर चिन्तन की आवश्यकता

इस स्थिति को ध्यान में रखकर चतुर्विध संघ की सुव्यवस्था पर चिन्तन की आवश्यकता है। एक-एक अंग के एक-एक कार्य का अपने जीवन में चिन्तन करें तथा उससे समुचित शिक्षा लेने का प्रयास करें, तो सारी सामाजिक विषमताओं को आप दूर कर सकते हैं। सामाजिक दृष्टि से भी मेरे भाई जो प्राचीनकाल को लेकर वर्ण व्यवस्था पर सोचते हैं और वर्तमान के साथ उसका सम्बन्ध नहीं जोड़ते हैं, वे ही अधिकांशत: चारों वर्णों के बीच में विषमता की दीवारें खड़ी करते हैं। आज वर्ण-व्यवस्था को सही ढंग से कहाँ निभा रहे हैं?

आज भी संसार में संघ या संगठनों का जो निर्माण किया जाता है, वह किसी न किसी उद्देश्य को लेकर ही किया जाता है और संगठनों को आप न भी जानते हों, किन्तु राजनैतिक धरातल पर बनने वाली पार्टियों से तो आप परिचित होंगे ही? इन पार्टियों में भी जब विषमता आती है, तब इनका संचालन खंड-विखंड होने लगता है। कोई भी संगठन तभी टिकता है, जब उसका उद्देश्य स्पष्ट हो तथा समक्ष रहे एवं समन्वय व सहयोग की भावना क्रियाशील बनी रहे। संगठन की सफलता के लिए समभाव का तांता अवश्य ही बना रहना चाहिए। इस चतुर्विध संघ में भी जितने भाई-बहिनें हैं, उनमें से चाहे कोई अध्यक्ष रहे, अन्य पदाधिकारी रहे अथवा साधारण सदस्य रहे, वे सभी एक-दूसरे को साथ लेकर चलें एवं स्नेह व सहयोग का परस्पर सद्भाव रखें, तभी संघ सुव्यवस्थित एवं सुसंगठित रूप से चल सकता है। जब राजनीतिक अथवा आर्थिक संगठनों के सुचारु संचालन के लिए भी समन्वय और सहयोग की पूरी-पूरी आवश्यकता होती है, तो यह हमारा चतुर्विध संघ तो एक ऐसा आध्यात्मिक संगठन है, जिसमें आन्तरिक समभाव की भी आवश्यकता होती है। चतुर्विध संघ तो आध्यात्मिक समस्याओं को हल करने का संघ है। वीतराग देव ने इस संघ का निर्माण ही इस उद्देश्य से किया है, अत: सब अपने-अपने स्थान पर अपने-अपने कर्त्तव्यों के बारे में गंभीरता से सोचें तथा निश्चय करें कि किस श्रेणी में किस-किस योग्यता के साथ किन-किन कर्त्तव्यों का पालन करना है, तो ऊपर-नीचे के सब अंग समभाव से एवं संगठित रूप से कार्य करते हुए संघ को सुव्यवस्थित तथा सुदृढ़ बना सकते हैं।

कार्य योग्यतानुसार, किन्तु व्यवहार समता का

संघ के अनुशासन में रहते हुए सभी अपनी श्रेणी एवं योग्यता के अनुसार कार्य करें। जो नीचे के अंग है, तो नीचे से

काम करें, परन्तु यह नहीं हो कि विषमता के व्यवहार के साथ छोटे अंग की उपेक्षा की जाए। जहाँ जिस अंग के कार्य करने की क्षमता हो, वहाँ भी उसकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। प्रत्येक की योग्यता के अनुसार कार्य दिया जाए या उससे कार्य लिया जाए, किन्तु सबके साथ व्यवहार समतापूर्ण होना चाहिए। समता का व्यवहार नहीं होने की दशा में संघ का सुगठित संचालन कठिन हो जाता है।

इस कारण संघ के अग्रगण्यों को समझना है कि हम सिर पर रहें, किन्तु हमारे जो साथी हैं, उनके साथ समता का बर्ताव करें। हम उन्हें ठोकर नहीं मारें, उनका तिरस्कार नहीं करें या किसी प्रकार की विषमता उनके साथ नहीं बरतें -ऐसा उनका मानस बनना चाहिए। अग्रगण्यों के नेतृत्व में चलने वाले संघ के सहयोगी साथियों को भी सोचना चाहिए कि वे संघ के अगुआओं की आज्ञा में चलें और परस्पर ईर्ष्या तथा राग-द्वेष की परिणतियों की अवस्था को न आने दें। ऐसी परिणतियों के आने पर कर्त्तव्यपालन ठीक तरह से नहीं हो सकता है। आज संघ के अन्दर रहते हुए भाई-बहिन जिस तरह से सोचते हैं, उस सोचने में भी अन्तर लाने की आवश्यकता है। आज के सोचने में जो विषमताएँ हैं, उन्हें दूर करना होगा। यह सोचना समता-भाव से होना चाहिए, व्यक्तिगत द्वेष-विद्वेष की भावना से नहीं। जब इस प्रकार के सोचने का क्रम सामूहिक रूप से चलने लगेगा, तो उसका असर निश्चय ही व्यवहार में भी उतरेगा और व्यवहार समतामय बनेगा। कार्य और व्यवहार में जब समरसता आ जाएगी, तो फिर संघ की चहुँमुखी उन्नति में कोई व्यवधान नहीं रह जाएगा।

संघसेवा से अपूर्व आनन्द

सच्चे हृदय एवं आन्तरिकता से सेवा की जाए, तो संघ-सेवा से अपूर्व आनन्द प्राप्त होता है। आज कुछ खुशी का प्रसंग उपस्थित है, परन्तु यह खुशी मुझे खुशी नहीं लग रही है। अन्त:करण में खुशी हो, तभी आनन्द आता है और यह तभी हो सकता है, जब सर्वतोमुखी आध्यात्मिक उन्नति के लक्ष्य को सामने रखकर आत्मीय भावना से संघ का संचालन किया जाए और संघ की सेवा की जाए। आत्मीय भावना का तात्पर्य यह है कि सब अपने-अपने उत्तरदायित्वों का वहन करते हुए अपने-अपने पद अथवा स्थान पर ईमानदारी से चतुर्विध संघ की सेवा का परिचय दें और जब सहयोग देने की आवश्यकता हो, तो वैसा सहयोग दें।

संघ-सेवा, स्नेह, समन्वय व समभाव के साथ सहयोग का जो उल्लेख किया गया है, उसमें सभी प्रकार के संभव सहयोगों का समावेश हो जाता है। यह सहयोग चाहे तन से हो, मन से हो अथवा अन्य किसी प्रकार का हो। सभी प्रकार के सहयोग के लिए संघ के प्रत्येक सदस्य की तैयारी होनी चाहिए। संघ के लिए बौद्धिक शक्ति की आवश्यकता हो तो बुद्धि को बिना संकोच उसके लिए तैयार रखना चाहिए। यदि संघ-सेवा की ऐसी उग्र भावना बनाई जाए तो निश्चय ही वैसी सेवा से अपूर्व आनन्द की उपलब्धि हो सकेगी तथा संघ के माध्यम से सबकी सामूहिक आत्म-जागृति भी त्वरित गति से सम्पादित होने लगेगी।

चतुर्विध संघ का समतामय धरातल

चतुर्विध संघ के धरातल एवं स्वरूप पर भी आपको चिन्तन करना चाहिए। हम सभी, जो भगवान महावीर के अनुयायी हैं, किसी एक जाति सम्प्रदाय या दल के नहीं हैं और जो महावीर ने इस चतुर्विध संघ का निर्माण किया, वह भी शुद्ध मानवीय धरातल पर ही किया था। यदि समता के ऐसे धरातल पर हमारा भी जीवन आरूढ़ हो जाए और वह चतुर्विध संघ के रूप में इस प्रकार से निखरे कि दुनिया इसकी तरफ आकर्षित हो जाए, तभी समता का स्वरूप भी निखर सकता है। दुनिया यह कहने लगे कि यह संघ प्राणी-मात्र की उन्नति का कल्याण केन्द्र है- तब समझना चाहिए कि चतुर्विध संघ का समतामय धरातल सफल बन गया है।

ऐसे समतामय धरातल को बनाने के लिए संघ के सदस्यों में संघ सेवा की होड़ लगनी चाहिए और उनके कार्यकलाप एकता के सूत्र में इस प्रकार आबद्ध हों जैसे

कि माला के मनके एक सूत्र में पिरोये हुए होते हैं। इस प्रकार की भावना जब संघ के चारों अंगों में फैल जाए तो संघ का संगठन सुदृढ़ हुए बिना नहीं रहेगा।

एकता में सफलता का रहस्य

साधना के पथ पर स्वस्थ गति से चलने के लिए सहयोग की जरूरत होती है और यह सहयोग आत्मीय भाव के साथ जितना एकता में आबद्ध होता है, उतनी ही सफलता सुनिश्चित बनती है। जब साधना में सहयोगियों के सहारे की जरूरत पड़ती है, तो यह सोचना होगा कि सहयोगी कैसे हों? सिर के तुल्य, भुजा या पेट के तुल्य अथवा पैरों के तुल्य हों? सहयोगी सभी प्रकार के व्यक्ति हो सकते हैं, किन्तु प्रमुख आवश्यकता यह है कि सभी में एकता हो और स्नेहपूर्ण समता हो।

जिस व्यक्ति की जैसी भी योग्यता हो, उसके अनुसार वह अपनी शक्ति को संघ की एकता और सेवा में लगाए। मस्तिष्क रूप जो अगुआ हों, उनका कर्त्तव्य हो जाता है कि वे नीचे से नीचे व्यक्ति का भी स्नेह सम्पादित करें, तो पैर रूप नीचे के अंगों का भी कर्त्तव्य होता है कि वे मस्तिष्क की आज्ञा के बिना इधर-उधर चरण नहीं रखें।

एक श्रद्धा, एक प्ररूपणा, एक फरसना, एक आवाज, एक दृष्टि और एक रास्ते के सिद्धान्त को यदि कोई संघ अपनाता है, तो वह सब कुछ कर सकता है। आपकी पानी की तरह गति बननी चाहिए। पानी अपनी एक धारा में बहता है और उसके बीच में कभी चट्टान आ जाती है, लेकिन पानी उससे हार खाकर पीछे नहीं हटता है। वह चट्टान से घबराता नहीं है, चट्टान ही उससे हार जाती है, क्योंकि पानी चट्टान से लड़ता नहीं है, बल्कि अपनी कोमलता से उसको भी पानी बना देता है। तब उस चट्टान में से भी वह अपनी राह बना लेता है। संघ में भी ऐसी ही गति आनी चाहिए। संघ के संचालन में कई कठिनाइयाँ आ सकती हैं, किन्तु संचालकों को अपनी कोमलता से दूसरों का हृदय जीतते हुए उन्नति के मार्ग को निष्कंटक बनाना चाहिए। संघ की सुदृढ़ता के लिए संचालकों को भी संघ की एकता का बल मिलना चाहिए, तभी वे व्यक्ति एवं समाज के स्वस्थ जीवन की खोज में सहायक बन सकते हैं। संघ का उद्देश्य ही यह होता है कि आत्म-जागृति का मंत्र सब तक पहुँचाया जाए और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही संघ के संगठन में एकता एवं समरसता की सर्वाधिक आवश्यकता होती है।

क्रान्तिकारी चरण आगे बढ़ते रहें!

आज द्वितीया के प्रसंग से स्वर्गीय आचार्यश्री के आदर्श-जीवन से सबको प्रेरणा लेनी चाहिए। वे संघ के आधार-स्तम्भ थे और उन्होंने इस दिशा में जो क्रान्तिकारी चरण उठाया और जो उत्तरदायित्व हम सब पर डाला है, उस जागृति की मशाल को लेकर सभी आगे बढ़ें तथा तन, मन, वचन आदि की शक्ति के साथ उस ज्योति को प्रज्ज्वलित रखें, तो संघ की सुव्यवस्था श्रेष्ठतम बन सकेगी। मूल आवश्यकता यह है कि क्रान्तिकारी चरण निरन्तर आगे बढ़ते रहें और उनकी गति में किसी भी प्रकार से शिथिलता नहीं आए।

यह संघ का ही माहात्म्य है कि सोनावत परिवार की तरह मुमुक्षु-जन अपने जीवन में त्याग को गहरा बनाएं और संघ की जड़ों को मजबूत करते हैं। जो बहिनें कभी पर्दे के पीछे बैठने वाली थीं, वे जब दीक्षित होकर जीवन में आगे बढ़ीं, तो आज महासतियों के रूप में वीतराग वाणी का प्रभाविक रूप से प्रचार कर रही हैं। साधना का यह रूप संघ के सहयोग से ही निखरता है। अतः यह न भूलें कि संघ को निरन्तर क्रियाशील बनाए रखने के लिए स्नेह, सहानुभूति, समभाव एवं सहयोग का धरातल सुदृढ़ बनाना ही होगा और इसके साथ क्रान्तिकारी कार्यक्रम अपनाने होंगे, तभी चतुर्विध संघ एक सच्चा आध्यात्मिक संघ बना रह सकेगा।

साभार- नानेशवाणी-21

(क्रांतिकारी कदम आगे बढ़ते रहें)

संघ श्रेय में आत्मश्रेय है, ऐसा दृढ़ विश्वास मेरा।
संघ में मुझमें भेद न कोई, बोल रहा हर श्वांस मेरा।।7।।

श्रद्धा-समर्पणा का मूलाधार - अहं का विसर्जन

-परम पूज्य युवाचार्य श्री रामलालजी म.सा.

इस चराचर विश्व में मुख्य रूप से दो तत्त्व हैं- एक जड़ व दूसरा चेतन। जड़ किसी भी क्रिया को करने में समर्थ नहीं है; उसमें क्रिया स्वभावत: हो जाती है। पुरुषार्थजन्य क्रिया चेतन ही कर सकता है अर्थात् चेतन में ही यह क्रिया सम्पादित हो सकती है।

श्री श्रेयांस जिन अन्तरयामी...
जावंत विज्जा पुरिसा...।।

श्रेयांसनाथ भगवान की प्रार्थना की है, परन्तु कौन है श्रेयांसनाथ? हम बड़े रूप में उन्हें 11वें तीर्थंकर मान रहे हैं किन्तु यहां पर मैं उनकी स्तुति नहीं कर रहा हूं। सब विचार में पड़ जाएंगे कि ये 11वें तीर्थंकर भगवान नहीं तो फिर श्रेयांसनाथ भगवान की स्तुति प्रार्थना क्यों की गई? वस्तुत: मैं यहां पर परमात्मा के सिद्धांत, तीर्थंकर देवों के सिद्धांत की स्तुति कर रहा हूं, जिसमें उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषाकार, पराक्रम की बात कही गई है। श्रेयांसनाथ भगवान एक नहीं अनंतानंत हो गए हैं। आइए हम श्रेयांस शब्द के अर्थ को जानें।

श्रेयांस शब्द में दो पद हैं- श्रेय+अंश और श्रेयांस की निष्पत्ति हुई, जानना होगा।

प्रश्न है- हम श्रेय किसे कहें? श्रेय का तात्पर्य है जिससे आत्मा अपने स्वभाव को प्राप्त हो जाए। जहां स्वभाव की प्राप्ति से पहले उसका अंश/कण प्राप्त होता है वह है श्रेयांस। इस शब्द में सिद्धांत का मर्म बहुत विशद रहा हुआ है, पर जब तक हम उसकी अनुभूति न कर लें, वह मर्म प्राप्त नहीं हो सकता। तीर्थंकर भी साधना कर श्रेय के अंश को प्राप्त करते हुए पूर्णता तक पहुंचते हैं, वे 'पण्णा समिक्खए धम्मं' के अनुसार प्रज्ञा के माध्यम से इस अंश को प्रकट करते हैं, अनुभूति करते हैं, उन्हें लगता है कि इस अंश में इतना आनंद है जैसे नदी के पास जाने वाला एक घूंट में तृप्ति का अनुभव करता है तब प्यास का शमन होता है। इसी सिद्धांत के धरातल पर जिसने बर्फ के टुकड़े का स्पर्श कर लिया, शीतलता की अनुभूति कर ली, वह बर्फीले पहाड़ों की अनुभूति पा सकता है। जिसने बर्फ के टुकड़े का स्पर्श अनुभूत नहीं किया वह हिमालय की बर्फीली चट्टानों की अनुभूति नहीं कर सकता। इसलिए श्रेयांसनाथ भगवान की प्रार्थना करते हुए कवि आनंदघनजी कहते हैं कि अंश का आस्वादन हो। आप तो चतुर हैं। जब बाजार में कुछ खरीदने पहुंचते हैं तो जो वस्तु लेना चाहते हैं, पहले उसका सेम्पल देखते हैं और वह पसंद आने पर ही माल के लिए ऑर्डर देते हैं। कण पसंद आने पर ही माल के लिए ऑर्डर देते हैं। कण से मण हो सकता है। अत: पहले कण को पाना होगा और फिर मण। कण का अगला क्षण ही मण होगा। यदि कण की प्राप्ति को समझ ले तो वह मण भी प्राप्त किया जा सकता है। श्रेयांसनाथ भगवान या चाहे कोई भी आत्मा हो जो इस मार्ग पर आरूढ़ होती है, पहले अंश को प्राप्त करती है, फिर उसके भीतर एक आह्वान होता है, जागरण होता है कि मैं जिस कण से आप्लावित हुआ हूं उसके मण की भी प्राप्ति हो। एतदर्थ वह पुरुषार्थ करता है और उसे प्राप्त करता है। कविता में कहा गया है- 'अध्यात्म मन पूयण पायी' अंश के आस्वादन के बाद चेतना पूर्णता प्राप्त करने की दिशा में बढ़ती है।

श्रेयांसनाथ भगवान कौन हैं? मैं व्यक्ति विशेष की बात नहीं कर रहा हूं। कवि आनंदघनजी ने उनके माध्यम से सभी आत्माओं के लिए

कहा है, क्योंकि जैसी उनकी आत्मा है वैसी ही प्रत्येक प्राणी की आत्मा है। इसलिए इस प्रार्थना में एक नहीं अनंतानंत सिद्धों की प्रार्थना हो गई है। हमें श्रेय मार्ग को प्राप्त करना है और वह प्राप्त होता है सम्यक्त्व से। उस सम्यक्त्व का स्वरूप है- देव, गुरु, धर्म पर अविचल आस्था होना। श्रद्धा के तीन रूप हैं- एक दूध में घी की तरह श्रद्धा, दूसरी दूध में पानी की भांति श्रद्धा और तीसरी दूध में मिश्री की भांति श्रद्धा।

यदि बारीकी से जानना चाहते हैं तो सूक्ष्मतापूर्वक चिंतन करना होगा। ''आज का दिन श्रद्धा, समर्पणा का दिन है। आज मरने का, मृत्यु का दिन है। आप कहेंगे ये सब क्या है? अभी तो आप अहिंसा की बात कर रहे थे, अब मृत्यु पर आ गए। याद रखिए, जब तक अहं नहीं मरा, श्रद्धा उत्पन्न नहीं होगी। अहं मरेगा तभी आराध्य के प्रति सच्ची समर्पणा होगी। अत: अपेक्षित है कि हम देव-गुरु-धर्म के प्रति अविचल श्रद्धा, समर्पणा के साथ जुड़ें।''

मैं अभी श्रद्धा के तीन रूप कह रहा था, जिनमें प्रथम है-'दूध में घी की भांति' कोई दर्शनार्थ आए। सेठ सा. कहा तब तक तो भक्ति रही। सोचा अरे! वहां जाते हैं तो इतनी कद्र होती है। श्रद्धा खूब लहराएगी, घी के तिरवाले आते रहे, श्रद्धा झोंके लेती रही, पर एक बार बात नहीं कर पाए, व्याख्यान में नाम नहीं लिया, गुणगान नहीं किया तो जैसे दूध से घी अलग होने पर दूध घृतरहित हो जाता है, वैसे ही बन गए। गुणानुवाद होते रहें तब तक श्रद्धान् बना रहा। अब बात करना छोड़ दिया। विचार करने लगे कि क्या करेंगे वहां जाकर? बोलते नहीं, दया पालो नहीं कहते। प्रश्न है- क्या आपकी श्रद्धा बोलने तक ही सीमित है? यह है श्रद्धा का दूध में घी की भांति स्वरूप।

दूसरा प्रकार है दूध में पानी का। हवा के झोंके आए तो जैसे समुद्र के पानी में लहरें आने लगती है, वैसे थोड़ी-सी बात हुई और अरे, यह क्या हो गया? मन में तर्क की लहरें उठने लगी। समुद्र है वहां तूफान आएंगे ही। वही लावे को, तूफान को सहन कर सकता है। कुएं में यह क्षमता नहीं, वहां हिलोरे भले ही उठ जाएं, पर तूफान नहीं आएगा। समुद्र जितना गहरा है, उतना ही वह तूफानों को सहने में सक्षम है। जैसे हवा के झोंके आने पर पानी डांवाडोल हो जाता है, ध्वजा की तरह लड़खड़ाने लगता है, यदि वैसी ही श्रद्धा है तो जीवन के दूध को वह पानी पतला कर देगा। गुणवत्ता में समर्थ नहीं रहेगा।

श्रद्धा का तीसरा रूप है- दूध में मिश्री की भांति। यदि वह आ जाए तो नि:संदेह जीवन में परिवर्तन होगा। फिर उसे आग पर चढ़ा दीजिए। दूध जल सकता है, दूध कम हो जाएगा, पर मिश्री नहीं जलेगी, वह दूध का मिठास बढ़ाएगी। दूध को हल्का या पतला नहीं बनाएगी। मिश्री की भांति वह श्रद्धान्-विश्वास जीवन को मिठास देने वाला होगा, वह कड़वापन नहीं लाएगा। अणु-अणु में मिश्री की भांति श्रद्धान् समाता चला जाएगा। उसे फिर निकाला नहीं जा सकता। गहराई में रोम-रोम में मिठास चला गया फिर उसे अलग नहीं कर सकेंगे।

आवश्यकता है कि इसे जानने/समझने का प्रयत्न किया जाए। श्रेयांसनाथ भगवान की प्रार्थना से हमारे भीतर वह अंश जगे तो दूध में मिश्री की तरह बनने का प्रयास हो। पानी का काम नहीं हो, घी भी भले कीमती या अर्थ प्रधान हो सकता है, पर वह ऊपर तैरता रहेगा, दूध के अणु-अणु में व्याप्त नहीं हो सकता। मिलाने का प्रयत्न कर लें, घोटमघोट कर लें, थोड़ी देर भले ही रम जाए, पर बाद में पुन: वह तैरता रहेगा, मिलेगा नहीं। पानी भी दूध में हल्कापन लाएगा, दूध को गुणवत्ता प्रदान नहीं करेगा। दूध में पानी मिलकर उसका रंग भले प्राप्त कर ले, पर भीतर सार नहीं रहेगा। सार प्राप्त होगा श्रेय की आराधना से।

आज कौन-सा दिन है और कैसी-कैसी बातें कर

रहे हैं। आज आप दूध में घी, पानी या शक्कर क्या मिलाना चाहते हो? सभा से उत्तर मिला- मिश्री, शक्कर।

दुनिया में कितने ही संत-आचार्य, अन्य महामहीम, कई महापुरुष हो सकते हैं। हो सकता है उन्होंने कई धर्म स्थान बनाए होंगे, चंदे-चिट्ठे करवाए होंगे। बहुत कुछ उन्होंने अपनी स्थिति से किया होगा, पर जैनाकाश में ज्योतिर्मय नक्षत्र के रूप में चमकने वाले एक अनुपम संत हैं आचार्य श्री नानेश। उनका कोई सानी नहीं है। यदि कोई है तो बताएं, मैं भी जान सकूं। कितने निराले हैं ये संत! जिनकी समता अखंड है। जो भी समीप जाता है, जिसने वह शांत समीर ली है, वही जान सकता है। कितनी गहराई है, थाह पाने में कोई सक्षम नहीं है। कितने तूफान, झंझावात, लावे सहे, पर वाह-वाह नाना गुरु! वज्र हृदय की क्षमता, समता के बारे में क्या कहूं! परिवार में थोड़ी-सी टकराहट होती है, व्यक्ति स्वयं को संभाल नहीं पाता, उसे ब्रेन हेमरेज, अटैक हो जाता है, पर क्या और कितनी प्रशंसा करूं? कभी हमने झांकने की कोशिश की या केवल मत्थएण वंदामि करते रहे। क्या करें वहां जाकर, वहां तो जैसे श्रीनाथजी के पट खुलते हैं। यदि श्रद्धा है, हृदय में स्थान है तो गुरु कृपा प्राप्त होगी अन्यथा कितने ही नजदीक बैठ जाओ, एक घंटे तो क्या एक महीने भी सेवा कर लो, उपासना कर लो, पर द्वार नहीं खोला तो क्या मिलेगा? प्रभु महावीर के पास संगम भी आया, पर क्या ले गया? गणिवर गौतम भी आए और थोड़े समय में ही गणधर बन गए। संगम खाली गया। परमात्मा के पास जाने मात्र से शक्ति नहीं मिल जाएगी। गुरु के पास जाकर हृदय के द्वार खोल दो तो फिर कुछ मिलेगा। द्वार ही बंद है तो ज्योति का प्रवेश कैसे होगा? ज्योति पास है तो द्वार, खिड़कियां आदि खोल दो। जरूर प्रकाश आएगा, कोई रोक नहीं सकेगा, पर पाने के लिए बर्तन या ढक्कन तो खोल दो, पात्रता अर्जित कर लो। दूध में मिश्री मिल गई तो फिर दर्शन भी हो जाएंगे।

सिद्धसेन दिवाकर ने भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति करते हुए कहा है कि प्रभो! मैं ही तो आपको भवसागर से पार कराने वाला हूं, आपके पास क्या शक्ति है! बताइए आप परमात्मा को पार कराते हो या परमात्मा आपको तिराते हैं? वे कहते हैं- जैसे मशक में हवा भरी होती है, इसे भरी हुई ही छोड़ दो, इस हवा को वह मशक पार कर देती है। वैसे ही भक्त ही तो परमात्मा को हृदय में रखकर भवसागर तिराता है। तर्क से आपको यह बात ठीक ही लग रही होगी, पर सिद्धसेन दिवाकर तत्काल संभले और कहने लगे- प्रभो! मेरी गलती हो गई। यह मैं अहं में कह रहा था, पर यथार्थ यह है कि मशक में हवा है तभी मशक तैर पाई अन्यथा वह पार नहीं हो सकती, वहीं समाप्त हो जाती। वे दूसरी बात कहते हैं कि यह मेरी भ्रांति है, भूल है, क्योंकि जिसके हृदय में भगवान है वही हृदय भवसागर से पार होने में समर्थ है। जिस हृदय में भक्ति नहीं वो खाली कलेवर है। वह डूब जाएगा, पार नहीं हो सकता। हमारी दशा क्या है? जिस हृदय में देव-गुरु-धर्म नहीं वह डूबने वाला होगा, तिरने वाला नहीं।

बातें तो बहुत-सी हैं, पर सारी एक साथ नहीं कही जा सकती। समझने की बात है। आज हम आचार्यदेव के गुणगान कर रहे हैं, 35वां चादर प्रदान महोत्सव मना रहे हैं। यदि चादर दिखा रहे हैं, दिखाओ या न दिखाओ, मुझे स्मृति है, पर आज केवल प्रदर्शन के रूप में ही इन्हें मान लिया और मना लिया महोत्सव, तो दर्शन नहीं हो पाएंगे। यदि वास्तव में महोत्सव मनाना चाहते हों तो दूध में मिश्री या शक्कर की भांति आपको मिल जाना है। यदि सार्थक महोत्सव मनाना चाहते हो तो आज से 30-35 वर्ष पूर्व आचार्यदेव ने एक स्वप्न देखा था, पर उन्हीं की संतति, भावुक भक्त, जिनमें मैं भी शामिल हूं, उस स्वप्न को साकार रूप नहीं दे पाए। हम कैसे अनुयायी या भक्त हैं कि उसे साकार नहीं कर पाए। वह वह स्वप्न था **'समतामूलक समाज का निर्माण'** यह ऐसा बीज है जिसे जमीन में डालना है, यह हवाई महल नहीं है। हवाई महल सुनने का, कानों का विषय भले हो सकता है, पर आंखों का विषय नहीं बन सकता, हम उसे देख नहीं सकते। जिसे देख नहीं सकते उस पर विश्वास भी नहीं कर पाएंगे। आचार्यदेव ने बीज के रूप में दिया, पर उनके उपासक सिंचन नहीं कर पाए, उसे

अमली रूप नहीं दे सके, वास्तविक धरातल पर नहीं ला पाए। आप सोचते हैं कि कार्यकर्ता नहीं हैं, एक-एक को जोड़ा जाए फिर भी कार्यकर्ताओं की कमी है। समाज रूपी फैक्ट्री में जब प्रोडक्शन (उत्पादन) नहीं तो कार्यकर्ता कहां से आएंगे? यदि फैक्ट्री में माल बनाना बंद हो जाए तो माल कैसे मिलेगा? उत्पादन बढ़ाना होगा। वैसे ही कार्यकर्ताओं को तैयार करना होगा।

आचार्य भगवन् का जो स्वप्न है वह जाति धर्म, वर्ण/वर्ग पर आधारित नहीं बल्कि गुण धर्म पर आधारित है। आचार्यदेव ने जब भार सौंपा था तब मैंने भी अभिव्यक्ति दी थी कि हमें वह स्वप्न साकार करना है, पर चार वर्ष व्यतीत हो गए, मैं भी साकार नहीं कर पाया हूं। गत वर्ष इसी आसोज सुदी दूज को मैंने व्यसनमुक्ति के लिए विचार रखे थे और समर्पित कार्यकर्ताओं, जिन्होंने आचार्यदेव की समता/क्षमता को पहचाना है, इसे काफी पूरा भी किया। आज समाज कार्य करने में सक्षम है। यदि कार्यकर्ता आगे आएं तो हजारों हाथ जुड़ सकते हैं।

जीवन का, साधना का चाहे जो कार्य हो ये जुड़ सकते हैं। मैने बात कही तब कन्हैयालालजी भूरा, गौतम भैया तत्काल खड़े हो गए कि हम करेंगे और अशोकजी नागौरी ने कहा कि मैं 1000 लोगों को व्यसनमुक्त करूंगा। मैंने कहा- आप लोग लेक्चरर हो, 2000 को व्यसनमुक्त कर सकते हो। उन्होंने स्वीकार किया और उन्होंने अकेले ही 3000 फॉर्म भरवाए। मैंने भी सुना श्री कोठारीजी को, श्री भूराजी ने 21 हजार व भाई दिनेशजी महेशजी नाहटा आदि ने 15 हजार फॉर्म भरवाए व अन्य भी कई नाम सुने गए। आज हम इतने में ही संतुष्ट न हो जाएं।

आज 35वां चादर महोत्सव है। यदि आपको लगता है कि व्यसनमुक्ति कार्यक्रम महत्त्वपूर्ण है तो हम 35 हजार की बात लेकर चलें। 34 हजार का लक्ष्य लिया था और आज 50 हजार का कार्य हुआ है। दूसरे रूप में एक बात और है, आपने जीवन में बहुत बसंत देखें होंगे, तो जितने बसंत देखे हैं और जितने देखना चाहते हैं, कम से कम उतने व्यक्तियों को व्यसनमुक्त बनाने का संकल्प करें। यही समर्पणा रही और प्रतिवर्ष ये भाव बने रहे तो आपको जीवन में आनंद आएगा। समता समाज की रचना में आपकी चेतना जागृत होगी। आप चाहें तो विस्तार से जानकारी कर सकते हैं। इसके भी फार्मूले हैं। पहले ग्राम स्तर पर, फिर नगर व जिला, राज्य स्तर पर और राष्ट्रीय/अन्तरराष्ट्रीय (स्तर) क्षेत्र तक भी यह योजना मंगलकारी होगी।

यह प्रत्येक व्यक्ति के समझने लायक है। यदि इसे स्वीकार करेंगे तो ही चादर महोत्सव मनाना सार्थक होगा। एक बात और मैं चाहता हूं। समता समाज के माध्यम से दिग्भ्रांत पीढ़ी को बोध मिले उसके लिए समीक्षण ध्यान (जो आचार्यदेव ने विश्व को दिया है) अलौकिक नेत्र है, जिससे समता दर्शन देखा जा सकता है। अपने भीतर प्रवेश कर स्वयं को देखा जा सकता है। जो रुचि रखने वाले हैं, इस पद्धति को आगे बढ़ाने वाले हैं, आने वाले समय में ध्यान शिविरों का आयोजन होना चाहिए। त्रिदिवसीय ध्यान शिविर के पश्चात् आप देखेंगे कि कितने साधक तैयार हो जाएंगे! जो भी चाहे ललक पैदा करे। आचार्यदेव का वह स्वप्न समता समाज के रूप में आगे बढ़ाना है। समर्पित कार्यकर्ता इस सत्कार्य से जुड़ेंगे तो समाज को नया बल मिलेगा इसमें दो मत नहीं। आचार्यदेव ने जो चाहा है उस स्वप्न को मूर्त रूप समाज के व्यसनमुक्त होने पर ही प्राप्त होगा। भटकती पीढ़ी को बोध देने के लिए समीक्षण ध्यान व समता समाज रचना को आगे बढ़ाएं। दूध में मिश्री की भांति श्रद्धा का उभार होगा तो महोत्सव मनाना सार्थक होगा। दूध में पानी न मिलावें, अपने कार्यों की स्वयं समीक्षा करें एवं इस स्वप्न को साकार करने की भावना लेकर चलें। बहिन अनिता का आज्ञा-पत्र हुआ। वह श्रेयांसनाथ के पथ पर चलना चाहती हैं। प्रत्येक माता-पिता का दायित्व है कि वे ज्ञान, दर्शन, चारित्र को अखंड बनाने की दिशा में अग्रसर होने हेतु प्रेरित करें, हटाने की कोशिश न करें। ऐसा करने से दूध में मिश्री की तरह जीवन में श्रेय का अंश घोलते हुए अध्यात्म की पूर्णता प्राप्त कर सकेंगे।

आसोज सुदी 2 वि.सं. 2053, 14-10-96 निम्बाहेड़ा (राज.)

साभार- श्रमणोपासक 1996

**संघ परम उपकारी हमको, संघ ने सम्यक्बोध दिया।
संघ न होता हम क्या होते, संघ ने हमको गोद लिया।।8।।**

ऐसी वाणी बोलिए

हित वचन

15-16 अगस्त 2022 अंक से आगे...

'ऐसी वाणी बोलिए' धारावाहिक प्रतिमाह आपके समक्ष आ रहा है। क्रमशः इस धारावाहिक में आप 'हित वचन' के ध्यातव्य बिन्दु पढ़ रहे हैं। इसमें बिन्दु संख्या 5 व 6 आप गतांक में पढ़ चुके हैं। अब इस अंक में बिन्दु संख्या 7 – किसी के अच्छे काम में विघ्न उत्पन्न करना एवं बिन्दु संख्या 8 – हंसी उड़ाना आदि बिन्दुओं को समाहित किया गया है। इन्हें पढ़कर जीवन में उतारने का प्रयास करें।

1 एक-दूसरे को तोड़ने वाली सलाह देना
2 हिंसा का उपदेश देना
3 कुव्यसनों एवं कुसंस्कारों का उपदेश देना
4 किसी का मर्म प्रकाशित करना
5 डराने वाली बातें करना
6 दुराशीष देना अथवा चुभने वाले दुर्वचन कहना

7 किसी के अच्छे काम में विघ्न उत्पन्न करना

लोग अपने वचनों का दुरुपयोग करके कई प्रकार से बाधक बन जाते हैं :-

(A) जिसकी धर्म में रुचि है, जो ज्ञान-ध्यान सीखना चाहता है, उसे बिना कारण कह देना-'नहीं जाना है, अभी घर में बहुत काम है अथवा कहना-'रोज-रोज सामायिक लेके मत बैठा करो।'

(B) जो सीख रहा है, आगे बढ़ रहा है उसके परिवार वालों से जाकर कह देना-'दिन भर स्थानक में क्यों रहने देते हो, दीक्षा के भाव आ गए तो थोड़ा लिमिट से भेजा करो।' ऐसा सुनकर कई लोग बातों में आ जाते हैं और धर्म ध्यान में रोक लगा देते हैं।

(C) कोई माता-पिता अपनी स्वेच्छा से अपने बच्चों को म.सा. के सान्निध्य/किसी धार्मिक संस्था में अध्ययन करने, संस्कारवान बनाने के लिए भेज रहे हों, उन्हें कहना-'अभी से बच्चों को क्यों भेज रहे हो, अभी तो पढ़ने-लिखने के दिन हैं। भेजना है तो हॉस्टल भेजो।'

सही तरीका :- धर्मध्यान करने वालों का अनुमोदन करना-'आप बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं'। अपनी तरफ से सहयोग देना और कहना-'खूब आगे बढ़ो, खूब सीखो, यही काम आएगा'।

(D) किसी के कोई त्याग बोल-बोल के तुड़वाना, 'तुम्हें रात को खाना ही पड़ेगा, अभी से क्या त्याग?' कोई सचित्त आदि नहीं खाना चाहता, उसे खिलाने के लिए उसके घरवालों को उकसाना-'ये सब तो खाना चाहिए, नहीं खाएगा तो बीमार पड़ जाएगा, आप लोग डांट के खिला दिया करो।'

(E) एक व्यक्ति दूसरे का सहयोग करना चाहता है, सेवा करना चाहता है अथवा उसे किसी भी रूप में समाधि पहुंचाना चाहता है तो उसे कह देना-'कोई जरूरत नहीं है तुम्हें जाने की। वो तुम्हारा कुछ करते हैं क्या, जो

तुम उसका करोगे। चुपचाप बैठ जाओ, गए तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा।'

(F) कोई किसी के साथ अपनी Knowledge (ज्ञान) Share (बांटना) करना चाहता है। सामने वाला भी सीखने के लिए Excited (उत्साहित) है। बीच में सिखाने वाले को मना कर देना-'नहीं, किसी को कुछ नहीं सिखाना अथवा कहना दूसरों को सिखा देना, पर अमुक व्यक्ति को सिखाने की कोई जरूरत नहीं है।'

(G) 'अमुक व्यक्ति को नौकरी पर मत रखो', 'अमुक को नौकरी से निकाल दो'- इस प्रकार कहना। बिना किसी कारण के इसी प्रकार के कोई भी विघ्न उत्पन्न करने वाले वचन कहना (अधिक विस्तार के लिए देखें कर्म बंध एवं हमारा जीवन)।

Note - श्रावक सभी जीवों के प्रति संवेदनशील होता है, अत: वह किसी को किसी भी अच्छे काम के लिए कभी जानबूझकर रोकता नहीं है, बल्कि वह सहयोगी बनता है।

ढंढणमुनि पूर्वभव

सौवीर नामक एक किसान था। एक बार वह अपने 500 किसानों से खेत में काम करवा रहा था। काम करते-करते भोजन का समय हो गया। सभी किसान व बैल बुरी तरह से थक गए। सबको भूख लग गई, परन्तु वह गुस्से में गरजते हुए बोला-''अभी भोजन नहीं करना, खेत में पूरा एक-एक चक्कर और लगाओ फिर खाना खाओ।''

वे गरीब किसान मजबूर होकर काम में लग गए। 500 किसान और 1000 बैल उस किसान के आदेश की वजह से भूखे रहे। इसके फलस्वरूप 99,99,999 भव के बाद जब वे ढंढणमुनि बने, तब वह कर्म उदय में आया और उन्हें दीक्षा के बाद बार-बार घूमने पर भी आहार मिला ही नहीं।

8 हंसी उड़ाना

★ **'अन्नं जणं खिंसइ वाल पन्ने'**

जो अपनी प्रज्ञा के अहंकार में दूसरों की अवज्ञा करता है, वह मूर्खबुद्धि (बाल प्रज्ञ) है।

★ जिनमें अहम् भाव (Ego) अधिक होता है और जो अपने आपको बहुत श्रेष्ठ समझते हैं, वे ही दूसरों की हंसी उड़ाते हैं। इससे नीच गोत्र का बंध होता है और कई बार तो इसी भव में हंसी उड़ाने वाले को, खुद हंसी का पात्र बनना पड़ जाता है।

★ नासमझ लोग अनेक प्रकार से हंसी उड़ाकर दूसरों का दिल दुखाते हैं। यथा -

(A) किसी के रूप को देखकर हंसना-'देख-देख, इसकी नाक कैसी है, तोते के चोंच जैसी', 'भगवान को इसके बाल काले करने थे, पर भूल से इसका मुंह काला हो गया' यूं कहना और जोर-जोर से हंसना।

गोशालक और वेश्यायन बाल तपस्वी का वर्णन

वैश्यायन बाल तपस्वी की जटाओं में जुओं को लिपटा देखकर गोशालक ने उनको छेड़ा - 'आप तत्वज्ञ या तपस्वी मुनि हैं या जुओं के शय्यातर (स्थानदाता) हैं?'' उन्होंने इस कथन को आदर नहीं दिया, न ही उसे स्वीकार किया, वे मौन रहे। जब गोशालक ने दूसरी-तीसरी बार यही कहा, तब वे कुपित हो गए, क्रोध से भड़क गए और दांत पीसते हुए आतापना भूमि से नीचे उतरे और गोशालक को भस्म करने के लिए उष्ण तेजो लेश्या (अग्नि) छोड़ दी।

भगवान महावीर को दया आ गई, तो उन्होंने गोशालक पर शीत लेश्या छोड़ी और उसे बचाया। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि किसी व्यक्ति को छेड़ने से, उसकी हंसी उड़ाने से, उसे एक ही बात को बार-बार कहने से वह कुपित हो सकता है।

(विस्तार से जानने हेतु देखें-श्री व्याख्या प्रज्ञप्ति सूत्र 15 शतक सूत्र 50, 51)

(B) किसी सामान्य विद्यार्थी (Average Student) के ऊंचे ख्वाब को देखकर उसे चिढ़ाना-'बड़ा आया डॉक्टर बनने वाला, कभी 50% से ऊपर भी आए हैं? ये दुनिया का आठवां अजूबा बनेगा।'

(C) सभा में, ज्ञानचर्चा आदि में किसी के द्वारा गलत उत्तर देने पर हंसना-'देखो, इतना धर्मात्मा बनता है और इतना भी नहीं पता।'

(D) किसी ने सिलाई की या चित्र बनाया अथवा कोई भी काम किया, पर वह सफाई से नहीं हुआ, उसे दूसरों को दिखा-दिखा कर कहना 'देखो कैसे किया है...' और हंसते जाना।

(E) किसी के घर में अल्प साधन (Facilities) देखकर उनकी हंसी उड़ाना। मोबाइल देखकर कहना-'आज के जमाने में भी डब्बा मोबाइल लेकर घूम रहे हो?' कपड़े देखकर कहना-'ये तो हर पार्टी में एक ही ड्रेस पहनती है, लगता है इसके पास और कपड़े ही नहीं हैं?' 'Oh My God! तुम्हारे घर A.C. नहीं है, तुम लोग कैसे रहते हो, मैं तो एक पल भी नहीं रह पाऊंगी' ऐसा कह-कहकर शर्मिन्दा महसूस कराना।

सही तरीका - किसी में कोई कमी हो तो उसके साथ सहज रहना चाहिए। उसे अपने व्यवहार से किसी भी प्रकार से हीन महसूस (Low Feel) नहीं कराना चाहिए।

एक बहुत धनाढ्य परिवार था। उनके पड़ौसी सामान्य थे। उनके घर में ज्यादा साधन नहीं थे। वे धनाढ्य उनकी उस अवस्था को देखकर खूब हंसते-'तुम्हारे घर ये भी नहीं है? हमारे तो राम जी राजी हैं।' पड़ोसी उनसे कभी कहते-'हमारे घर आया करो ना', तो वे अहंकारपूर्वक चेहरा बनाकर हाथ हिलाते हुए कहते-'मेरे पास टाइम नहीं है।' उनके व्यवहार से पड़ौसी को बहुत बुरा लगता। कुछ सालों बाद उनके घर की दशा ही बदल गई। उनके बेटों ने शराब, मौज, शौक, जुए आदि में खूब पैसा उड़ाया। पैसे कम हो गए, भाई-भाई में लड़ाई हो गई। एक ने आत्महत्या कर ली। उसकी पत्नी ने सास-ससुर पर ही केस कर दिया। उससे बचने के लिए बहुत से पैसे खर्च हो गए। बाकी बेटे भी मां-बाप को छोड़कर चले गए और सामान्य-सी नौकरी करने लग गए। घर पर केवल दो प्राणी रह गए, घर का हाल-बेहाल हो गया। न कोई सफाई करने वाला था, न कोई खाना बनाने वाला, बाहर से खाना मंगवाकर खाना पड़ता। माता डिप्रेशन में चली गई। कुछ काम हो तो किससे कहें। उनके घर कोई जाना ही नहीं चाहता। वो उन्हीं पड़ोसी से सहयोग लेती और बार-बार कहती-'मेरे घर आया करो ना।' वे नहीं आते, तो वो खुद ही उनके घर जाकर बैठ जाती। अंत तक बीमारी में ही रही, पर कोई सेवा करने वाला भी नहीं था। समय कब बदल जाए कुछ कहा नहीं जा सकता, इसलिए किसी की हंसी नहीं उड़ानी चाहिए।

Note - श्रावक को इतना विनम्र होना चाहिए कि वह छोटे-बड़े सबके साथ घुल-मिलकर रह सके।

★ **'जो परिभवति परं जणं, संसारे परियत्तती महं'**

जो दूसरों का परिभव अर्थात् तिरस्कार करता है, वह संसारवन में दीर्घकाल तक भटकता रहता है।

-श्री सूत्रकृतांग सूत्र 1/2/2/2

पूर्व में बताये गये बिन्दुओं को समझकर ज्ञानवान श्रावक किसी की हंसी उड़ाकर उसका दिल न दुखाये।

"असत्य वचन बोलने का जिस प्रकार भयंकर परिणाम बताया गया है, उसी प्रकार अहितकारी वचन बोलने का भी भयंकर परिणाम होता है। जितने संक्लिष्ट परिणामों के साथ अहितकारी वचन बोला जाता है, वह उतने ही संक्लिष्ट कर्मों का बंध कराने वाला बनता है। उपर्युक्त उदाहरणों के अलावा अहितकारी वचनों के अन्य भी उदाहरण हैं, जिन्हें मधुर वचन के अन्तर्गत समझाया गया है।"

क्रमशः....

शैशव, यौवन, वृद्धावस्था, सदा संघ उपकारी है।
भवसागर से तारणहारा, हम इसके आभारी है।।9।।

श्रीमद् भगवतीसूत्र

15-16 अगस्त 2022 अंक से आगे...

संकलनकर्ता- कंचन काँकरिया, कोलकाता

ज्ञान का वर्णन श. 8 उ. 2

पूर्वापर संबंध – ज्ञान के ही भेदों का वर्णन किया जा रहा है। इस उद्देशक के मूल पाठ में श्रीमद् नंदीसूत्र का अतिदेश (भोलावण) किया गया है, तदनुसार प्रस्तुत वर्णन है।

प्र. 2310 मतिज्ञान को आभिनिबोधिक ज्ञान क्यों कहते हैं ?

उत्तर आभिनिबोधिक- 'अभि'-अभिमुख, 'नि'-नियत, 'बोध'-जानना। अर्थाभिमुख होते हुए जो नियत बोध हो, उसे आभिनिबोध कहते हैं। आभिनिबोधिक ज्ञान को ही औत्पत्तिकी मति (बुद्धि) आदि की प्रधानता के कारण मतिज्ञान भी कहते हैं। (जो जाना जाए उसे अर्थ कहते हैं।)

प्र. 2311 पाँच ज्ञानों को संक्षेप में कितने भेदों में विभक्त किया गया है ?

उत्तर प्रत्यक्ष ज्ञान और परोक्ष ज्ञान।

प्र. 2312 प्रत्यक्ष ज्ञान किसे कहते हैं ?

उत्तर प्रत्यक्ष ज्ञान दो प्रकार का कहा गया है। यथा-

1. निश्चयनय से किसी भी अन्य निमित्त की सहायता के बिना आत्मशक्ति से जानना 'प्रत्यक्ष' ज्ञान है और
2. व्यवहारनय से इंद्रियों की सहायता से जानना भी 'प्रत्यक्ष' ज्ञान है।

प्र. 2313 अक्ष शब्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर अक्ष शब्द के दो अर्थ हैं। यथा- 1. इंद्रिय और 2. नोइन्द्रिय यानी आत्मा।

अत: प्रत्यक्ष ज्ञान के दो भेद हैं। यथा- 1. इंद्रिय प्रत्यक्ष और 2. नोइन्द्रिय प्रत्यक्ष।

प्र. 2314 इंद्रिय प्रत्यक्ष किसे कहते हैं ?

उत्तर इंद्रिय से जानना 'इंद्रिय प्रत्यक्ष' ज्ञान है। जैसे- पर्वत को अपनी आँख से देखना।

प्र. 2315 क्या निश्चयनय से इंद्रियाँ जीव की हैं ?

उत्तर निश्चयनय से इंद्रियां जीव की नहीं हैं, पुद्गलों से निर्मित हैं। व्यवहार में नामकर्म के संयोग के कारण आत्मा के साथ संबद्ध इंद्रियां 'पर' होते हुए भी 'स्व' मानी जाती है।

प्र. 2316 इंद्रिय प्रत्यक्ष के कितने भेद होते हैं ?

उत्तर इंद्रिय प्रत्यक्ष के पाँच भेद हैं। यथा- 1. श्रोत्रेन्द्रिय प्रत्यक्ष, 2. चक्षुरिन्द्रिय प्रत्यक्ष, 3. घ्राणेन्द्रिय प्रत्यक्ष, 4. रसनेन्द्रिय प्रत्यक्ष, और 5. स्पर्शेन्द्रिय प्रत्यक्ष।

प्र. 2317 पर्वत के विषय में किसी से सुनकर जानना कौन-सा प्रत्यक्ष ज्ञान है ?

उत्तर श्रोत्रेन्द्रिय प्रत्यक्ष ज्ञान है।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

-क्रमश:

नगर, चक्र, रथ, पद्म, चंद्र, रवि, सागर, मेरू की उपमा।
सूत्र नन्दी में संघगौरव की, क्या कोई है कम महिमा?।।10।।

श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र

नमिपव्वज्जा

15-16 अगस्त 2022 अंक से आगे...

संकलनकर्ता- सरिता बैंगानी, कोलकाता

पूर्व चित्रण- जब नमिराजर्षि ने देवलोक के समान सुखों को त्यागकर अभिनिष्क्रमण (दीक्षा) करने का दृढ़ संकल्प किया तब पहले देवलोक के इन्द्र देवराज शक्रेन्द्र स्वयं राजर्षि की परीक्षा लेने ब्राह्मण वेश में आए कि यह त्याग क्षणिक है या वास्तविक वैराग्य है। इन्द्र ने नमिराजर्षि को स्वजनों के प्रति, अन्त:पुर के प्रति, नगर के प्रति, अपने प्रासादों के प्रति, नृपति धर्म के प्रति कुछ भी राग नहीं, उद्दण्ड राजाओं के प्रति द्वेष नहीं तथा संयम पालन के प्रति उनमें स्थिरता है इस बात की परीक्षा कर ली। अब इससे आगे...

8. गृहस्थाश्रम में ही धर्म साधना के सम्बन्ध में

घोरासमं चइत्ताणं, अण्णं पत्थेसि आसमं।
इहेव पोसह-रओ, भवाहि मणुयाहिवा।।42।।

भावार्थ- हे मनुष्यों के अधिपति! आप घोराश्रम का त्याग करके अन्य आश्रम (जैन प्रव्रज्या) की इच्छा कर रहे हैं। इसकी अपेक्षा उपयुक्त होगा कि आप इस गृहस्थाश्रम में ही रहते हुए तिथियों में पौषध व्रत में तत्पर रहें।

घोर अर्थात् अति दुष्कर या कठिन।

घोरासमं का अर्थ यहां गृहस्थाश्रम किया गया है। गृहस्थाश्रम को घोर बताया गया है, क्योंकि ब्रह्मचर्याश्रम, वानप्रस्थाश्रम और संन्यासाश्रम, इन तीनों आश्रमों का परिपालक और रक्षक गृहस्थाश्रम है तथा स्वयं अपने गार्हस्थ्य जीवन, सुरक्षा, न्याय, पशुपालन आदि को चलाने और निभाने की जिम्मेदारी भी होती है। वैदिक दृष्टि से अन्य आश्रम इतने कष्टसाध्य (घोर) नहीं होते हैं, इसलिए गृहस्थाश्रम को जेष्ठाश्रम भी कहा जाता है।

देवेन्द्र द्वारा हेतु और उदाहरण- गृहस्थाश्रम सभी कल्याणों का जनक है इसलिए वह आशरणीय है। जैसे सभी जीव माता का आश्रय लेकर जीते हैं, वैसे ही गृहस्थाश्रम का आश्रय लेकर सभी जीते हैं। अत: धर्मार्थी पुरुष का गृहस्थाश्रम में रहकर पौषध आदि जैसे श्रेष्ठ धर्म साधना करना उपयुक्त है। इसलिए हे मानवाधिप! धर्म अनुष्ठान के लिए आपका गृहस्थाश्रम को त्याग कर प्रव्रज्या ग्रहण करना अनुचित है। देवेन्द्र की बात सुनकर राजर्षि ने इस प्रकार कहा-

मासे मासे उ जो बालो, कुसग्गेणं तु भुंजए।
न सो सुअक्खाय-धम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसिं।।44।।

भावार्थ- जो बाल अज्ञानी साधक महीने-महीने का तप करता है और पारणे में कुश के अग्रभाग पर आए उतना ही अन्न आदि खाता है, वह सुआख्यात धर्म की सोलहवीं कला के समान भी नहीं है।

जो बालो- अर्थात् बाल तप, तापस आदि घोर तप करते हैं- कभी महीनों तक भूखा रहना, कभी सूर्य की आतापना लेना, कभी वृक्ष की शाखा पर रस्सी आदि से पैरों को बाँधकर उल्टा लटकना या कभी काँटों की शय्या पर सोना आदि।

इस तरह का पालन करना बड़ा कठिन होता है।

सुअक्खाय-धम्मस्स-

(i) स्वाख्यात धर्म, सर्वविरति चारित्रवान मुनि (ii) तीर्थंकर आदि द्वारा प्रतिपादित चारित्र धर्म

(iii) सर्व सावद्य विरति रूप प्रव्रज्या धर्म अर्थात् समस्त प्राणियों (छः कायिक) की रक्षा रूप मुनि धर्म

धर्म की सोलह कलाएँ इस प्रकार हैं-

1. अनंतानुबंधी का भेदन करता हुआ प्रथम कला प्रगट करता है।
2. मिथ्यात्व को दूर कर अज्ञान रूप अंधकार का नाश करता है।
3. सम्यक्त्व का प्रकाश होता है।
4. आत्मिक ज्ञान प्रकट होता है।
5. देशव्रत प्राप्त करता है।
6. चारित्र धर्म को प्राप्त करता है।
7. अप्रमत्त अवस्था में धर्मध्यान की धारा प्रकट होती है।
8. गुण श्रेणी पर चढ़ता है।
9. शुक्लध्यान की धारा प्रकट होती है।
10. अवेदी होकर सर्वलोभ का त्याग करता है।
11. समस्त मोहनीय कर्म का नाश करता है।
12. घाती कर्मों का नाश करके आत्मज्योति प्रकट करता है।
13. लोकालोक का प्रकाशक केवलज्ञान प्राप्त करता है।
14. योग का निरोध करता है।
15. शैलेशी अवस्था प्राप्त करता है।
16. सर्व कर्मों से मुक्त हो लोक के अग्र स्थान पर जाता है।

नोट- (i) मिथ्यात्वी जीव में 16 में से एक भी कला नहीं होती है। (ii) भवी जीव 16 कलाओं को प्राप्त करता है।

राजर्षि के उत्तर का आशय- बाल तप और संयम पालन में रात-दिन का अन्तर है। तापस आदि के बाल तप घोर होने मात्र से ही श्रेष्ठ नहीं होते हैं। प्रव्रज्या घोर परीषह एवं उपसर्गों को सहन करने से घोर है। गृहस्थाश्रम घोर रूप होने से भी हिंसा आदि का पूर्ण रूप से त्याज्य नहीं होता।

अतः चाहे घोर हो या अघोर जो तद्भव में यानी वर्तमान एवं भविष्य के भवों में मोक्ष का साधक नहीं होता है वह कभी

मोक्षार्थी द्वारा आश्रयणीय नहीं होता है अर्थात् गृहस्थाश्रम को छोड़ना ही उचित है। इसलिए हे विप्र! आपका कथन अनुचित है।

9 . हिरण्यादि तथा भण्डार की वृद्धि करने के सम्बन्ध में–

हिरण्णं सुवण्णं मणि–मुत्तं, कंसं दूसं च वाहणं।
कोसं वड्ढावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया!।।46।।

भावार्थ– हे क्षत्रिय! चांदी, सोना, मणि एवं मोती, कांसे के पात्र, वस्त्र, वाहन और कोष (भण्डार) की वृद्धि करके तत्पश्चात् प्रव्रजित हो जाना।

देवेन्द्र द्वारा हेतु और उदाहरण– चांदी, सोना आदि सब वस्तुओं की वृद्धि हो जाने से इन सबके प्रति आपकी आकांक्षा एवं गृद्धि शान्त व तृप्त हो जाएगी। तब आपका मन प्रव्रज्या के पालन में अच्छी तरह निराकुलतापूर्वक लगा रहेगा। अत: जो आकांक्षा सहित होते हैं वे धर्मानुष्ठान करने के योग्य नहीं होते हैं। इन्द्र के कथन को सुनकर नमिराजर्षि ने इस प्रकार कहा–

सुवण्ण–रुप्पस्स उ पव्वया भवे, सिया हु केलाससमा असंखया।
नरस्स लुद्धस्स न तेहिं किंचि, इच्छा हु आगाससमा अणंतिया।।48।।

भावार्थ– कदाचित् सोने और चांदी के कैलाश पर्वत के तुल्य असंख्येय पर्वत हों, फिर भी लोभी मनुष्य की उनसे किंचित् भी तृप्ति नहीं होती, क्योंकि इच्छाएँ आकाश के समान अनन्त होती हैं। इनका कभी अन्त नहीं हो सकता है।

पुढवी साली जवा चेव, हिरण्णं पसुभिस्सह।
पडिपुण्णं नाल–मेगस्स, इइ विज्जा तवं चरे।।49।।

भावार्थ– धान्य, चांदी–सोना आदि, गाय–बैल आदि एवं पशु सहित सम्पूर्ण पृथ्वी यदि किसी व्यक्ति को दे दी जाए तो भी उसकी तृष्णा पूर्ण होना कठिन है। यह जानकर विद्वान् साधक तप:श्चरण करें।

नमिराज के उत्तर का आशय– मनुष्य की 100 रूपये की चाहना जब पूर्ण हो जाती है तो सहस्त्र की चाहना जगती है। सहस्त्र से लाख की, लाख से कोटि की, उससे राजा बनने की, फिर देव बनने की और तत्पश्चात् इन्द्र बनने की चाहना जगती रहती है। अर्थात् इच्छाओं की समाप्ति कभी नहीं होती है। यह भी सत्य है कि घर में सभी प्रकार के द्रव्य भरे हो तो भी ये घर के किसी एक व्यक्ति की भी इच्छा की पूर्ति के लिए भी पर्याप्त नहीं होते हैं। इस सत्य से प्रेरित होकर नमिराजर्षि **देवेन्द्र से इस प्रकार बोले–** बिना कर्मों की निर्जरा आकांक्षा रहित होना असंभव है। बारह प्रकार के तपों द्वारा होने वाली कर्मों की निर्जरा शाश्वत सुखों की जनक है। वस्तुत: संतोष आत्मा में होता है। संतोष आने से वस्तु न मिलने पर भी कोई आकांक्षा नहीं होती।

क्रमश : ....

प्रेमसूत्र से बंधा संघ है, हिल-मिल आगे बढ़ते हैं।
निन्दा, विकथा तज गुणीजन के, गुणगण मन में धरते हैं।।11।।

समकित के 67 बोल

15-16 जुलाई 22 अंक से आगे...

-शकुन्तला लोढ़ा, ब्यावर

पांचवें बोल - दूषण पांच

दूषण- जिसके कारण से सम्यक्त्व में मलिनता आती है उसे दूषण कहते हैं। जैसे वात, पित्त, कफ आदि दोषों का उद्भव होने से शरीर रुग्ण होता है उसी प्रकार इन पांच दोषों से सम्यक्त्व रुग्ण अर्थात् दूषित हो जाता है। इसलिए भगवान ने कहा है **'जाणियव्वा न समायरियव्वा'** ये अतिचार या दोष जानने योग्य है किन्तु आचरण करने योग्य नहीं है। सम्यक्त्व का मूल आधार जिनवाणी है अर्थात् प्रभु आज्ञा है और उसके अनुसार धर्म आराधना करना प्रत्येक साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका का कर्तव्य है। इसलिए कहा गया है कि व्रतों की आराधना शारीरिक बल या आत्मबल के आधार पर कम या ज्यादा की जा सकती है। ज्ञान के क्षेत्र में भी कम या ज्यादा ज्ञान की आराधना हो सकती है। जरूरी नहीं कि सभी साधु-साध्वी या श्रावक-श्राविका का श्रुतज्ञान एक जैसा हो। 5 समिति 3 गुप्ति का न्यूनतम श्रुतज्ञान भी आराधक के लिए पर्याप्त हो सकता है और अधिकतम 14 पूर्वों का ज्ञान भी मोक्षमार्ग में सहायक बनता है। तप में भी कोई व्यक्ति कम या कोई ज्यादा तप की आराधना कर सकता है, लेकिन जहां सम्यक् दर्शन की बात आती है तो सभी के लिए पूर्ण होना चाहिए। चाहे वो साधु हो या श्रावक। आंशिक दोष का सेवन करने से भी सम्यक्त्व मलिन हो जाता है।

1. शंका- सर्वज्ञ भगवान द्वारा उपदिष्ट तत्त्वों में संदेह करना शंका नामक दूषण है। क्षयोपशम की मंदता के कारण जैन सिद्धांत की गहन बातें यदि समझ में नहीं आती हैं तो उनके विषय में भी सम्यक्त्वी को यह निश्चय होना चाहिए कि **'तमेव सच्चं णीसंकं जं जिणेहिं पवेइयं'** जिज्ञासा बुद्धि से शंका करना दूषण नहीं है, परंतु शंका का समाधान न करना या शंकाशील बने रहना अतिचार है। अरिहंत परमात्मा द्वारा प्रतिपादित आगमों में एक पद और एक अक्षर पर भी जो विश्वास नहीं करता है वह शेष सभी आगमों पर, सभी सिद्धांतों पर रुचि रखता हुआ भी मिथ्यादृष्टि ही है। जैसे जमाली **'चलमाणे चलिए'** के सिवाय सब आगमों पर सब सिद्धांतों पर विश्वास रखता था तथा चारित्र भी निर्मल पालता था तथापि वह मिथ्यादृष्टि ही कहलाया। भगवान महावीर के तीर्थ में सात निह्नव हुए, जिन्होंने जिज्ञासा उत्पन्न होने पर समझने का प्रयास नहीं किया बल्कि भगवान के सिद्धांतों को ही गलत बता दिया और गलत प्ररूपणा कर दी। जिससे वह सभी सम्यक्त्व से पतित हो गए। कभी भी भावना थोड़ी भी ऊपर-नीचे हो और मिच्छामि दुक्कडं कर लिया जाए तो शुद्धिकरण हो जाता है। केवली भगवंत नहीं हैं, विशिष्ट अवधिज्ञानी मन:पर्यवज्ञानी भी नहीं हैं, आगम भी सम्पूर्ण रूप से उपलब्ध नहीं है, तो यदि किसी विषय के संदर्भ में समाधान प्राप्त न हो तो ऐसा विचार करे कि **'तत्त्व केवलिगम्य है'**। प्रभु ने जो फरमाया है वही सत्य है, नि:शंक है। यह दृढ़ श्रद्धा सम्यक्त्व को पुष्ट करती है। इसके विपरीत शंका होने पर पहले सम्यक्त्व मलिन होता है और उस शंका को पकड़कर बैठने से तो सम्यक्त्व से ही पतित हो जाता है।

कथा- गंग का द्विक्रियावाद- उल्लुका नदी के एक किनारे पर गांव था और दूसरे किनारे पर नगर था। वहां आचार्य महागिरी के शिष्य आर्य धनगुप्त विराज रहे थे। उनका शिष्य गंग था। आचार्य एक किनारे पर थे और शिष्य दूसरे किनारे पर। किसी समय शरद ऋतु में आचार्य को वंदन करने हेतु गंग नदी पार कर रहा था। सूर्य की गर्मी से उसकी खोपड़ी तप रही थी और नीचे नदी के शीतल जल से उसे शीत का अनुभव हो रहा था। इसी बीच मिथ्यात्व मोहनीय के उदय से उसने सोचा कि सिद्धांत में

दो क्रियाओं के एक साथ अनुभव का निषेध किया गया है, परन्तु मुझे एक साथ शीत-उष्ण दोनों क्रियाओं का अनुभव हो रहा है। अत: जो आगम में कहा गया है वह यथार्थ नहीं है। उसने गुरुजी से निवेदन किया तो गुरुजी ने अनेक युक्तियों से समझाने का प्रयास किया, किन्तु उसने अपना हठाग्रह नहीं छोड़ा। उसे संघ से पृथक् कर दिया गया।

गंग विचरता हुआ राजगृह नगर में आया और मणिनाग नाम के चैत्य में ठहरा। वहां पर परिषद् के सामने युगपत् (एक साथ) दो क्रियाओं के वेदन की प्ररूपण कर रहा था। यह सुनकर उस चैत्य का यक्ष मणिनाग कुपित होकर बोला- ''अरे दुष्ट शैक्ष! क्यों मिथ्या प्ररूपणा करता है? महावीर स्वामी यहां पधारे थे। वे तो एक समय में एक ही क्रिया के वेदन की प्ररूपणा करते थे। यह मैंने सुना है। तुम क्या उनसे भी अधिक ज्ञानी हो? इस मिथ्या प्ररूपणा को छोड़ो अन्यथा तुम्हारा कल्याण नहीं होगा। इसका भयंकर परिणाम आ सकता है।'' यक्ष के ऐसे वचनों को सुनकर गंग भयभीत हो गया और मिथ्या प्ररूपणा छोड़ दी। वह प्रबुद्ध हुआ और मिच्छामि दुक्कडं देकर गुरु के समीप गया तथा आलोचना प्रतिक्रमण कर आराधक बना।

2. कांक्षा- एकान्तवादी, असर्वज्ञ एवं राग-द्वेष से युक्त पुरुषों द्वारा प्रवर्तित मतों की आकांक्षा करना कांक्षा दूषण है। अन्य मतियों के विचार आडम्बर चमत्कार आदि को देखकर अगर वैसी चाहना होने लग जाती है तो सम्यक्त्व मलिन होता है। ज्ञानियों की दृष्टि में चमत्कार कुछ नहीं है। वह तो मात्र कर्मों की निर्जरा के कारण आत्मा की प्रकट हुई शक्तियां हैं। कभी-कभी किसी विशेष साधक की साधना से, तप से प्रभावित होकर कोई यक्ष या देव वहां सेवा में रहकर कुछ क्रियाओं का प्रदर्शन कर देते हैं, जिसे हम चमत्कार कह देते हैं। ऐसे चमत्कार तो जैनदर्शन में भी हो सकते हैं और अन्य दर्शनों में भी। जैन मुनि ऐसी शक्तियों का उपयोग (अतिविशेष कारणों के अतिरिक्त) नहीं करते हैं, लेकिन अन्य दर्शनों में ऐसी कोई मर्यादा नहीं होने से वे हमें आडम्बर और चमत्कार के रूप में दिखाई देने लगते हैं। हमें उसकी आकांक्षा नहीं करनी चाहिए।

नमिराजर्षि ने शकेन्द्र से कहा था- कोई अज्ञानी करोड़ पूर्व वर्ष तक लगातार मासखमण की तपस्या करे, पारणे में कुशाग्र पर आवे उतना आहार करे तो भी ऐसा तप सम्यक्दृष्टि की नवकारसी के तप की बराबरी नहीं कर सकता है।

अज्ञानी के ऐसे तप को देखकर कोई सम्यक् दृष्टि पुरुष कदाचित् विचार करे कि इतना दुष्कर तप तो अपने मत में नहीं है, इसलिए यह तप भी मोक्ष का मार्ग है। इस मार्ग को हमें भी स्वीकार करना चाहिए, तो ऐसा विचार करने से ही उसके सम्यक्त्व में कांक्षा दोष लग जाता है। जबकि दृढ़ सम्यक्त्वी पुरुष यह जानता है कि सच्चा मोक्ष मार्ग तो वीतराग प्ररूपित दयामय धर्म ही है।

3. विचिकित्सा- क्रिया के फल के संबंध में अविश्वास करना विचिकित्सा नामक सम्यक्त्व का दूषण है। धर्म क्रिया करते-करते इतना समय हो गया, अभी तक तो उसका कोई फल नहीं मिला, क्या पता आगे भी फल होगा या नहीं। कहीं मैं ठगा तो नहीं जा रहा हूं? इस प्रकार मन में विचार करना विचिकित्सा दोष है।

घर के अन्दर कोई बल्ब लगा हुआ है और वहां धुआं, तेल आदि का कार्य होने से बल्ब के ऊपर मैल जम जाता है तो बल्ब की रोशनी कम हो जाती है। हालांकि रोशनी उतनी की उतनी ही है, बल्ब में रोशनी कम नहीं हुई है। ग्लास पर कचरा जम जाने के कारण रोशनी बाहर कम आती है। व्यक्ति ने कपड़ा, साबुन, पानी आदि साधन लिए और उस कांच को ऊपर से साफ कर दिया, जिससे मैल का आवरण हट गया और प्रकाश ज्यादा हो गया। ठीक उसी प्रकार प्रत्येक ''व्यक्ति के भीतर अनंत शक्तियां, अनंत लब्धियां, अनंत केवलज्ञान आदि समान रूप से रहा हुआ है, लेकिन कर्मों के आवरण के कारण ये शक्तियां, ज्ञान आदि प्रकट नहीं होते। हम ठहरे चंचल, थोड़ी-सी साधना, धर्मक्रिया करते हैं ओर देखने

लगते हैं कि शक्तियां, ज्ञान आदि प्राप्त क्यों नहीं हुए और मन में विचार आने लगता है'' कि मैं जो कर रहा हूं उससे कुछ मिलने वाला है या नहीं। मेरी साधना का कुछ फल प्राप्त होगा या नहीं। ऐसा मन में जब संदेह आने लगता है तो यह हमारी साधना को, धर्म क्रियाओं को, धर्म आराधना को, धर्मनिष्ठा को कमजोर कर देता है। प्रकृति का नियम है कोई भी क्रिया निष्फल नहीं होती। अच्छी क्रिया का अच्छा परिणाम, खराब क्रिया का खराब परिणाम आता ही है। कर्मों के आवरण के अनुरूप ही फल की प्राप्ति होती है। इसलिए धर्म के फल में कोई संदेह नहीं रखना चाहिए।

कथा– चम्पानगरी में दो सार्थवाह पुत्र रहते थे। जिनदत्त पुत्र और सागरदत्त पुत्र। दोनों मित्र थे। दोनों साथ ही रहते थे। किन्तु चित्तवृत्ति दोनों की एक-दूसरे से विपरीत थी।

एक बार दोनों साथी देवदत्ता गणिका को साथ लेकर चम्पानगरी के सुभूमिभाग उद्यान में गए। वहां आमोद-प्रमोद करके उद्यान में परिभ्रमण करने लगे। तत्पश्चात् वे तीनों वहां जाने के लिए प्रवृत्त हुए जहां मालुकाकच्छ (वन) था। तीनों को अपनी ओर आते देखकर एक मयूरी घबराहट और बेचैनी के साथ उड़ी और निकट के एक वृक्ष की शाखा पर बैठकर कारव करने लगी। यह दृश्य देखकर सार्थवाह पुत्रों को संदेह हुआ। वे आगे बढ़े तो उन्हें दो अण्डे दिखाई दिए। दोनों एक-एक अपने घर ले गए। सागरदत्त का पुत्र शंकाशील था। उसने उस अंडे को ले जाकर पहले के अंडों के साथ रख दिया, लेकिन दूसरे ही दिन उससे रहा नहीं गया और विचिकित्सा करने लगा कि यह अण्डा निपजेगा या नहीं? वह अण्डे को उलटफेर कर कानों के पास ले गया और उसे बजाया, जिससे वह अण्डा निर्जीव हो गया।

इसके विपरीत जिनदत्त पुत्र श्रद्धासम्पन्न था। उसने विश्वास रखा और वह अंडा मयूर पालकों को सौंप दिया। यथा समय उससे बच्चा उत्पन्न हुआ। जिनदत्त पुत्र उसकी बदौलत हजारों-लाखों की बाजियां जीतने लगा।

यह है श्रद्धा और अश्रद्धा का परिणाम। जो साधक श्रद्धावान रहकर धर्म साधना करते हैं, किसी प्रकार की विचिकित्सा (संदेह) नहीं करते हैं, उसे इस भव में मान-सम्मान और परभव में मुक्ति की प्राप्ति होती है। इसके विपरीत अश्रद्धालु साधक इस भव में निन्दा-गर्हा तथा परभवों में अनेक प्रकार के संकटों, दु:खों, पीड़ाओं और व्यथाओं का पात्र बनता है।

4. परपाखण्ड प्रशंसा– सर्वज्ञ वीतराग देव के सिद्धांतों से जिनकी विपरीत मान्यता एवं वेश भी विपरीत है, उन अन्य दर्शनियों के ज्ञान आदि गुणों की प्रशंसा करना कि इनके सिद्धांत, इनकी क्रियाएं, इनके व्रत भी अच्छे हैं, इन्हें भी ग्रहण करना चाहिए। यह परपाखण्ड प्रशंसा नामक दूषण है। ये मोक्ष के साधक नहीं होने से और मिथ्यात्व के पोषक होने से सम्यक्दृष्टि द्वारा प्रशंसा करने योग्य नहीं है। वह प्रशंसा सदैव गलत है जो व्यक्ति को गलत रास्ते पर ले जाए। जब हम कुदेव, कुगुरु, कुधर्म की प्रशंसा करते हैं तो हमें देखकर बहुत से लोग उस मार्ग पर बढ़ जाते हैं। जैसे कोई व्यक्ति फुटपाथ पर किसी माल की प्रशंसा करता है, जिसकी टी.वी. पर किसी एक्टर ने प्रशंसा की थी; वह नकली माल है यह जानते हुए भी हम उसकी ओर आकर्षित हो जाते हैं और खरीद लेते हैं तो फिर जब हम दूसरे धर्मों से प्रभावित होकर मन से उनकी प्रशंसा करते हैं तो क्या दूसरे व्यक्ति उसकी ओर आकर्षित नहीं होंगे। अत: पर पाखण्डियों की प्रशंसा नहीं करनी चाहिए। यदि उनकी कोई बात अच्छी लग रही है और उसकी प्रेरणा देनी है तो प्रशंसा की शैली ऐसी होनी चाहिए कि सुनने वाले का झुकाव सिद्धांतों (सम्यक्त्व) की ओर हो, न कि मिथ्यादृष्टि की ओर।

5. परपाखण्ड संस्तव– अन्य दार्शनिकों आदि के साथ आना-जाना, बोल-चाल, खान-पान आदि गाढ़ संबंध बढ़ाना पर पाखण्ड संस्तव नामक सम्यक्त्व का दूषण है। जो धर्म प्रचारक हिंसा में धर्म मानते हैं, पाप की क्रियाओं में धर्म बताते हैं, धर्म के नाम पर पाप की

क्रियाएं करते हैं, जैसे तीर्थ स्थानों पर स्नान आदि करने से पाप धुल जाते हैं, देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना करने से मनोकामनाएं पूरी होती है, पशुओं की बलि चढ़ाने से देवी प्रसन्न होती है, घर में शांति बनाए रखने के लिए यज्ञ करना चाहिए, कौवों को खाना खिलाने से पूर्वज प्रसन्न होते हैं, तो हमें ऐसी विचारधारा रखने वालों की संगति नहीं करनी चाहिए। क्योंकि उनकी संगति करने से हमारी भी विचारधारा वैसी ही बनती जाती है और हमारा शुद्ध सम्यक्त्व मलिन हो जाता है। नमक के संबंध से दूध फट जाता है। न दूध अच्छा रहता है और न उससे मक्खन ही अच्छा निकलता है तथा न उसकी छाछ बनती है। वह किसी भी काम का नहीं रहता। इसी प्रकार सम्यक्दृष्टि अगर पाखण्डियों से परिचय करे, उनकी संगति करे तो सम्यक्त्व से भ्रष्ट हो जाता है और इस भव व परभव दोनों को बिगाड़ देता है।

कथा- सौराष्ट्र देश में निर्मल सम्यक्त्वधारी, बारह व्रतधारी, जिनधर्म के रहस्य को जानने वाला जिनदास श्रावक रहता था। देश में किसी समय अकाल पड़ जाने के कारण भूख से तड़पता भटकता हुआ बौद्ध भिक्षुओं की संगति में चला गया। वहां उसे अति स्निग्ध पदार्थ, मोदक आदि खाने को देते, जिससे उसे अजीर्ण होकर विसूचिका (दस्त) हो गई। वैद्य और औषध के प्राप्त न होने पर अपना अंतिम समय जानकर सिद्ध साक्षी से आलोचना की, चार शरण ग्रहण कर पंच नमस्कार गिनते हुए प्राण त्याग दिए और सौधर्म देवलोक में देव रूप में उत्पन्न हुआ। इधर बौद्ध भिक्षुओं ने मृत देह को अपनी आचार विधि के अनुसार लाल वस्त्र में लपेटकर एकांत में फैंककर चले गए। देव ने अवधिज्ञान से अपनी देह को लाल वस्त्र में लपेटी हुई देखी तो विचार करने लगा कि मैं पूर्वभव में बौद्ध था अत: बौद्ध दर्शन प्रधान है, जिससे मुझे यह दिव्य देवऋद्धि प्राप्त हुई है। देव उज्जयिनी नगरी में स्थापित बौद्ध प्रतिमा में अपने स्वरूप को निरुपित कर फिर स्वयं अदृश्य रहकर दृश्य हाथ द्वारा बौद्ध भिक्षुओं को प्रतिदिन देव द्वारा निर्मित आहार देने लगा, जिससे बौद्ध धर्म का प्रभाव बढ़ने लगा और अरिहंत धर्म की अवमानना होने लगी।

आचार्य धर्मघोष उज्जयिनी पधारे और श्रावकों से सारा वृत्तांत सुनने के बाद श्रुत ज्ञानोपयोग से जानकर अपने दो मुनियों को उस बुद्ध विहार में जाने का आदेश दिया। दोनों मुनि वहां गए। जैसे ही देव अपने दिव्य हाथ से दोनों मुनियों को भिक्षा देने लगा तभी मुनियों ने उस देव के हाथ को पकड़कर उच्च स्वर में पांच बार नमस्कार मंत्र पढ़कर कहा- जागृत हो! इन पाखण्डियों में मोहित मत बन।

यह सुनकर देव ने अवधिज्ञान का उपयोग लगाया। तत्त्व ज्ञान होने पर शीघ्र ही दिव्य रूप में उनके सामने प्रकट हुआ। दोनों मुनियों को वंदन किया और गुरु के समक्ष उपस्थित होकर कहने लगा कि आपने मेरा उद्धार कर दिया, प्रभो! अन्यथा मिथ्यात्व से मूढ़ बुद्धि द्वारा मैं तो भवसागर में डूब जाता और फिर प्रजाजनों को कहने लगा कि सभी धर्मों में उत्तम व सम्यक् यह अरिहंत धर्म है। भव पार कराने वाला मोक्ष रूपी वृक्ष का यह बीज है। इसी धर्म के प्रभाव से मुझे इस प्रकार की ऋद्धि प्राप्त हुई है। अरिहंत प्रवचन की इस प्रकार प्रभावना करके गुरुचरणों में नमस्कार करके वह देवलोक में चला गया।

इस प्रकार जिनदास नामक श्रावक को यदि समय पर सही गुरु का सान्निध्य प्राप्त नहीं होता तो पाखण्डियों की संगति से श्रद्धा डांवाडोल हो जाती और अपनी भव परम्परा को बढ़ा लेता।

यदि हम इन पांच अतिचारों से बचकर जिनवचनों पर दृढ़ श्रद्धा व आस्था के साथ अपनी धर्म आराधना को आगे बढ़ाएंगे तो निश्चित रूप से मोक्ष के शाश्वत सुखों को प्राप्त करेंगे।

-क्रमश: ...

दूर हटा छल, छद्म अहं को, सरल, सहज सद्भाव धरें।
परहित हेतु तज निज इच्छा, सहज सुकोमल भाव वरें।।12।।

संघ सेवा : अपूर्व अवसर

-मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, जिसे अध्यात्म, धर्म, शुद्ध संयम, सशस्त अनुशासन का पर्याय कहा जाए तो अनुचित नहीं होगा। निश्चित रूप से इन समस्त तत्त्वों का समावेश इस संघ में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। सेवा, साधना एवं संयम की त्रिवेणी रूप यह संघ आज एक स्वर्णिम महल के रूप में जनसमुदाय के समक्ष ज्ञान-ध्यान, स्वाध्याय को अपने भीतर समावेश कर उसकी अद्भुत चमक से चमक रहा है। आखिर इस चमक के पीछे, इस स्वर्ण ज्योति के पीछे ऐसा क्या छिपा हुआ है जिससे सम्पूर्ण संघ आलोकित हो उठा है। चारों ओर धर्म एवं स्वाध्याय की बहार-सी आ गई है। जब बहुत गहन चिंतन करते हैं तो एक बात अवश्य ही उभरकर हम सभी के समक्ष आती है कि इस स्वर्ण ज्योति के पीछे कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में चतुर्विध संघ के चारों तत्त्वों यानी साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका का योगदान अवश्यमेव रहा है। इन चारों तीर्थों ने मिलकर तन, मन एवं धन से यशाशक्ति इस संघ का सिंचन किया है। इसे पल्लवित किया है, पुष्पित किया है। तभी तो साठ वर्ष पूर्व लगाया गया यह नन्हा-सा पौधा आज हम सभी को अपूर्व शीतल छांव देने वाला विशाल वटवृक्ष चुका है, जिसकी छांव तले हम अपने आपको सुरक्षित महसूस करते हैं।

इस वटवृक्ष की जड़ों में हमारे संघ के पूर्वाचार्यों का, पूज्य आचार्य श्री रामेश का एवं हमारे संघ प्रमुखों का त्याग, बलिदान, समर्पणा, सेवा, निष्ठा छिपी हुई है। कहा जाता है कि जिस वृक्ष की जड़ें मजबूत होती हैं उस वृक्ष की शाखाएं, प्रशाखाएं निरंतर फैलकर अपने विशाल रूप को सभी के समक्ष उजागर करती हैं। इसी प्रकार हमारे संघ के इस विकास में जिन आचार्य भगवन्तों एवं श्रावक समाज ने योगदान दिया वह अत्यंत ही सशक्त था।

आज हमारा संघ अप्रतिम ऊंचाइयों को छू रहा है। हर क्षेत्र में प्रगति व उत्थान हो रहा है। इसकी गरिमा व ऊंचाइयों को बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि संघ का प्रत्येक व्यक्ति संघ सेवा से अछूता नहीं रहे। संघ हमारे लिए सर्वोपरि होना चाहिए क्योंकि संघ हमारी पहचान है, अस्तित्व है, गौरव है।

अत: व्यक्तिगत सोच को छोड़ सामूहिक सोच पर जोर देना चाहिए। निम्न कुछ बिन्दुओं को अपनाकर हम संघरूपी चट्टान में हमारा भी एक छोटा-सा योगदान दे सकते हैं।

(1) स्वयं आगे आएं- कोई रोग हो जाने पर रोगी स्वयं अस्पताल जाता है, ना कि अस्पताल उस रोगी के पास आता है। विद्यार्थी विद्यालय जाएगा, विद्यालय चलकर विद्यार्थी के पास नहीं आएगा। अत: संघ द्वारा संचालित गतिविधियों में स्वयंमेव ही सम्मिलित होना पड़ेगा। इंतजार नहीं करें कि कोई कहे और फिर हम संघ कार्य करें। स्वयं आगे आएं और संघ सेवा को अपना साध्य बनाएं।

(2) व्यक्तिगत के स्थान पर सामूहिक सोच को प्रधानता देवें- चतुर् - चार, विध - प्रकार अर्थात् चतुर्विध संघ साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका इन चार प्रकार के व्यक्तियों का समूह है, जिन्हें संघ स्तम्भ कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इनमें से एक भी स्तम्भ यदि अपने स्थान से हिल जाए या बराबर का सहभागी ना बने तो संघरूपी छत का डांवाडोल होना भी संभावित है। अत: प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं के बारे में ना सोचकर सम्पूर्ण संघ के बारे में सोचना चाहिए। 'मैं ही क्यों' के स्थान पर **'मैं क्यों नहीं'** के भाव रखें तो निश्चय ही संघ में आपका अपूर्व योगदान होगा।

(3) प्रोत्साहन- एक छोटा बच्चा जब पहला

कदम उठाता है तो उसकी माता उसे कोई वस्तु या अन्य लालच ना देकर खुशी से ताली बजाती है, उसे प्रोत्साहित करती है, गिरने पर सहारा देती है और इसी प्रोत्साहन और सहारे से बच्चा चलना सीखता है। वह कितनी ही बार गिरे पर माता उसे हर बार नए जोश के साथ सहारा देकर खड़ा करती है। संघ की भी यही प्रक्रिया है। कार्य करने वाले को प्रोत्साहित करें ना कि गलती हो जाने पर उसकी टांग खींचें। छोटे से छोटा कार्य करने वाले व्यक्ति को भी प्रोत्साहित कर आगे बढ़ाएं, उसे संघ सेवा हेतु और प्रेरित करें, क्योंकि प्रोत्साहन ही संघ का पोषण है। 'मैं' के स्थान पर 'हम सब' का भाव रखें।

(4) निरंतरता– निरंतरता सफलता का एक मार्ग है। अपनी संघीय गतिविधियों में निरंतरता रखें। रोज व्याख्यान, चारित्रात्माओं के दर्शन हेतु अनुकुलता होने पर जाऐं, जिससे आपके समय-समय पर संघीय गतिविधियों, आयामों व प्रवृत्तियों की जानकारी मिल सके। समय पर जानकारी मिलने से यथासम्भव आप अपना योगदान दे पाएंगे। निरंतरता के अभाव में शायद आप कोई स्वर्णिम अवसर गंवा बैठें।

(5) समानता का सिद्धांत अपनाएं– संघ में आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक आदि विभिन्न क्षेत्रों में पर्याप्त मानव सेवा व संसाधनों की आवश्यकता होती है।

अत: प्रत्येक वर्ग में अपना योगदान देने वाले व्यक्तियों को समान रूप से देखा जाना चाहिए। सेवा के प्रत्येक प्रकल्प को समानता से देखना चाहिए। फिर चाहे कोई धन से सहयोग दे या कोई तन-मन से। समतल भूमि पर यात्रा करना ज्यादा सरल व अनुकूल होता है न कि ऊबड़-खाबड़ भूमि पर जिससे संघ का कार्य सुगमता से चलता रहे । यानी प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार, आदर देना चाहिए।

(6) स्वधर्मी वात्सल्य– संघ, समूह, समुदाय समान विचारधारा व कार्य करने वाले लोगों द्वारा बनता है। विचारधारा व कार्य में समानता के साथ हमें अपने समवर्गियों को हर कदम पर समान रखना चाहिए। आर्थिक दृष्टि से निम्न लोगों को अपेक्षित सहयोग देना चाहिए। स्वधर्मियों के प्रति वात्सल्यता संघ उत्थान में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है।

(7) भाषा विवेक– भाषा, आचार-विचार एक उच्च स्तरीय संघ की पहचान होते हैं। अत: संघ के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी भाषा को इतना उच्चस्तरीय रखना चाहिए कि जो सिर्फ उसके व्यक्तित्व की ही नहीं बल्कि संघ की आभा को प्रकट करे। शास्त्रों में भाषा विवेक को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है।

(8) समर्पणा– संघ हम से है और हमारा अस्तित्व संघ से, अत: संघ के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए। संघ के प्रति हमारी समर्पणा इतनी गहरी होनी चाहिए कि जैसी एक माता-पिता की अपनी संतान के प्रति होती है। प्रतिदिन संघ सेवा हेतु कुछ समय अगर संघ का प्रत्येक व्यक्ति निकाले तो श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का सितारा उज्ज्वल हो चमक उठेगा।

नाम अमर है उन वीरों का, जिनने संघ सेवा धारी।
अपना कुछ ना सोच किया, सर्वस्व संघ पे बलिहारी।।13।।

साधुमार्गी फैक्ट्स

श्री अखिल भारतवर्षीय सा.जैन संघ के कुछ ऐसे तथ्य हैं जो निश्चय ही जिनशासन के प्रति आपकी श्रद्धा को और अधिक आलोकित कर देंगे तो आइये जाने ऐसे अद्भुत तथ्यों को....
इन तथ्यों का संकलन 'स्वर्ण जयंती विशेषांक' से किया गया है।

सीमित वस्तुओं का प्रयोग

श्री रंगूकंवरजी म.सा. ने स्वयं दीक्षा ली और अकेले होने से संकल्प किया कि जब तक 2 और साध्वियां न हो जाएं तब तक आटा, आंवला, हल्दी, छाछ व धोवन इन पांच द्रव्यों के उपरान्त अन्य वस्तुओं को ग्रहण नहीं करूंगी तथा इस संकल्प का दृढ़ता से पालन किया।

गुरु के मिले चरण कि मेरे रोम खिल गए

साधुमार्गी परम्परा के नौ आचार्यों में से संयमी पर्याय में सर्वाधिक राज्यों की स्पर्शना करने वाले आचार्य हैं- आचार्य श्री रामेश। आचार्यश्री ने अब तक (2022 चातुर्मास तक) 14 राज्यों की स्पर्शना की- 1. राजस्थान 2. पंजाब 3. हरियाणा 4. महाराष्ट्र 5. मध्यप्रदेश 6. गुजरात 7. पश्चिम बंगाल 8. उड़ीसा 9. झारखण्ड 10. आन्ध्रप्रदेश 11. छत्तीसगढ़ 12. तमिलनाडु 13. कर्नाटक 14. तेलंगाना।

गूंजे धरती गूंजे अम्बर, रत्नपुरी का पहला नंबर

रतलाम एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें साधुमार्गी संघ के आचार्यों का सर्वाधिक सानिध्य प्राप्त हुआ है। अब तक रतलाम में आचार्यों के 28 चातुर्मास व आचार्य श्री रामेश का युवाचार्य अवस्था में 1 एवं आचार्य अवस्था में 1 चातुर्मास हो चुका है। उसका विवरण इस प्रकार है-

आचार्य श्री उदयसागरजी म.सा. के 18 चातुर्मास हुए।
आचार्य श्री चौथमलजी म.सा. के 03 चातुर्मास हुए।
आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. के 02 चातुर्मास हुए।
आचार्य श्री गणेशलालजी म.सा. का 01 चातुर्मास हुआ।
आचार्य श्री नानालालजी म.सा. के 02 चातुर्मास हुए।
आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के 02 चातुर्मास हुए।

वसे गुरुकुले णिच्चं

ज्ञात इतिहास के अनुसार नौ आचार्यों में से आचार्य श्री रामलालजी म.सा. एक मात्र ऐसे आचार्य हैं जिन्होंने दीक्षा लेने के बाद युवाचार्य पद ग्रहण तक सारे ही चातुर्मास आचार्यश्री (आचार्य श्री नानालालजी म.सा.) के साथ ही किये। आपने युवाचार्य अवस्था के सात चातुर्मासों में से भी पाँच चातुर्मास आचार्य श्री नानेश के साथ ही किये। केवल सन् 1996 में निम्बाहेड़ा और सन् 1997 में रतलाम ये दो चातुर्मास स्वतंत्र रूप से किये।

अतीत की स्वर्णिम झलक

शासन प्रभावक श्री धर्मेशमुनिजी म.सा. ने वर्षों तक स्थान-स्थान पर अत्यन्त परिश्रमपूर्वक गहरी खोज करके साधुमार्गी संघ के इतिहास के बहुमूल्य दस्तावेजों एवं दुर्लभ सामग्री को एकत्र किया। उनके श्रम को **'साधुमार्ग की पावन सरिता'** नामक ग्रन्थ में देखा जा सकता है। यह ग्रन्थ साधुमार्गी संघ के इतिहास का एक प्रामाणिक ग्रन्थ है।

पाँच आचार्यों के दर्शन

श्रीमती मानबाईजी बम्ब ने भाटखेड़ी में 26-12-2004 को आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के दर्शन किये। उस समय उनकी उम्र 106 वर्ष की थी। श्रीमती बम्ब ने अपने जीवनकाल में 5 आचार्यों (आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा. से लेकर आचार्य श्री रामेश तक) के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त किया।

दर्शन से ही प्यास बुझेगी

बीकानेर निवासी जैनेतर भाई श्री मूलचन्दजी सोनी

आचार्य श्री नानेश के प्रति परम श्रद्धाशील थे। उनका एक विशेष नियम था कि वे जब कभी बीकानेर से बाहर आचार्यश्री के दर्शन के लिए बीकानेर से रवाना होते तब से लेकर जब तक वे आचार्यश्री के दर्शन नहीं कर लेते तब तक मुँह में अन्न-जल आदि कुछ भी नहीं लेते। चाहे यात्रा में 2 दिन लगे या तीन दिन।

धर्मपाल समाज रचना

आचार्य श्री नानेश ने संवत् 2020 में मालवा प्रान्त के बलाई जाति के लोगों को व्यसनमुक्त करवाकर जैनधर्म स्वीकार करवाया। उस समय स्वयं आचार्यश्री ने मात्र साढ़े तीन महीने में साढ़े सतरह हजार लोगों को प्रत्याख्यान करवाया। आचार्यश्री ने उन्हें 'धर्मपाल' संज्ञा से संबोधित किया। आज धर्मपालों की संख्या एक लाख से भी अधिक बताई जाती है।

चातुर्मास में अधिकतम मुनियों की संख्या

आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा. का संवत् 1991 का चातुर्मास रतलाम में हुआ। उस चातुर्मास में आचार्यश्री सहित 46 संत विराजमान थे।

महिमाशाली पाट

मध्यप्रदेश में मंदसौर जिले के नगरी गाँव में एक पाटा है, जिसके बारे में वहाँ के निवासियों का कहना है कि आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म.सा. से लेकर आचार्य श्री रामलालजी म.सा. तक सभी नौ आचार्य भगवन्त उस पाटे पर विराजे हैं।

गरिमाशाली चौकी

राजस्थान के भीलवाड़ा शहर के सुश्रावक श्री शोभालालजी नागौरी के यहाँ एक चौकी (बाजोट) है। उनके अनुसार साधुमार्गी परम्परा के नौ ही आचार्य उस चौकी पर विराजे हैं।

भक्तिभरा समन्दर

आचार्य श्री नानेश के सानिध्य में 4 मार्च, 1984 को रतलाम में 25 मुमुक्षु भाई-बहिनों की दीक्षा का प्रसंग था। इस दीक्षा प्रसंग की धर्मसभा में लगभग एक लाख लोग उपस्थित थे। साधुमार्गी संघ में किसी एक कार्यक्रम की यह सर्वाधिक उपस्थिति थी।

यह दुर्लभ परिवार

बैंगलोर में रहने वाला लसाणी (जिला राजसमन्द-राजस्थान) का बम्बकी परिवार साधुमार्गी संघ का एक ऐसा परिवार है, जिसमें आज के इस जमाने में भी 60 से अधिक सदस्य एक ही चौके में भोजन करते हैं। वर्तमान में इस परिवार के मुखिया श्री धर्मचन्दजी बम्बकी है।

भक्ति रस

वीर गौतम-सी तस्वीर

ना तुलसीदास, ना मैं संत कबीर
ना गालिब, ना मैं शायर मीर
फिर भी भक्तिवश उर हुलसाए है
भाव उभर आए नैनन तीर।
गुरु-शिष्य की ये जोड़ी देखो,
त्रियोग-क्रिया से स्व में गौते लगाए हैं
त्रिलोक-त्रिकाल में दुर्लभ ही होते
ऐसे फकीर।
दो जिस्म और जान एक हैं
जीवन सधा ऐसा कि
अखण्ड नौ सा एक ही दीपाएं हैं

जिनवाणी छलका श्रीमुख से,
ये तार रहे हैं मूक-बधीर।
भरी व्यस्तता में भी, जान इंगित-इशारा
अद्भुत मिसाल ये, मशाल जलाए हैं
कि आचार-विचार से,
शिष्य-सम्पदा में बन गए वजीर।
जाते शब्दों भरी पोटली संग
पर नि:शब्द लौट आते हैं,
अतिशय ऐसा भारी,
शब्द अधरों में ही धरे रह जाते हैं,
और उजली हो जाती आत्म तस्वीर।

इस पवित्र, अटूट, विरली जोड़ी के
पाकर दर्शन प्रत्यक्ष-परोक्ष,
विरले ही जीवन धन्य बनाए हैं
चांद की चांदनी में नहाकर
चकौर मन कुछ गुनगुनाए हैं
मानो आई हो ऋतु शिशिर।
कभी गाकर, कभी लिखकर
कभी हो मौन... नैत्रों से बोलकर
उतार नजर गुरु-शिष्य की
सब मन बधाते हैं।

यही प्रार्थना वीर प्रभु से, ऐसी शक्ति दो हमको।
संघ सेवा में झौंके जीवन, और न कुछ सूझे हमको।।14।।

संघ साधना

–सम्पतराज रांका, मुम्बई

चतुर्विध संघ की निश्चयात्मक व्याख्या सरल नहीं है। परिभाषा का तात्पर्य है परिसीमन। फिर संघ के समान नि:सीम, अथाह, गहन संकल्पना का सीमा निर्धारण दु:साध्य ही है। संघ अनादि-अनन्त है। भगवान महावीर के दर्शन में चतुर्विध संघ की महिमा का उल्लेख है। आपने संघ को **'णमो तित्थस्स'** कहकर उसे वंदनीय बताया।

'नंदीसूत्र' में संघ को अनेक प्रकार की उपमाओं से अलंकृत किया गया है। इस प्रकार का अलंकरण संघ के वैविध्यपूर्ण तथा व्यापक पहलुओं का ही हमें बोध कराता है। दृष्टांत निम्न प्रकार से हैं-

नगर- जिस तरह से नगर में सभी प्रकार के प्राणी निवास करते हैं, उसी तरह संघ में सदस्यों की ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना का स्तर न्यूनाधिक होते हुए भी सभी सदस्य हिल-मिलकर रहते हैं।

चक्र- संघ अनवरत एवं अक्षुण्ण रूप से गतिमान रहता है।

रथ- संघरूपी रथ में साधु-साध्वी, श्रावक एवं श्राविका पहियों के रूप में गतिमान हैं।

पद्म- संसार सागर रूपी कीचड़ में संघ 'कमल' के समान सुशोभित है।

चन्द्र- संघ सभी प्राणियों को चन्द्र जैसी शीतलता प्रदान करता है।

रवि- संघ की महिमा सूर्य के समान दैदीप्यमान रहती है।

सागर- जिस तरह सागर कभी भी अपनी परिधि से बाहर नहीं आता, उसी तरह चतुर्विध संघ भी गांभीर्य से परिपूर्ण है।

मेरु- चतुर्विध संघ लोक में अद्वितीय है। इसका कोई सानी नहीं।

अत: संघ की परिकल्पना को किसी निश्चित आकार, मात्रा, क्षेत्र, विचार के दायरे में समाविष्ट न करते हुए हम उसकी महत्ता व दिव्यता पर लक्ष्य केन्द्रित करें।

हमारा आध्यात्मिक चिंतन यह है कि इस चतुर्विध संघ रूपी नौका में बैठकर हम अनंत भवसागर को पार करें। वैसे तो हम कई बार इस नौका में सवार हुए हैं, लेकिन अनादिकाल से चतुर्विध संघ और स्वयं में भेद की रेखा बनी रही, जिससे हम लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाए। आज इस नौका के खेवनहार के रूप में आचार्य श्री रामेश का सान्निध्य प्राप्त करना हमारे पुण्य प्रताप का फलित होना ही है। आप हमें जिनवाणी का रसास्वादन कराते हुए यह बोध दे रहे हैं कि हमारी जीवनशैली में चतुर्विध संघ और स्वयं के मध्य कोई विभाजन रेखा न हो और यह चेतना प्रत्येक श्वासोच्छ्वास में व्याप्त हो। जीवन के प्रत्येक श्वांस में संघ के प्रति समर्पणा, अनुराग एवं निष्ठा का भाव बना रहे और ऐसा विश्वास मन में जगे कि-

संघ का गौरव	–	मेरा गौरव
संघ का वैभव	–	मेरा वैभव
संघ का श्रेय	–	मेरा श्रेय
संघ का विकास	–	मेरा विकास
संघ गरिमा	–	मेरी गरिमा
संघ की सेवा	–	मेरी सेवा

इसी भांति संघ के विषय में हमारी जागरूकता का प्रवाह तरंगित हो। हमारी जीवनशैली में संघ के प्रति कृतज्ञता का आवरण बने।

हम परिकल्पना करें कि अगर संघ ने हमको स्वीकार नहीं किया होता तो क्या हम इस जीवन को सफल बना सकते थे? क्या हम अकेले सिद्धशिला के

पथ के राही बन सकते थे? नहीं, कदापि नहीं।

संघ हमारे जीवन के तीनों पड़ावों में सम्बल प्रदान करता है। बाल्यावस्था में संस्कारित करता है, युवावस्था में सम्यग् का बोध कराता है व सह-अस्तित्व की भावना को प्रस्फुटित करता है तथा वृद्धावस्था में जीरो कषाय जीवनशैली की ओर अग्रसर होने के लिए उत्प्रेरित करता है। जो भी व्यक्ति अपने स्वार्थ, अपने अहंकार को छोड़कर पूर्ण मनोयोग से, अपने तन-मन-धन से इस चतुर्विध संघ की सेवा करता है, वह इहलोक में और परलोक में भी सुख-संपदा का वरण करता है।

सम्यग्दृष्टि देवी-देवता, मानव आदि भी श्रीसंघ को वंदन-नमस्कार करते हुए संघ की साधना में लीन रहते हैं। महान पुण्यवानी के योग से किसी व्यक्ति को चतुर्विध संघ की सेवा का अवसर मिलता है। हम इस महान अवसर को गंवा न दें। संघ के हित में जो भी कार्य समक्ष आता है उसके लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए। जो व्यक्ति अपने स्वार्थ को छोड़कर संघ के कार्यों में प्रवृत्त रहता है, पूर्ण मनोयोग से उन कार्यों को पूर्ण करने की चेष्टा करता है, वही प्रशंसा का पात्र बन जाता है और संघ के धरातल पर आकर विकट कर्मों की निर्जरा करता हुआ सिद्धत्व की ओर गतिशील हो जाता है।

हाथी को बांधने के लिए एक रस्सी की जरूरत होती है, जो अनेक धागों से बनती है। उसका एक-एक धागा अपनी वैयक्तिकता को एकसूत्र में समाहित करता है तब जाकर एक रस्सी का रूप उभरता है और एक दु:संभव कार्य करने में अर्थात् हाथी को बांधने में वही शक्तिहीन धागा सक्षम हो जाता है। अगर वही धागा अपने बलबूते पर कोशिश करता तो स्वयं अपने अस्तित्व से भी हाथ धो बैठता। अत: संघभाव में रहने के लिए हम सब प्रयत्नशील रहें।

जो कार्य कल्पना से परे हो वह कार्य भी संघ समूह की शक्ति से संपन्न हो सकता है। **'संघे शक्ति कलौयुगे'** की सत्य भावना हम पहचानें। जैसे नदियां सागर में मिलकर अपना अस्तित्व खो देती है, वैसे ही हम अपने व्यक्तिवाद के अस्तित्व रूपी नदी को संघवाद रूपी सागर में विलीन कर दें। यही अभ्यास निरंतर करते रहें जो कि अध्यात्म की साधना द्वारा ही संभव है। आईए, हम सब संकल्प लें कि व्यक्तिवाद को छोड़कर संघवाद को ही अपने जीवन का मंत्र बनाएं। तब निश्चित रूप से हम मोक्षपथ के राही बन पाएंगे।

प्रत्येक सदस्य का कर्त्तव्य है कि आपसी सामंजस्य, सहअस्तित्व, सहिष्णुता एवं समतामय जीवनशैली को अपनाकर संघ को नई दिशा प्रदान करें। निन्दा-विकथा से कोसों दूर रहकर गुणीजनों के आदर्श को जीवन में आत्मसात् करने का अभ्यास करें। इस चतुर्विध संघ के धरातल को पाकर, अपनी इच्छाओं को त्यागकर सहजता का भाव धारण करते हुए छल, कपट और अहंभाव को शून्य करने की भावना उजागर करते हुए संघ साधना में लग जाएं।

वीर प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हमारे जीवन में संघ सेवा का जो अनुपम अवसर आया है, उसको हम खोएं नहीं और वे हमें ऐसी शक्ति प्रदान करें कि संघ सेवा हमारी जीवनशैली का अभिन्न अंग बन जाए। ठीक उसी तरह जैसे हम अपने सामाजिक, व्यावसायिक, पारिवारिक कार्यों को पूर्ण मनोयोग से संपन्न करते हैं। हमारा मन, आचार, विचार, व्यवहार में संघ सेवा की प्राथमिकता और संघनिष्ठा की अनुगूंज रहे। जिस तरह से मां अपने बच्चे को प्राण से भी ज्यादा चाहती है, उसी तरह संघ भी हमारा ईश्वर है, संघ ही हमारा प्राण है। संघकार्य के यज्ञ में हम अपनी आहुति देने हेतु तैयार रहें।

हमारी महान पुण्यवानी के उदय से हमें आर्यकुल एवं जिनवाणी का रसास्वादन करने का अवसर मिला है। आगमों के पन्नों को पलटकर देखें तो हमारा जीवन अनन्तकाल से भ्रमण करता हुआ आ रहा है, लेकिन हमारे जीवन में समकित की उत्कृष्ट पराकाष्ठा का बोध नहीं हुआ है। जिसमें देव हमारे अरिहंत, गुरु हमारे निर्ग्रंथ एवं धर्म हमारे केवली भाषित दयामय धर्म को आत्मप्रदेशों तक जाकर संस्कारित करता है और इसका प्रतिपल आभास होना हमारा संकल्प, हमारा लक्ष्य है।

इस लक्ष्य को प्राप्त करने का एक ही सुगम और सरल उपाय है कि हम अपनी आत्मिक साधना हमारे गुरु, आगमधर समकिती के सान्निध्य में करें। उनकी जीवनशैली, उनका उद्बोधन, उनकी संवरयुक्त क्रिया

हमारे जीवन का अध्याय बने। उनकी आज्ञा ही जिनेश्वर देवों की आज्ञा, उनका दिशा-निर्देश ही तीर्थंकर देवों का दिशा-निर्देश समझना हमारे जीवन का लक्ष्य बने।

भगवान महावीर की पाट-परम्परा एवं सुधर्मा पट्टधर, श्रमण संस्कृति के अडिग प्रहरी, आचार्य प्रवर 1008 श्री गणेशलालजी म.सा. ने 30 सितम्बर 1962 तिथि आसोज सुदी 2 वि.सं. 2019 को उदयपुर में समताविभूति आचार्य श्री नानालालजी म.सा. को अपने करकमलों से चतुर्विध संघ की धवल चादर ओढ़ाकर युवाचार्य पाट पर विराजमान किया। उसी दिन उन्हीं के सान्निध्य में श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का गठन हुआ। वर्ष 2012 में संघ का स्वर्ण जयन्ती वर्ष मनाया गया।

आईए! भगवान महावीर के इस चतुर्विध संघ की अनन्य सेवा करें, उसके माध्यम से आध्यात्मिक वैभव की प्राप्ति करने का लक्ष्य रखें। ऐसे साधुमार्गी संघ की गौरवगाथा और संघ सेवा के अनुपम अवसरों को प्राप्त कर हम अपने आप में गौरवशाली महसूस करें और संघ के उपकारों को मानसपटल से ओझल ना होने देवें। स्मृति में यही बना रहे कि इस संघ के उपकार को हम कभी भी विस्मृत नहीं होने देंगे।

हे संघनायक! हम आपकी जीवनशैली का अंश मात्र अपने जीवन में आत्मसात् करना चाहते हैं। हे भगवन्! इस उपकार से हम क्यों वंचित रहें; हम तो आपकी परछाई बनकर रहना चाहते हैं। हम आपकी संयमित साधना के उत्तरसाधक बनना चाहते हैं। हमें ऐसा बोध दें कि हम भी ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप की पावन आराधना में लीन होकर आठ कर्मों के विशाल साम्राज्य को तहस-नहस करने के प्रकल्प को त्वरित गति प्रदान कर पाएं।

यही प्रार्थना वीर प्रभु से, ऐसी शक्ति दो हमको।
संघ सेवा में झौंके जीवन, और न कुछ सूझे हमको।।

श्रमणोपासक स्वर्ण जयन्ती स्मारिका विशेषांक

रचनाएँ आमंत्रित

भगवान महावीर के अहिंसा सन्देश को जन-जन के हृदय पटल पर जागृत करने एवं समाजोत्थान के साथ-साथ समाज कल्याण को समर्पित आपकी अपनी श्रमणोपासक पत्रिका का अंक आपके करकमलों में है। आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। हम आतुर हैं आपके सुझावों को जानने के लिए। कृपया श्रमणोपासक के सम्बन्ध में आप अपने सुझाव हमें नि:संकोच भिजवाएँ ताकि इसे और अधिक जनोपयोगी व रुचिकर बनाया जा सके। आपके सुझाव हमारा मार्गदर्शन करेंगे ऐसा हमारा विश्वास है।

श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। इसी प्रकार आगामी **15-16 अक्टूबर 2022** का धार्मिक अंक **'त्याग की महिमा'** विषय पर आधारित रहेगा। इसके अतिरिक्त आप निम्न विषयों अपनी रचनाएं भेज सकते हैं- **वीर स्तुति (पुच्छिंसु णं), कृषि प्रधान संस्कृति में ऋषि प्रधान सभ्यता, हुक्मसंघ यात्रा : 200 वर्ष : 200 शब्दों में, मानसिक प्रदूषण की भयावहता'**। रचनाओं की शब्द सीमा 500-1000 शब्द रहेगी। सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी **M.I.D.** (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि मो. **9314055390** एवं ईमेल : **news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाओं के लिए श्रमणोपासक टीम सदैव आतुर हैं।

-श्रमणोपासक टीम

संघ हेतु कुर्बान हमारा, तन मन जीवन सारा है।
संघ हमारा ईश्वर, हमको, संघ प्राण से प्यारा है।।15।।

महासती द्रौपदी

15-16 जुलाई 22 अंक से आगे...

बिहार राज्य में आज जो चम्पारण नामक नगरी है कालान्तर में चम्पा थी। वहां तीन विप्रों- सोम, सौम्यक्त, सौम्यमति का परिवार रहता था। वे तीनों सहोदर भाई थे। तीनों की भार्या का नाम क्रमश: नागश्री, भूतश्री और यक्षश्री था। तीनों ही सर्वांग सुंदरी एवं अनिंद्य थी। तीनों भाई अतुल धन-सम्पदा से परिपूर्ण एवं चारों वेदों एवं ज्योतिष ग्रन्थों में पारंगत थे। एक बार तीनों ने विचार किया इस प्रचुर धन-धान्य का सही उपयोग होना चाहिए। इसलिए बारी-बारी से विपुल खाद्य पदार्थ तैयार करने चाहिए। इस तरह विचार करके वे बारी-बारी स्वादिष्ट भोजन तैयार करते हुए जीवन यापन करने लगे तथा आतिथ्य लाभ उठाते।

एक दिन नागश्री के घर में भोजन की बारी आई। उसने विपुल अशन-पान आदि तैयार किया। शरद ऋतु में (अलाबू) तुम्बे की स्वादिष्ट सब्जी घी एवं मसाले आदि डालकर बनाई। उसे नागश्री ने चखा तो वह सब्जी एकदम कड़वी होने से उसे अखाद्य जान पड़ी। नागश्री ने बहुत पश्चात्ताप के पश्चात् उसे अलग रखकर अन्य मीठे तुम्बे का शाक तैयार किया। सभी ने साथ मिलकर भोजन किया व अपने-अपने कार्य में संलग्न हो गए।

उन दिनों धर्मघोष स्थविर अपने शिष्य परिकर सहित ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए चम्पानगरी में पधारे। धर्मरुचि अणगार गुरुदेव से अनुमति लेकर भिक्षार्थ नगर में भ्रमण करने लगे। वे नागश्री ब्राह्मणी के घर पधारे। नागश्री ने अपनी गलती को छिपाने के लिए कड़वे तुम्बे का शाक उनको बहरा दिया। उसे लेकर धर्मरुचि अणगार अपने गुरु के समीप पहुँचे। गुरु को आहार दिखाया तो गुरु ने उस शाक को देखकर कहा कि इस विषयुक्त आहार को प्रासुक स्थान पर परठ आओ। मुनि धर्मरुचि नगर के बाहर गए और प्रासुक स्थान की गवेषणा करने लगे, किन्तु उन्हें ऐसी जगह नहीं मिली। जरा-सी बूंद डालने पर चीटिंयों का झुण्ड उस पर छा गया और शीघ्र ही वे चींटियां काल का ग्रास बन गईं। ऐसा देखकर उन्होंने अपने उदर का निरापद स्थान समझकर उस शाक को ग्रहण करके संथारा-संलेखना ग्रहण कर कालधर्म को प्राप्त होकर सौधर्मदेव बने।

धर्मरुचि अणगार के कालधर्म को प्राप्त होने की खबर नगर में विद्युत की तरह फैल गई। सम्पूर्ण नगर में नागश्री की भर्त्सना होने लगी। उसे घर से निकाल दिया गया। नागश्री घर-घर भिक्षा द्वारा जीवन निर्वाह करती हुई अनेक व्याधियों से ग्रस्त हो गई और मरकर नारकी तिर्यंच योनी को प्राप्त करती हुई चम्पानगरी में समरदत्त सार्थवाह की भार्या भद्रा से पुत्री रूप में उत्पन्न हुई। इकलौती पुत्री होने से पांच धायों द्वारा उसका लालन-पालन हुआ। वह नागर बेल की लता की भांति बढ़ने लगी। यौवनवय में आने पर उसके लिए योग्य वर की तलाश की जाने लगी।

इसी नगर में जिनदत्त नामक सेठ रहता था। उसके पुत्र का नाम सागर था। वह भी यौवनवय को प्राप्त होने पर उसके लिए भी कन्या की तलाश हो रही थी।

एक दिन सुकुमालिका कंदुक क्रीड़ा से अपनी धायों के साथ खेल रही थी। उसे देखकर जिनदत्त ने अपने पुत्र के लिए उपयुक्त कन्या समझी। जिनदत्त ने अपने पुत्र के साथ पाणिग्रहण के लिए सागरदत्त सेठ से उसकी कन्या देने का आग्रह किया। सागरदत्त सेठ ने एक शर्त पर मंजूरी दे दी कि आपका लड़का मेरे यहां गृह जामाता के रूप में रहेगा। जिनदत्त सेठ ने सहर्ष स्वीकृति दे दी। पाणिग्रहण संस्कार के बाद मधु-यामिनी के आने पर अपने रायनगर में पहुँचकर उस सुकुमालिका के शारीरिक स्पर्श, जो असिपत्र की तरह कर्कश व उष्ण लोह की

भांति दाहमूलक थे; से छूने पर वह सागरदत्त वहां से पलायन कर अपने घर आ गया। पति वियोग से खिन्न होती हुई उदास व चिंतित रहने लगी।

सागर सेठ ने बेटी से कहा- अपने अशुभ कर्म का फल प्रत्येक प्राणी को मिलता है। इसे हंसते-हंसते सहना चाहिए। अपने यहां अशन-पान आदि विपुल मात्रा में हैं, तुझे प्रतिदिन दान द्वारा प्रतिलाभित होना चाहिए।

एक बार बहुश्रुत साध्वी गोपलिका भिक्षार्थ सागरदत्त सेठ के यहां पहुंची। भावातिरेक से अशनादिक बहरा करके सुकुमालिका पूछने लगी- आर्यावर्या! आप बहुत मंत्र विद्या जानती हैं, कोई ऐसा मंत्र बतलाएं, जिसे पति मुझे इष्ट अभीष्ट हो जाए। आर्यावर्या ने कहा- भद्रे! मंत्र-तंत्र बताना तो दूर उसको सुनना व परिचर्चा करना नहीं कल्पता अर्थात् मर्यादा से सर्वथा भिन्न है। साध्वीवर्या ने विरक्तिपरक भावों से उपदेश दिया, जिससे उसका मन संसार से विरक्त हो गया। अपने पितादि से अनुमति ग्रहण कर साध्वी रूप धारण कर दीक्षित हो तपश्चर्या से आत्मा को भावित कर रही थी।

एक दिन सुकुमालिका आर्यावर्या के चरणसरोजों में उपस्थित हो अभ्यर्थना करने लगी- हे आर्यावर्या! आपकी आज्ञा से सुभूमि उद्यान में बेले-बेले तप करूं व सूर्य की आतापना लूं? आर्यावर्या ने कहा- साध्वियों का ग्राम सन्निवेश में ही वस्त्र से आच्छादित हो तो आतापना कल्पता है, अन्यथा नहीं। किन्तु विपरीत मति की साध्वी ने आर्यावर्या की एक न सुनी। वह सुभूमि उद्यान में सूर्य की आतापना लेने लगी व ध्यानस्थ हो गई।

वहां उद्यान में एक दिन देवदत्ता नाम की वीरांगना पांच व्यक्तियों के साथ विभिन्न प्रकार की प्रणय क्रीड़ा व उन्मुक्त भाव-भंगिमा से आनंदित हो रही थी। उसके नुपुरों की ध्वनि ने साध्वी के मानस को आन्दोलित कर दिया। इस दृश्य से उसने निदान (प्रतिज्ञा) कर ली कि अगले भव में मुझे भी पांच पति द्वारा वरण किया जाए और मुझे भी ऐसी सुखानुभूति हो। तपश्चर्या व आतापना से भावित हो निदान करके देवलोक में देव गणिकार अपरिगृहीत देवी हुई।

भरत क्षेत्र के पांचाल देश में अतिरमणीय व सर्वथा प्रकार से समृद्ध काम्पिल्य नामक नगर था, जहां राजा द्रुपद राज्य करते थे। उनकी रानी चूलनी की कुक्षी से धृष्टधुम्न व द्रौपदी ने जन्म लिया। द्रौपदी की मेघवर्णी काया के कारण उसे कृष्णा भी कहा जाता था। यौवन की देहरी पर आरोहित होने पर यथानुरूप वर के लिए स्वयंवर की रचना कर यह शर्त रखी गई कि जो राजा/राजकुमार राधा वेध करने में सफल हो जाएगा उसके साथ द्रौपदी का पाणिग्रहण संस्कार कर दिया जाएगा।

हस्तिनापुर में पांडवों का राज्य था। निमंत्रण प्राप्त होने पर वे प्रत्याशी के रूप में स्वयंवर में उपस्थित हुए। जलकुण्ड के ऊपर एक चक्र में 108 पुतलियों में एक पुतली राधा की भी थी। चक्र को तेजी से घुमाया जाता और उसकी प्रतिच्छाया को जल में देखकर राधा के नेत्र में शर संधान करना था। अर्जुन धनुर्विद्या में निष्णात था। उसने राधा वेध का संधान कर लिया। निदान से युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव पांचों के कण्ठों में माला का वरण हो गया। उन्हें आठ करोड़ स्वर्ण मुद्राएं प्रीतिदान में दी गई व भावभीना आतिथ्य सत्कार करके विदा किया गया।

द्रौपदी पांचों के साथ बारी-बारी से रहती हुई सुखानुभूति में निमग्न हो गई। द्रौपदी श्रद्धाभिभूत होती हुई पांचों पतियों की समान रूप से सेवा करने लगी। पतियों को परमेश्वर मानकर कभी सेवा से भिन्न नहीं हुई। उसने अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं बनाया। वह शीलवती नारी अपनी अभिलाषाओं से पृथक् हो गई। उसका पतियों के प्रति सर्वात्म भाव से समर्पण था।

श्रीकृष्ण की रानी सत्यभामा ने द्रौपदी से प्रश्न किया कि तुमने अपने पतियों पर ऐसा कौन-सा जादू डाला कि सब तुम्हारे नियंत्रण में हैं। द्रौपदी ने सशक्त प्रत्युत्तर दिया कि मैं उनकी प्रसन्नता में अपनी खुशी का अहसास करती हूं, यही वशीकरण मंत्र है। मानस में कभी पर-पुरुष के प्रति कोई कल्पना उभरती नहीं है। पतियों

की सेवा से ही मैं संतुष्ट हो रही हूं। वस्तुत: पांच पतियों के मध्य द्रौपदी आदर्श नारियों में एक थी।

हस्तिनापुर में शासन युधिष्ठिर के हाथ में था। अन्य पाण्डव बंध यथाशक्य योगदान प्रदान कर रहे थे। अर्जुन-सुभद्रा से अभिमन्यु का जन्म हुआ। उसका जन्मोत्सव अत्यन्त उल्लास व आनंदित भाव से मनाया गया। अन्य सभी राजाओं के साथ कौरवों को भी आमंत्रित किया गया। स्थान को भव्य कलात्मक रूप से सजाया गया। **सजावट इतनी विशेष थी कि जहां जल था वहां थल, जहां थल था वहां जल दृष्टिगत होता था। कौरवों में उनके इस वैभव को देखकर अत्यंत जलन पैदा हो गई। दुर्योधन ने जहां थल था वहां जल की अनुभूति कर कपड़े ऊंचे कर लिए और जहां जल था वहां थल समझते हुए पानी में गिर गया। वहां खड़े लोग उपहास करने लगे। दुर्योधन लज्जित हुआ। उसी समय द्रौपदी ने अत्यन्त कटु और तीक्ष्ण व्यंग करते हुए दुर्योधन को अंधे का पुत्र अंधा कहा। इस बात ने धधकती आग में घृत का काम किया। वैर से वैर बढ़ता है। तलवार का घाव तो औषधि/मल्हम से भर जाता है, परन्तु वचन बाणों का घाव भरना अत्यंत कठिन है।**

दुर्योधन इस कटु उक्ति से तिलमिला गया। अपने नेत्रहीन पिता के लिए कहे गए शब्दों के लिए उसके मन में प्रतिशोध का नाग फुंफकारने लगा। उसने बल का आश्रय न लेते हुए छल की नीति अपनाई।

युधिष्ठिर को द्युत क्रीड़ा का भयंकर शौक था। दुर्योधन बहाना बनाकर द्युत क्रीड़ा के शातिर खिलाड़ी अपने मामा शकुनि को बुलवा लिया। खेल प्रारंभ हुआ। धूर्त शकुनि मामा के दांव के आगे किसका जोर जो खेल सके। शकुनि की धूर्तभरी बाजी से दुर्योधन जीतता गया। अन्त में युधिष्ठिर ने द्रौपदी को भी दांव पर लगा दिया और वो दांव हार गए।

दु:शासन रनिवास से द्रौपदी को उसकी केशराशि पकड़कर घसीट लाया और सभा में खड़ी कर दी। उस

स्थान पर भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, विदुर, भीम जैसे योद्धा बैठे हुए थे। दुर्योधन ने द्रौपदी से कहा कि अब तुम हमारी दासी हो। दुर्योधन ने दु:शासन से कहा कि इसे दासी के वस्त्रों से सज्जित करो।

द्रौपदी वहां बैठे गुरुजनों से दुहाई कर रही थी, लेकिन कहीं से आवाज नहीं आई। दु:शासन उसके वस्त्र अलग करने के लिए तत्पर हुआ परंतु महामंत्र के जाप से साड़ी बढ़ती जा रही थी। दु:शासन हार गया। द्रौपदी के कहने से युधिष्ठिर को दासत्व से मुक्त कर दिया गया। दासता से मुक्त होने पर दुर्योधन ने नया खेल खेलने के लिए युधिष्ठिर को द्युत क्रीड़ा के लिए उत्प्रेरित किया। उसने यह शर्त रखी कि जो इसमें हारेगा उसे बारह वर्ष तक वनवास व तेरहवें वर्ष में कहीं अज्ञातवास में रहना होगा। पाण्डवों का दुर्भाग्य की जीत की आशा से द्युत क्रीड़ा खेलने लगे, पर परिणाम वही हार। बारह वर्ष तक वनवास एवं एक वर्ष अज्ञातवास में बिताने पड़े। बारह वर्ष व्यतीत हो जाने पर तेरहवें वर्ष में विराट नगर में विराट राजा के यहां अज्ञात रूप से रहे। युधिष्ठिर पुरोहित बने और नाम रखा कंक, भीम राजा की पाकशाला में रसोइया, नकुल व सहदेव गोदालक व अश्वपालक, अर्जुन स्त्री के वेश में बृहन्नला बने और वे रनिवास में नृत्य-गान कराते। द्रौपदी सैरूधी दासी के रूप में रहने लगी। उस समय द्रौपदी का जीवन दांव पर था। राजा का शाला कीचक जो कामुक प्रवृत्ति का था, द्रौपदी को बुरी नजर से देखने लगा। इसके लिए वहां की रानी भी कीचक

को सहयोग दे रही थी। कीचक द्रौपदी को पाने के लिए बेचैन हो उठा। अपनी अभिलाषा के लिए वह कुत्सित हरकतें करने लगा।

पाण्डव अपनी परिचयात्मकता को छिपाने से अपने पराक्रम के प्रति विवश थे।

द्रौपदी ने भीम से सारा वृत्तांत कह सुनाया। एक नूतन योजना का निर्माण किया। कीचक अत्यंत उद्दीपन अवस्था में द्रौपदी के पास गया। द्रौपदी ने कीचक का स्वागत किया और कहा कि उद्यान में उसकी प्रतिक्षा करूंगी। संध्या होने पर वह उद्यान में आया। वहां एक वृक्ष की ओट में अवगुष्ठनमयी अवस्था में सुन्दरी को प्रतिक्षारत देख प्रेमालाप करते हुए उसने अवगुष्ठन (घुंघट) हटाया तो स्त्री की जगह शक्तिशाली पुरुष था। भीम ही स्त्री का रूप धारण कर उद्यान में आया था। एकांत में उसका वध कर दिया। ऐसे द्रौपदी को संकटमुक्त किया। द्रौपदी करुणाशीलता व दया की जीवन्त प्रतिमा थी। अज्ञातवास व्यतीत होने पर श्रीकृष्ण की मध्यस्थता में पाच गांव दुर्योधन से मांगे, पर **'स्वभाव: दुरति क्रम:'** की उक्ति के अनुरूप दुर्योधन ने पांच गांव तो दूर, सुई जितनी जगह देने के लिए भी इनकार कर दिया।

एक अवसर ऐसा आया कि दुर्योधन की दुष्टता क्रूरता चरम अवस्था में पहुंच गई। द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वथामा ने पाण्डवों के शिविर में रात्रि के सन्नाटे में द्रौपदी के निद्रामग्न पुत्रों की हत्या कर दी। इस नृशंस हत्याकांड की जितनी भर्त्सना की जाए उतनी कम है।

द्रौपदी अपने पुत्रों की इस प्रकार हत्या का दृश्य देखकर कांप उठी। उसके विलाप से सारा वातावरण शोकाकुल हो गया। इस नृशंस हत्या से पाण्डवों में तीव्र प्रतिशोध जागृत हो गया। वे अश्वथामा को पकड़कर लाए और द्रौपदी से कहने लगे कि इसका तलवार से वध कर दो। अश्वथामा द्रौपदी के चरणों में पड़कर अपने प्राणों की भीख मांगने लगा। वह गिड़गिडाने लगा, लेकिन प्रतिशोध में भभकती हुई ज्वाला से द्रौपदी कामानस पुत्र वियोग की वेदना से उद्वेलित था। विचारों में एक नई स्फुरणा जागृत हुई कि जैसे मैं पुत्र वियोग में उद्वेलित हूं वैसे ही इसकी माता भी दु:ख निमग्न पीड़ित होगी। द्रौपदी के हृदय में करुणा का स्रोत प्रवाहित हो गया। तलवार एक तरफ फेंक अश्वथामा को क्षमा कर दिया।

पाण्डवों ने श्रीकृष्ण के मार्गदर्शन से कौरवों से रण जीत लिया। वे प्रसन्नतापूर्वक राज्य का संचालन कर रहे थे। एक बार महर्षि नारद भ्रमण करते हुए हस्तिनापुर पधारे। उनका सर्वत्र सत्कार हुआ, पर द्रौपदी के प्रासाद पर उनका कोई सम्मान आदि नहीं होने से महर्षि नारद कुपित हो गए। उस समय द्रौपदी आत्ममुग्ध होती हुई दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब निहार रही थी। असाधारण विमुग्धता के कारण उसका ध्यान उस ओर नहीं गया।

तदनन्तर धातकी खण्ड के राज्य में पहुंच गए। वहां राजा पद्मोत्तर शासन कर रहे थे। नारद ऋषि ने द्रौपदी के लोकोत्तर लावण्यमय प्रशंसात्मक रूप में बखान की। पूर्व में जब स्वयंवर हुआ था तब से पद्मोत्तर पतंगे की तरह मुग्ध था। वह उसे हासिल करने के लिए अपने एक देव की आराधना करने लगा। देव द्वारा उसका अपहरण कर लिया गया एवं पद्मोत्तर उससे प्रणययाचना करने लगा।

द्रौपदी शील की देवी थी। उसके समक्ष कई प्रसंग उपस्थित हुए किन्तु सब में समुत्तीर्ण रही। वह कामुक पद्मोत्तर अनुनय-विनय कर रहा था। धमकी देकर डराने लगा तब द्रौपदी ने अपना रास्ता खोजने के लिए पद्मोत्तर से कहा कि छह माह तुम्हें मेरे लिए प्रतिक्षा करनी होगी। इस अवस्था में मैं गोपनीय रूप से साध्य सिद्ध करूंगी। मेरे तन का भी कोई स्पर्श न करे। पद्मोत्तर उक्त प्रतिज्ञा से सहमत हो गया।

पाण्डव द्रौपदी को खोजने दौड़े किन्तु कहीं भी उसका पता नहीं लगा। कुन्ती ने श्रीकृष्ण से निवेदन किया। पाण्डव व श्रीकृष्ण विचार मंथन कर रहे थे कि नारद ऋषि का शुभागमन हो गया। वे द्रौपदी का धातकी

खण्ड में पद्मोत्तर राजा का यहां होना बताकर अन्तर्ध्यान हो गए।

श्रीकृष्ण की सहभागिता बिना पद्मोत्तर राजा तक पहुंचना असंभव था। कृपानिधान के साथ चलने की अनुमति से उत्साह द्विगुणित हो गया। गंगा नदी के पाट विशाल व विस्तृत थे। बिना नौका के पार पाना दुर्लभ था। गंगा नदी पार करके विकट युद्ध किया। पद्मोत्तर परास्त होकर प्राणों की भीख मांगने लगा और द्रौपदी के पास आकर अपने अपराध की क्षमा मांगी। क्षमासागर द्रौपदी ने क्षमा कर दिया। सभी द्रौपदी को लेकर गंगा किनारे आए। श्रीकृष्ण ने नौका से उन्हें पार करवाकर नौका वापिस मंगवाई। किन्तु नौका न आने पर अपनी भुजाओं से ही गंगा को पार कर पूर्ववत् तट पर आ गए। इससे नाराज होकर श्रीकृष्ण ने पाण्डवों को अपने राज्य से निष्कासित कर दिया। पाण्डवों ने भ्राता से निवेदन किया वे अब कहां किस रूप में रहेंगे। कुन्ती ने श्रीकृष्ण से अनुनय-विनय कर उक्त आदेश वापिस लेने को कहा। अपूर्व अनुग्रह प्रवाहक वासुदेव ने अपना आदेश वापिस ले लिया।

उन्होंने समुद्र तट पर नई द्वारिका का निर्माण कराया। इधर मथुरा का राज्य पाण्डवों के अधिकार में आया। सुखानुभव से जीवन यापन करते हुए वह पाण्डुसेन मां बनी। उसे राज्य से महिमामण्डित कर अनेक विकट संकटों को पार किया। पाण्डवों ने उसका अनुसरण किया। अन्त में दीक्षित हो त्याग, जप-तप, अनुप्राणित होती हुई वर्षों तक संयम का निरतिचार पालन कर पांचवें देवलोक में उत्पन्न हुई। वहां से महाविदेह क्षेत्र में दीक्षित हो अजर-अमर पद को प्राप्त करेगी।

-क्रमशः

संस्कार सौरभ

संस्कार

-पायल वया, बंबोरा

एक बार की बात है। राजा विक्रमादित्य के पास एक सुंदर घोड़ी थी। कई बार युद्ध में इस घोड़ी ने राजा के प्राण बचाए और वह घोड़ी राजा के लिए पूर्णत: वफादार थी। इस घोड़ी ने एक बच्चे को जन्म दिया किन्तु वह बच्चा काना पैदा हुआ अर्थात् उसके एक आंख जन्मजात खराब थी, लेकिन वह दिखने में हष्ट-पुष्ट व सुडोल था।

बच्चा बड़ा हुआ तो एक दिन बच्चे ने मां से प्रश्न किया- 'मां मैं बहुत बलवान हूं, लेकिन मेरी एक आंख जन्म से ही खराब है। यह कैसे हो गया?'

अपने पुत्र के प्रश्न के प्रत्युत्तर में घोड़ी बोली- 'बेटा! जब मैं गर्भवती थी तब एक दिन राजा विक्रमादित्य ने मेरे ऊपर सवारी करते हुए मुझे एक कोड़ा मार दिया था, जिसके कारण तेरी एक आंख ज्योतिविहीन हो गई।'

सारी बात जानकर बच्चे को राजा पर गुस्सा आया और मां से बोला- 'मां! अब मैं इसका बदला राजा से लूंगा।'

मां ने कहा- 'राजा ने हमारा पालन-पोषण किया है। तू जो स्वस्थ है, सुंदर है, उन्हीं के पोषण से तो है। यदि राजा को एक बार किसी बात पर गुस्सा आ गया तो इसका अर्थ यह नहीं है कि हम उन्हें क्षति पहुंचाएं।'

घोड़ी की यह समझदारी भरी बात उसके बच्चे की समझ में नहीं आई। उसने मन ही मन में राजा से बदला लेने की ठान ली। एक दिन ऐसा भी आ गया जब घोड़े को राजा के साथ युद्ध में जाने का अवसर मिल गया। युद्ध लड़ते-लड़ते राजा घायल हो गया। घोड़ा उसे तुरंत उठाकर वापिस महल ले आया। महल पहुंचकर घोड़े को स्वयं आश्चर्य हुआ कि वह राजा को घायलावस्था में वापिस क्यों ले आया, जबकि उसने तो बदला लेने का प्रण कर रखा था। उसने अपनी दुविधा मां से कही- 'मां! आज राजा से बदला लेने का अच्छा अवसर था, मगर मुझे युद्ध के मैदान में बदला लेने का ख्याल ही नहीं आया और न ही मैं ले पाया। मन ने स्वीकार ही नहीं किया।'

अपने बेटे की इस बात पर घोड़ी हंसकर बोली- 'बेटा! तेरे खून में और तेरे संस्कार में धोखा है ही नहीं। अच्छे संस्कार कोई भी गलत कार्य करने की स्वीकृति नहीं देता। घोड़े की आशंका का समाधान हो गया।

कहा भी है- पूरी दुनिया जीत सकते हैं संस्कार से, और जीता हुआ भी हार सकते हैं, अहंकार से।

चमड़ी कागज खून की स्याही, अस्थि लेखनी लेकर के।
रचें भले संघ गौरवगाथा, उऋण न हो उपकारों से।।16।।

संघ

–सजग, नीमच

संघ अर्थात् समूह अथवा संगठन। संघ शब्द से आशय है अनेक व्यक्तियों का समान उद्देश्य की पूर्ति के लिए साथ होना, जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति के साथ-साथ संघ का भी विकास हो।

हम सभी ''श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ'' के सदस्य हैं। इस लेख में हम अपने संघ बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करेंगे कि संघ क्या है, यह कैसे तथा क्या कार्य करता है तथा यह क्यों आवश्यक है।

क्या है संघ (what)

1) जैन धर्म के साधुमार्गी श्वेतांबर संप्रदाय की प्रतिनिधि संस्था है 'श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ'।
2) सन् 1962 में स्थापित इस संघ का उद्देश्य है सम्यग्ज्ञान, दर्शन और चारित्र के रास्ते राष्ट्र का उत्थान।
3) भगवान महावीर की अनुपम विरासत के अनुरूप अध्यात्म, शुद्ध संयम व सशक्त अनुशासन की पुनर्स्थापना के काम में लगे इस संघ के आध्यात्मिक मूल स्रोत भगवान महावीर की पाट-परम्परा पर विराजमान आचार्य हैं।
4) वर्तमान में इस पाट पर आचार्य श्री रामेश विराजमान हैं।

कैसे तथा क्या कार्य करता है संघ (how)

1) श्री अ.भा.सा. जैन संघ द्वारा महिला व युवा संघ के माध्यम से 30 से अधिक प्रवृत्तियों और आयामों पर देशभर में लोककल्याणकारी कार्य किए जा रहे हैं।
2) यह संघ देशभर में 350 से अधिक शाखाओं के माध्यम से धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों में भागीदारी निभा रहा है।
3) बिना रुके, बिना थके समाज एवं राष्ट्र के उत्थान में लगे इस संघ की शाखाएं अमेरिका, इंग्लैंड, नेपाल और भूटान सहित कई और देशों में भी हैं।
4) 'महिला समिति' तथा 'समता युवा संघ' के रूप में अपनी दो भुजाओं की शक्ति के साथ संघ 35 से अधिक प्रकल्प संचालित कर रहा है।
5) इनमें आध्यात्मिक, शैक्षणिक, जीवदया जैसे लोकोपकारी प्रकल्प लोगों का लगातार हित कर रहे हैं।
6) सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में भी संघ लगातार प्रयासरत है।
7) संघ द्वारा विभिन्न धार्मिक, आध्यात्मिक व सामाजिक कार्य किए जाते हैं, जिनमें शामिल है- इदं न मम, जीवदया, विहार सेवा, उच्च शिक्षा योजना, साहित्य व आगम साहित्य, सर्वधर्मी सहयोग, गुणशील, साधुमार्गी प्रोफेशनल फॉर्म आदि प्रवृतियों व आयामों के माध्यम से संघ द्वारा जनसेवा का कार्य वृहद् स्तर पर किया जा रहा है।
8) संघ द्वारा जैन धर्म, दर्शन, आगम, कथा एवं प्रवचन से संबंधित साहित्य का प्रकाशन भी किया जाता है। अब तक 450 से अधिक साहित्यों का प्रकाशन किया जा चुका है।

संघ की आवश्यकता क्यों है (why)

संघ का महत्त्व स्पष्ट करने के लिए एक दृष्टांत पर्याप्त है।

एक बार एक गुरुकुल में गुरु अपने शिष्यों को संघ या संगठन का महत्त्व बता रहे थे। इसको व्यावहारिक रूप में समझाने के लिए उन्होंने एक शिष्य को बुलाकर पास में पड़ी एक लकड़ी को उठाकर तोड़ने के लिए कहा। शिष्य में गुरु के कथन अनुसार एक झटके में लकड़ी को तोड़ दिया।

इसके बाद गुरु ने शिष्य को लकड़ियों का ढेर लाने के लिए कहा। शिष्य लकड़ियों का ढेर लेकर आ गया।

गुरु ने शिष्य को लकड़ियों के समूह को तोड़ने के लिए कहा, शिष्य ने लकड़ियों के समूह को तोड़ने का प्रयास किया, लेकिन वह असफल हो गया। उसने दोबारा प्रयास किया, तो भी वह लकड़ियों के समूह को नहीं तोड़ पाया।

इस प्रयोग के बाद गुरु ने अपने शिष्यों को समझाया कि जिस प्रकार एक लकड़ी को तोड़ देना अत्यंत सरल है, किन्तु लकड़ियों के समूह को तोड़ पाना अत्यंत कठिन कार्य है ठीक उसी प्रकार जब एक व्यक्ति कोई कार्य करता है तो उसकी शक्ति सीमित होती है, लेकिन वही व्यक्ति जब संघ के साथ जुड़ जाता है तो उसकी शक्ति में कई गुना वृद्धि हो जाती है।

इसी दृष्टांत के अनुसार जब हम अकेले होते हैं तो हमारी शक्ति सीमित होती है, जबकि संघ के साथ जुड़कर हम सभी सदस्यों की शक्ति में कई गुना की वृद्धि हो जाती है।

नोट– लेख में प्रस्तुत तथ्य तथा सामग्री साधुमार्गी संघ की अधिकृत वेबसाइट sadhumargi.com से लिए गए हैं।

भक्ति रस

मन चंचल मतवाला है

–संध्या धाड़ीवाल, रायपुर

नौ दरवाजों का घर मिला है मुझको,
किसी दरवाजे पर ना ताला है।
कैसे बैठाऊं अपने मन को घर में,
मन तो चंचल मतवाला है।।

बहुत–सी खिड़कियां घर के भीतर,
बाहर बिखरा दाना है।
कैसे रोकूं मन को घर में,
मन पंछी उड़ने वाला है।।

बंद करती हूं कानों के दरवाजे तो,
भीतर शोर डरावना है।
दरवाजा आंखों का बंद करूं तो,
घनघोर अंधेरा भयावह है।।

नासिका पर लगाऊं ताला तो,
सारे दरवाजे खड़खड़ करें।
मुख में बैठे बत्तीस चोर,
लाली बाई (जिह्वा) उन पर राज करे।।

संध्या बैठी सोच रही गुरुवर!
सब दरवाजे कैसे बंद करें?
कैसे बचाएं अनमोल खजाना अपना?
कैसे मानव जीवन को साकार करें?

अंतर्चेतना ने झकझोरा मुझको,
भीतर से कुछ आवाज आई।
महत्तम महोत्सव का आगाज हुआ है,
उत्साह संघ में है भारी।।

आचार्य श्री रामेश का,
'सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव' आ रहा।
देने अपने आराध्यदेव को स्वर्णिम भेंट,
बांट रहा है संघ नौ नियमों के,
नौ छोटे–छोटे पर मजबूत ताले।।

नौ ही दरवाजों पर लगा लो इनको,
और सौंप दो चाबी गुरुवर के हाथों।
फिर देखना मन मौन हो जाएगा,
सद्ज्ञान का प्रकाश झरेगा भीतर!

डर छूमंतर हो जाएगा,
सुवासित हो उठेगा अंतर्मन तुम्हारा।
बत्तीस पहरेदार जाग जाएंगे,
इन दो वर्षों में देखना तुम।।

मन अचरज से भर जाएगा,
नौ आचार्यों के आशीर्वाद से।
घर दिव्य प्रकाश से भर जाएगा,
हर घर महत्तम महोत्सव जब मनाएगा।।

अरिहंत सिद्ध सुदेव हमारे, गुरु निर्ग्रन्थ मुनिश्वर हैं।
जिन भाषित सद्धर्म दयामय, नित्य यही अन्तर स्वर है।।17।।

अहंकारी नहीं.. 'संस्कारी' बनें

–गौतम पारख, राजनांदगांव

एक आलेख 'अहंकार का अंधियारा' के शीर्षक पर मेरा ध्यान गया तो मैं सोचने लगा कि अहंकार न तो अंधियारे का आभास होने देता है, न ही स्वीकारने देता है। अहंकार तो 'मैं' को ही पुष्ट करता है। पुण्यवानी से प्राप्त शक्ति, सामर्थ्य और उपलब्धि पर इतराने, इठलाने और अकड़ने का दूसरा नाम ही तो अहंकार है। सम्यक् चिन्तन, सम्यक् पराक्रम व अनासक्त भावों से प्राप्त सफलता कभी अकड़ती नहीं, इतराती नहीं, इठलाती नहीं। अहंकारी व्यक्ति को पुण्यवानी के योग से सफलता तो मिल जाती है, परन्तु सत्य पर कोहरा छा जाता है। फिर भी उसे लगता है कि मैं ही शक्तिमान हूं। मेरा निर्णय उचित और लाभदायी रहा। भीड़ मेरे पीछे खड़ी है। प्रशंसक मेरी परिक्रमा कर रहे हैं। सत्य यह है कि जिन्हें वह प्रशंसक समझ रहा है वे तो केवल और केवल उगते सूरज को नमन करने वाले लोग हैं। वास्तव में जी हुजूरी करने वालों की फौज प्रशंसकों का नहीं चापलूसों का कुनबा है। उसका अहंकार पुष्ट होने लगता है। 'मैं', मैं', 'मेरा, मेरा' फुंकार लगाने लगता है। भाग्योदय से प्राप्त पुण्यवानी से मानो वह पापों की गठरी बांध रहा हो। परन्तु विडम्बना यह है कि उसका अहंकार उसे यह एहसास होने नहीं देता बल्कि उसके अभिमान का पोषण करने लगता है। कभी-कभी स्वीकारभाव आत्मा के किसी कोने से अहंकारी को समझाने लगता है। अंदर से आवाज आती है- 'रुक जा, तेरा अहंकार तुझे ही ले डूबेगा।' कदाचित् अन्तर्आत्मा की आवाज उसे सुनाई भी देती है तो सुनकर भी उसे अनसुना कर देता है। संस्कृत में मैं को अहम् कहते हैं। मानो अहंकारी व्यक्ति अहम् की कार में बैठकर यात्रा कर रहा हो। सोचता है कि मैं कितनी लक्जरीयस, ऊंची, सुविधायुक्त कार में सफर कर रहा हूं, लेकिन भूल जाता है कि यदि ब्रेक मारने की कला नहीं सीख पाएगा तो कार को दुर्घटनाग्रस्त होने में समय भी नहीं लगेगा। कहते हैं कि अहंकार के अंधे व्यक्ति को न तो अपनी गलतियां दिखती हैं और न ही दूसरों की अच्छी बातें। जिन्दगी में कभी भी अपने हुनर, सफलता, सम्पन्नता पर घमंड मत करना, क्योंकि पत्थर जब पानी में गिरता है तो अपने ही वजन से डूब जाता है।

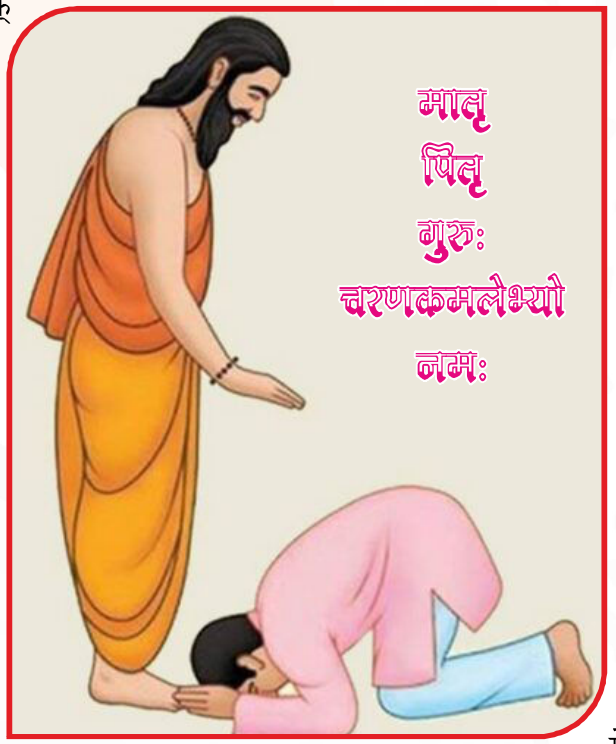

सत्संग सभा में सुना हुआ एक प्रसंग मेरे स्मृतिपटल पर उभरकर आ गया। स्वामी रामकृष्ण परमहंस के दो शिष्य कई विद्याओं में निपुण थे। दोनों को शास्त्रों का भी विशद ज्ञान था। दोनों को अपनी-अपनी विद्वत्ता पर कुछ

अधिक नाज था। कभी-कभी दोनों का अहंकार फुफकारने लगता था। संयोगवश, दोनों किसी बात पर आपस में भिड़ गए। एक-दूसरे से कहने लगे कि मैं तुमसे ज्यादा जानता हूं, मेरी विद्वत्ता को कोई चुनौती नहीं दे सकता। अन्त में, दोनों का अहंकार टकराने लगा। किसी वृद्ध संत ने उन्हें गुरुदेव स्वामी रामकृष्ण परमहंस के पास जाकर समाधान करवाने का प्रस्ताव रखा। दोनों गुरुदेव के पास उपस्थित हुए। अपनी-अपनी विद्याओं, कलाओं व शास्त्रीय ज्ञान का विवरण देने लगे। स्वामी रामकृष्ण परमहंस भी असमंजस में पड़ गए कि दोनों ही मेरे होनहार शिष्य हैं। वे मन ही मन सोचने लगे कि इन्हें अहंकार के सर्प ने डस लिया है। अन्त में उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि जो दूसरों को ज्ञानी समझता है, जो दूसरों का सम्मान करता है, जो दूसरो से सीखने-जानने का जुनून रखता है, वही विद्वान कहलाता है। दोनों शिष्यो की आंखे खुल गईं। अहंकार का नशा मानो उतर गया। गुरुदेव के समक्ष ही दोनों एक-दूसरे को सम्मान देने लगे। एक-दूसरे की विद्वत्ता को मानो प्रणाम करने लगे। मैं सोचने लगा कि विनय ही सभी धर्मों का प्राण है। झुकना, नमना ही तो हमारी संस्कृति की पहचान है। कदाचित् विनय, चापलूसी का स्थान लेने लगे, तो समझना चाहिए कि चापलूसी करने वाला एक दिन खुद भी डूबेगा और हमें भी डुबाएगा। अहंकार और संस्कार में फर्क यह है कि अहंकार दूसरों को झुकाकर खुश होता है, संस्कार स्वयं झुक जाता है।

स्वाध्याय के क्षणों में पढ़ा हुआ एक प्रसंग स्मृतिपटल पर सहज ही उभरकर आ गया। ''एक गांव में एक मूर्तिकार रहता था। उसकी बनाई मूर्तियों को देखकर हर किसी को मूर्तियों के जीवन्त होने का भ्रम हो जाता था। आसपास के सभी गांवों में उसकी प्रसिद्धि थी। उससे मूर्तियों को खरीदने वालो को अग्रिम बुकिंग करानी पड़ती थी। उसे अपनी कलाकारी और सफलता पर अहंकार हो गया था। समय बीतता गया। मूर्तिकार वृद्ध हो गया। उसे अहसास होने लगा कि मृत्यु उसके निकट खड़ी है। उसने अपने ही समान दस मूर्तियां बनाई। मूर्तियों को देखने से लगता था कि मानो मूर्तिकार साक्षात् खड़ा है। उन्हीं दस मूर्तियों के बीच वह भी उसी मुद्रा में जाकर खड़ा हो गया। मृत्यु का समय आया। कथानक के अनुसार यमराज स्वयं उसे लेने आए। वे भी मूर्तियों की एकरूपता व साक्षात् जीवन्तता को देखकर आश्चर्यचकित रह गए। इनमें मूर्तिकार वास्तव में कौन है पहचानना उनके लिए कठिन हो गया। मृत्यु का समय टाला नहीं जा सकता। यमराज ने एक युक्ति लगाई। वे जानते थे कि मानव के स्वभाव में सबसे बड़ा दुर्गुण है अहंकार! यमराज ने कहा- मूर्तिकार ने अद्भुत, अविश्वसनीय, साक्षात् मूर्तियां बनाई हैं, परन्तु उसने इनमें एक कमी रख दी। काश मूर्तिकार मेरे सामने होता तो मैं बतलाता कि कहां चूक हो गई, कमी रह गई। यह सुनते ही मूर्तिकार का अहंकार जाग उठा। सोचने लगा चूक, वो भी मुझसे हो गई? ऐसा हो ही नहीं सकता और तत्काल बोल उठा- गलती कहां रह गई? यमराज ने भी तत्काल उसे उठा लिया और कहने लगे कि मूर्तियां बोल नहीं सकती। तुम्हारे अहंकार ने तुम्हें बोलने हेतु विवश कर दिया।''

मैं सोचने लगा कि आत्मविश्वास सदैव घातक रहता है। किसी भी क्षेत्र में अपने आपको पूर्ण समझ लेना, मेरे जैसा कोई नहीं हो सकता, ऐसा सोचना ही जीवन की सबसे बड़ी भूल है। कहावत भी है कि **''अहंकार में तीन गए, धन, वैभव और वंश, न मानो तो देख लो रावण, कौरव और कंस''।**

प्रभु से हम प्रार्थना करें कि हे प्रभु! खुद पर किया गया गर्व, अहंकार होता है और दूसरों पर किया गया गर्व, सम्मान होता है। अत: हमें दूसरो से सीखने, दूसरों को सम्मान देने, दूसरों से प्रेरणा लेने का महामंत्र सीखा देना। अहंकार आते ही अंधकार छाने लगता है। हे प्रभु! हमें अहंकार के अंधियारे से निकालकर आत्मचिंतन के उजाले में जाने का सामर्थ्य देना।

किड्स कॉर्नर

सद्गुरु आज्ञा ही प्रभु आज्ञा, इसमें भेद न कोई है।
शास्त्र-शास्त्र में जगह-जगह पर, वीर वचन भी वो ही है।।18।।

बालमन में उपजे ज्ञान

-मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

(पिछले धार्मिक अंक में आप सभी ने पढ़ा कि कैसे सौरभ और उसकी माताजी के साथ सभी बच्चों ने सामायिक की एवं उसकी विभिन्न क्रियाओं के अर्थ को समझा तथा सभी ने बड़े ही भावपूर्वक प्रतिक्रमण किया। आज हम पढ़ेंगे कि सभी बच्चे सौरभ व उसकी माताजी के साथ स्थानक में जाकर क्या करते हैं।)

सभी बच्चे प्रात: 9 बजे तैयार होकर व सौरभ की माताजी के अनुसार बताए सभी उपकरण लेकर स्थान पहुंच गए।

सौरभ की माताजी- सभी बच्चे अपनी चप्पल उतारकर मुंहपत्ती पहन लो।

(अन्दर प्रवेश कर दर्शन करते हैं।)

सौरभ- पंकज, नीलिमा, नितिन, जैसे मैं वंदना करूं वैसे ही तुम लोग भी करना।

पंकज- ये वंदना क्या होता है?

सौरभ- अभी तुम चलो मैं सब तुम्हें समझाता हूं।

(चारों बच्चे व माताजी वंदना कर म.सा. से ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप की सुख-साता की पृच्छा करते हैं। म.सा. मांगलिक फरमाते हैं और सभी नीचे आ जाते हैं।)

पंकज- अब बताओ कि ये वंदना क्या होता है?

नीलिमा- इन म.सा. का सामान कहां है? इन्होंने पंखा क्यों नहीं चलाया? इनके पैरों में चप्पल क्यों नहीं है?

नितिन- और आंटी आपने ज्ञान..., तप... ये क्या बोला?

सौरभ- अरे, अरे! शांत हो जाओ, तुम्हारे सभी प्रश्नों के उत्तर मां के पास है।

सौरभ की माताजी- देखो बच्चो! जितने भी साधु-साध्वी हैं वे अपनी सुविधा की हर चीज, घर-परिवार का त्याग कर अपनी आत्मा के कल्याण के लिए साधु बनते हैं और लोगों को धर्म की प्रेरणा देते हैं। इनके त्याग, गुणों व ज्ञान के कारण इन्हें तीन बार तिक्खुत्तो के पाठ से वंदना की जाती है।

नीलिमा- अपनी आंखें बड़ी करके तो क्या ये खाना भी नहीं खाते हैं?

सौरभ की माताजी- (हंसते हुए) खाना तो शरीर की आवश्यकता है। म.सा. घर-घर जाकर ऐसा आहार लाते हैं, जो इनके कारण (निमित्त) से कम-ज्यादा, जल्दी-देरी से नहीं बना हो। आपश्री जितने भी घरों में जाते हैं वहां से थोड़ा-थोड़ा आहार लेते हैं। छ: काय के जीवों (जो आपने पहले सुना) की रक्षा के लिए लाईट, पंखे, माईक, चप्पल आदि सभी का त्याग रखते हैं।

पंकज- और मेरा प्रश्न?

सौरभ की माताजी- सुनो जैसे कोई व्यक्ति ऑफिस जाता है तो हम पूछते हैं ना कि आपका काम कैसा चल रहा है, बच्चा स्कूल जाता है तो उसे पूछा जाता है कि आपकी पढ़ाई कैसी चल रही है, वैसे ही साधु-साध्वीजी ज्ञान सीखने में, तप-त्याग में, चारित्र पालन में निरंतर लगे रहते हैं। इसलिए उन्हें ऐसा पूछा जाता है।

नितिन- आश्चर्यचकित होकर साधु बनना कितना मुश्किल है? कैसे कोई व्यक्ति बिना सुविधा की वस्तुओं के रह सकता है? कभी भी अपनी पसंद का खाना ना खाए, कहीं भी घूमे-फिरे नहीं।

सौरभ की माताजी- बिल्कुल सही। इसलिए तो साधु-साध्वीजी को वीर कहा जाता है। इन्होंने अपने मन को पूर्ण कंट्रोल कर लिया है तथा ज्ञान-ध्यान में इतने आनंदपूर्वक रहते हैं कि इन्हें किसी वस्तु (सुविधा) की आवश्यकता महसूस नहीं होती।

नीलिमा- एक दिन भी हमारे पसंद का खाना न बने तो हम कैसे घर सिर पर उठा लेते हैं।

पंकज- पापा एक खिलौना या गेम दिलाने के लिए मना

कर दें तो हम तो जिद पकड़ कर खाना-पीना ही छोड़ देते हैं।

सौरभ- सही कहा तुमने, पर दादाजी कहते हैं कि दुनिया में असीमित/असंख्यात् चीजें हैं और हमारा मन चंचल है। इसीलिए मन पर कंट्रोल करना चाहिए। आवश्यकता पूरी होना जरूरी है। इच्छाएं तो अधूरी ही अच्छी है, क्योंकि वे कभी पूरी नहीं हो सकती। आज ये पेन, कल वो गेम, कम्प्यूटर, मोबाइल, कपड़े, जूते और ना जाने क्या-क्या।

सभी बच्चे आज चुप थे, पर उनकी चुप्पी एक नए त्याग के गुंजन का आगाज करने वाली थी, जो आज साधु-साध्वीजी के दर्शन से गुंजायमान हो गई।

नितिन- आंटी, महाराज सा. के ओर क्या-क्या चीजें नहीं चलती। उन्हें ऐसे तो बहुत तकलीफें आती होंगी?

सौरभ की माताजी- बिल्कुल आती हैं और हमसे तो कई गुणा ज्यादा आती हैं। तुम सब फ्री होकर आना, आपको श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के मुखपत्र 'श्रमणोपासक' के सितम्बर माह के धार्मिक अंक में साधु-साध्वीजी को आने वाले कुल 22 तरह के परीषहों (तकलीफों) के बारे में पढ़ाऊंगी, तब तुम समझ पाओगे।

सौरभ आज अपने आप में बहुत अच्छा महसूस कर रहा था। उसे अपने जैन होने पर गर्व हो रहा था।

(आज किसी भी बच्चे के पास कोई प्रश्न नहीं था। शायद वे स्थानक का नजारा देखकर सब समझ गए।)

सौरभ की माताजी- चलो अब सब अपने घर जाओ और हां आज हमें एक नियम लेना है कि हम अपने माता-पिता से ज्यादा जिद ना करें, आवश्यकता से अधिक फालतु में वस्तुएं ना रखें तथा किसी का मन ना दुखाएं।

सौरभ- बाय दोस्तो!

(सभी दोस्त एक नयी चमक के साथ अलविदा लेते हैं। शायद ये ही भविष्य के उज्ज्वल सितारे बनें, जो धर्म की अलख को जगाने का कार्य करें।

उपरोक्त वार्तालाप से एक सीख लेवें कि बच्चों को स्थानक जरूर ले जाएं और धर्म के संस्कार, धर्म की महिमा जरूर सिखाएं। शायद जीवन में कुछ अलौकिक घट जाए।

-क्रमशः

●●●

अकल्पनीय, अनुकरणीय, अनुमोदनीय

101 सामायिक लगातार एक आसन पर जारी

उदयपुर राम महोत्सव में अनेक तप-त्याग, तपस्याएं गतिमान हैं। इन तपस्याओं की झड़ी के मध्य एक आश्चर्यजनक तप भी शामिल है, जिसमें श्री पारसमलजी नागौरी द्वारा एक आसन पर 101 सामायिक का कीर्तिमान स्थापित किया गया है। एक सामायिक में 48 मिनट का समय लगता है यानी 101 सामायिक में 4,848 मिनट अर्थात् लगभग 81 घंटे का समय लगा। श्री नागौरीजी लगभग साढ़े तीन दिन एक ही आसन पर साधानारत रहे।

सामायिक आराधना में खाना, पीना, सोना, भौतिक सुख-सुविधाओं का पूर्णतया त्याग रखते हुए नियत वेशभूषा में सिर्फ धर्माराधना की जाती है। ऐसी सामायिक लगभग 100 वर्ष पूर्व परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री श्रीलालजी म.सा. के समय उदयपुर हुई, ऐसा सुनने में आता है, जहां 151 सामायिक की आराधना एक आसन पर हुई थी।

●●●

संघनायक! संघ मालिक, हम सब साधुमार्ग अनुयायी हैं।
और नहीं दूजे हम कोई, बस तेरी परछाई हैं।।19।।

गुड बॉक्स

जय जिनेन्द्र बच्चों!

संवत्सरी के पावन पर्व पर आप सभी से क्षमायाचना करती हूं। आशा है Good Box में समझाई सारी बातें और चारित्रात्माओं के सान्निध्य में आप सभी बच्चों ने पर्व पर्युषण बहुत तप-त्याग से मनाया होगा..... पिछले अंक में आप सभी बच्चों ने तीर्थ, तीर्थ के मुखिया आदि के बारे में जाना, पर You know what..... महाराज सा. बनना easy नहीं है। आप लोग अपने आस-पास देखते ही होंगे कि चारित्रात्माएं चप्पल नहीं पहनते, इलैक्ट्रीसिटी उपयोग नहीं करते हैं और भी बहुत कुछ उपयोग नहीं करते। तो बच्चों इस अंक में हम साधु-साध्वी के 22 परीषहों (संयमी जीवन में आने वाले कष्ट) के बारे में जानेंगे... **So let's go...**

1. **क्षुधा-** गवेषणा करना हर साधु का कर्तव्य एवं जवाबदारी है। गवेषणा एक प्रश्नावली है जो संयमी जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए की जाती है। कुछ भी चीज जैसे पेन/कॉपी, कपड़े, भोजन इत्यादि स्वीकार करने से पहले गवेषणा की जाती है। आचार्य श्री गणेशलालजी म.सा. जब दक्षिण भारत में पधारे, वो रेल के इंजिन से गिरे हुए गर्म पानी का उपयोग करते थे और इस तरह कई दिनों तक उन्होंने ऐसे ही विहार किया।

2. **पिपासा-** भोजन की तरह ही पानी (धोवन/अचित्त) के लिए भी यही प्रक्रिया (गवेषणा) की जाती है।
3. **शीत-** शीत ऋतु में शीत को सहन करना और गर्म कपड़ों की, लेदर, फर या जेकेट्स की अभिलाषा नहीं करना।
4. **उष्ण-** ग्रीष्म ऋतु में गर्मी को सहन करे और पंखे, ए.सी. इत्यादि के बारे में ना सोचे।
5. **दंशमसक-** कभी कोई मच्छर परजीवी काटे तो उन्हें नुकसान नहीं पहुंचाना और क्रोध नहीं करना, समभाव से उसे सहन करना।
6. **अचेल-** मैले या फटे कपड़ों से साधु को खेद-खिन्न नहीं होना चाहिए।
7. **अरति-** संयमी जीवन सरल नहीं है। अपनी इंद्रियों को वश में रखकर पांचों महाव्रतों का पालन करना सरल नहीं है। इसलिए साधु इस संयमी जीवन को नापसंद नहीं कर सकता। अगर साधु के मन में कभी ऐसे विचार आएं तो उसे याद करना चाहिए कि अंतर्मन (आंतरिक) की खुशी के अलावा और कोई खुशी संसार में नहीं है।
8. **स्त्री/पुरुष-** साधुओं को स्त्रियों के बारे में एवं साध्वियों को पुरुषों के बारे में सोचना निषेध है। साधुओं को स्त्रियों के प्रति एवं साध्वियों को पुरुषों के प्रति आकर्षित नहीं होना चाहिए। संयमी जीवन का दृढ़ता से पालन करना चाहिए।
9. **चर्या-** साधु को चातुर्मास के चार महीने छोड़कर आठ महीने विहार करने का नियम है। साधु/साध्वी किसी भी स्थान पर 29 दिनों से ज्यादा नहीं रुक सकते, सिर्फ (चौमासे में छोड़कर) विहार में उन्हें कंकड़, पत्थर चुभते हैं, कांटे चुभते हैं, तो उन्हें समभाव से सहन करना होता है।

10. **निषद्या–** कोई डरावने जीव या आवाज उन्हें डराए तो साधु को नहीं डरना चाहिए। इन सभी से मन हटाकर साधु को ध्यान में मन लगाना चाहिए।
11. **शय्या–** कई बार साधु ठहरते हैं वह स्थान उपयुक्त नहीं होता है। उन्हें उसका सोचे बिना सुख और संतुष्टि से रात्रि उस स्थान पर व्यतीत करनी चाहिए।
12. **आक्रोश–** साधु को कठोर शब्दों को सुनकर आक्रोशित अथवा दु:खी नहीं होना चाहिए।
13. **वध–** साधु को कोई क्रूरकर्मी जीव मारने के लिए तैयार हो जाए, फिर भी साधु को शारीरिक, मौखिक या मानसिक हिंसा का सर्वथा त्यागना चाहिए।
14. **याचना–** दूसरों के मकान इत्यादि उपयोग लेने से पूर्व मालिक की अनुमति मांगनी और लेनी चाहिए।
15. **अलाभ–** अनुमति में ना होने पर भी साधु हमेशा शांत रहे।
16. **रोग–** शारीरिक रोग होने पर साधु को चिकित्सा उपलब्ध नहीं होने की स्थिति में चित्त शांत रखे, क्योंकि चिकित्सक हर समय उपलब्ध नहीं हो सकता। उसे चिंतन करना चाहिए कि रोग मेरे पूर्व कर्मों का ही फल है और इसलिए इसे मुझे समभाव से सहन करना चाहिए।
17. **तृण–** मुनि को बिछाने के लिए तृणों की शय्या या आसन का उपयोग करना पड़ता है। तृणों का स्पर्श तीक्ष्ण होता है। मुनि उस स्पर्श को शांत भाव से सहन करे।

18 **मल–** साधु को अपने शरीर से धूल, मिट्टी, पसीने को रगड़कर निकालने या नहाने की आज्ञा नहीं है।

19. **सत्कार/पुरस्कार–** कई बार अच्छे साधु देखकर लोग भोजन का आयोजन करते हैं या उन्हें स्नेहवश उपहार या पुरस्कार देते हैं। साधु को उन्हें कदापि स्वीकार नहीं करना चाहिए।
20. **प्रज्ञा–** साधु को अपने ज्ञान का अभिमान नहीं करना चाहिए और दूसरे को ज्ञानी जानकर ईर्ष्या या द्वेष नहीं करना चाहिए।
21. **अज्ञान–** ना तो पांचों अंगुलियां समान हैं और ना ही दो साधु समान होते हैं। कुछ साधु अत्यंत ज्ञानसंपन्न होते हैं और कुछ अल्पज्ञानी होते हैं। ऐसी स्थिति में साधु को स्वयं को अल्पज्ञ/हीन नहीं समझना चाहिए।
22. **दर्शन–** इस प्रकार साधु को समभावी और मजबूत होना चाहिए, जिससे वो संयमी जीवन की शुद्ध पालना कर सकें और अंत में संलेखना संथारा कर मोक्ष प्राप्त करें।

इन परीषहों को सहन करते हुए भी चारित्रात्माएं अपना जीवन कितने आनंद में व्यतीत करती हैं। वह आपको और हमें पता ही है। हमें भी उनके जीवन से सीख लेनी चाहिए। हम सुविधाओं के बिना भी जीएं। जैसे कुछ देर बिना लाईट, पंखे के बिना रहें। मनपसंद खाना न बनने पर धीरज रखें, सहज व सरल रहना सीखें आदि।

रत्नत्रय शुद्ध पालन करके, तोडें कर्मों की कारा।
नाना गुण का धाम संघ है, घर-घर गूंजे यह नारा।।20।।

उदयपुर का कण-कण खिला, गुरु राम का चातुर्मास मिला

युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश के राम महोत्सव चातुर्मास में अद्भुत, अलौकिक छटा, अब तक 53 मासखमण पूर्ण, मुमुक्षु कविताजी बुच्चा व मुमुक्षु दिव्याजी पारख की जैन भागवती दीक्षा सोल्लास सम्पन्न, नवीन नामकरण नवदीक्षिता साध्वी श्री तृप्तिश्रीजी म.सा. एवं नवदीक्षिता साध्वी श्री दीप्तिश्रीजी म.सा., पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर धर्म, तप, जप, आराधना की धूम, श्रद्धा का जनसैलाब उमड़ा

हिरण मगरी सेक्टर-4, उदयपुर।

सूरत ये सुहानी है, ज्ञानी और ध्यानी हैं, गवरा के नंदन की, बढ़ती पुण्यवानी है।
राम गुरु मेरे गुरु, नाना की निशानी हैं, जिनके पावन चरण कमल में खिले जिन्दगानी है।।

जिनकी उत्कृष्ट संयम साधना तप-तेज की गूंज देश-विदेश में गूंज रही है, ऐसे युगनिर्माता, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक, आराध्यदेव आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-16 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. आदि ठाणा का ऐतिहासिक, अलौकिक, अविस्मरणीय, अनुपम **'राम महोत्सव'** चातुर्मास अनेक आध्यात्मिक आयोजनों व उपलब्धियों के साथ निरन्तर प्रवर्द्धमान है। श्रद्धा का जनसैलाब उमड़ रहा है। पूरा उदयपुर, मेवाड़ व देश-विदेश से श्रद्धालु आध्यात्मिक आलोक से आप्लावित होकर जीवन धन्य बना रहे हैं। अलौकिक महापुरुषों के पावन दर्शन, प्रवचन श्रवण, जिज्ञासा समाधान, सच्चे धर्म की प्ररूपणा से जन-जन प्रभावित है। नैतिकता, मानवता, ईमानदारी, सच्चाई, सदाचार, व्यसनमुक्ति एवं धार्मिकता का शंखनाद हो रहा है। अब तक 53 मासखमण हो चुके हैं। कई गुप्त दीर्घ तपस्याएं गतिमान हैं। 9 की लड़ी निरंतर चल रही है। दीक्षाओं का ठाठ लगा हुआ है। मुमुक्षु बहिन कविताजी बुच्चा एवं मुमुक्षु बहिन दिव्याजी पारख की दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व में अनेक कीर्तिमान स्थापित हुए। सभी वर्गों में अपूर्व धर्मोल्लास देखते ही बनता था। प्रचुर मात्रा में उपवास, बेला, तेला, अठाई, ग्यारह, पन्द्रह, दया, संवर, पौषध के साथ ही 24 घंटे का अखण्ड नवकार महामंत्र जाप, सवा करोड़ नवकार महामंत्र जाप आदि धर्माराधना हुई और निरंतर हो रही है। **'लोच में क्या सोच'** कार्यक्रम में अब तक 170 से अधिक लोच सम्पन्न हो चुके हैं। राजनेतागण भी महापुरुषों के दर्शन कर मार्गदर्शन प्राप्त कर रहे हैं। विभिन्न शिविर व ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रमों के माध्यम से नई-नई जानकारियां लोग हासिल कर रहे हैं। सम्पूर्ण उदयपुर आध्यात्मिक आलोक से आलोकित हो चुका है। श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता युवा संघ, बहू मंडल एवं श्री वर्द्ध.स्था. जैन श्रावक संस्थान की सेवाएं अहर्निश गतिमान हैं।

16 अगस्त। धर्मसभा में उपस्थित विशाल जनमेदिनी को संबोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य प्रवर ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि "हमारी आत्मा अभी कर्मों से जुड़ी हुई, शरीर को धारण की हुई है। सिद्ध भगवान शुद्ध हो गए हैं, क्योंकि उनके कोई कर्म शेष नहीं हैं। कर्म रहता है तो कर्मों का बंध होता है। कर्म नहीं रहेगा तो कर्मों का बंध नहीं होगा। कर्मों का बंध हमारे भीतर में रहे हुए पूर्व कर्मों के निमित्त से

ही हो रहे हैं। उनके कारण से ही हमारे मन-वचन-काया की प्रवृत्ति होती है। ऐसी कोई भी आत्मा नहीं है, जिसका संसार में दूसरों के साथ संबंध नहीं रहा हो। प्रत्येक आत्मा के साथ संबंध पूर्व में जुड़ चुका है। जितने भी रिश्ते-नाते हैं वे एक बार नहीं, अनंत बार हो चुके हैं। प्रभु और हमारे बीच की दूरी को हमें खत्म करना है। मोह का आवरण हटेगा तो दूरियां मिटेगी।'' **'सत्य सदा जयकार'** चौपाई से धर्मप्रेमियों को एक नई ऊर्जा प्राप्त हुई।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं, मुझे कहां जाना है, इसका निरंतर चिंतन करना चाहिए। हमें अपने परम लक्ष्य मोक्ष की दिशा में निरंतर आगे कदम बढ़ाना है। शासन दीपिका साध्वी श्री किरणप्रभाजी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने **'गुरुवर पधारे हैं, छाई बहारें हैं'** भाव गीतिका प्रस्तुत की। दोपहर में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि विविध कार्यक्रम हुए। देश-विदेश के अनेक क्षेत्रों से गुरुभक्त श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा।

17 अगस्त। पंचदिवसीय 'कर्मों में उलझा जीवन' शिविर में अपना मार्गदर्शन प्रदान करते हुए श्री गगनमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि संसार में विषमता, विभिन्नता सब कर्मों के कारण है। जीव जैसे कर्म करता है, वैसा ही उसको फल मिलता है। कर्मबंध का मूल कारण राग-द्वेष हैं। आठों कर्मों का विस्तृत विवेचन अत्यन्त सरल शैली में आपश्रीजी ने फरमाया।

धर्मसभा में उपस्थित गुरुचरण पिपासु जनता को अमृतवाणी का रसपान कराते हुए शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने फरमाया कि ''क्रोध, मान, माया, लोभ आत्मा के दोष हैं। इसका वमन करने से ऋषि-महर्षि भगवान महावीर बन गए। पाप कर्म का बंध कषाय से होता है। क्रोध, मान, माया, लोभ से पाप कर्म होता है। ये चारों कषाय संसार में रोकने वाले होते हैं। इनसे पुनः पुनः जन्म-मरण होता है। इन कषायों को हटाने से आत्मसुख की प्राप्ति होती है। फिर परम अवस्था को प्रकट होने में देर नहीं लगेगी। यदि हम गुस्सा करेंगे तो आत्मा दूषित होगी और हमने गुस्सा नहीं किया, प्रतिक्रिया नहीं दी तो वहां आत्मा दूषित नहीं होगी। क्रोध को हमें समता से जीतना है।''

श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने **'गुरुवर पधारो हृदय में विराजो, यही प्रार्थना है'** गीतिका फरमाई। साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। चित्तौड़गढ़ की बहिनों ने फेसबुक त्याग का नियम लिया।

दोपहर में साध्वी श्री रिद्धिताश्रीजी म.सा. ने **'कर्मबंध और हमारा जीवन'** विषय पर प्रभावी मार्गदर्शन दिया। महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए।

अनुपम संथारा साधिका महासती श्री कृतार्थश्रीजी म.सा. को भावभीनी श्रद्धांजलि

18 अगस्त। महासती श्री मर्यादाश्रीजी म.सा. ने **'कर्मों में उलझा जीवन'** विषय पर मार्गदर्शन देते हुए आठों कर्मों की हृदयस्पर्शी व्याख्या प्रस्तुत की।

तरुणतपस्वी आचार्य भगवन् ने भजन **'मनोरथ तीन हैं मेरे, प्रभु मैं पूर्ण कर पाऊं, मनुज तन सफलता को'** के साथ धर्मसभा में अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''यदि तीन मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं तो मनुष्य तन की सार्थकता सफलतापूर्वक हो जाएगी। महासती श्री कृतार्थश्रीजी म.सा. ने दरस्साणी परिवार में जन्म लिया, झाबक परिवार-बीकानेर की कुलवधू बनी। 76 वर्ष की उम्र में मन हो गया कि मुझे दीक्षा लेनी है, संथारा लेना है। घर में चर्चा चलती रही। देखते ही देखते 15 दिन की तपस्या हो गई और 16वें दिन संलेखना स्वीकार कर लिया। साध्वी जीवन में प्रवेश किया और 17 तारीख को लगभग 3:55 बजे

अपने आपको कृतार्थ कर लिया। जिस उद्देश्य से साधु जीवन स्वीकार किया, संलेखना स्वीकार किया। उस प्रयोजन अर्थ को उन्होंने सिद्ध कर लिया। मृत्यु के समय धर्म याद आना, संथारा-संलेखना की स्मृति होना बहुत मूल्यवान है। साध्वी श्री कृतार्थश्रीजी म.सा. की संसारपक्षीय छोटी बहिन साध्वी श्री विपुलाश्रीजी म.सा. थी। दोनों ही परिवार धर्मनिष्ठ परिवार हैं। प्रतिदिन अपनी भावना में संथारा लेने की बात झंकृत होनी चाहिए। साधु और श्रावक के लिए बताया गया है कि पिछली रात्रि में जैसे ही नींद खुले विचार करना चाहिए कि मैंने क्या किया है और क्या करना मेरा शेष रह गया है। श्री कृतार्थश्रीजी म.सा. की महासतियों ने अनुपम सेवा की। सेवा धर्म परम धर्म है। महान पुण्य का योग होता है तब सेवा, वैय्यावच्च का अवसर मिलता है। सेवा दिखावे के लिए नहीं अपितु मन की संतुष्टि के लिए होनी चाहिए।''

श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि इस जीवन का कोई भरोसा नहीं है। धर्म व शुभ कार्य को कभी भी कल पर नहीं टालना चाहिए। महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा. ने फरमाया कि जन्म एक बीज होता है और जीवन वृक्ष होता है। जन्म केवल एक पृष्ठ होता है और जीवन पुस्तक होती है। जन्म एक बीज के रूप होता है और उस बीज को सिंचन मिलने पर वह वृक्ष का आकार ले लेता है। महासती श्री कृतार्थश्रीजी म.सा. ने तीनों मनोरथ पूर्ण कर अपना जीवन धन्य किया है।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने गीतिका **'जो आता है सो जाता है, तू किस का शोक मनाता है'** प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि साध्वी श्री कृतार्थश्रीजी म.सा. ने अपने तीनों मनोरथ पूर्ण किए। उनकी बहिन साध्वी श्री विपुलाश्रीजी म.सा. ने जैन-जैनेत्तर सभी में गहरी छाप छोड़ी है।

कैबिनेट मंत्री (उड़ीसा सरकार) परम गुरुभक्त राजूभाई ढ़ोलकिया ने अपने भावोद्गार में कहा कि आज मुझे मेरे आराध्यदेव के पावन दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश की कृपा सदैव ही हमारे परिवार, खरियार रोड़ संघ, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ पर रही है। उन्हीं की कृपा से आज मुझे उड़ीसा सरकार में कैबिनेट मंत्री के रूप में सेवा करने का अवसर मिला है। आचार्य श्री नानेश ने छ.ग.-उड़ीसा में धर्म का द्वार खोला था।

दोपहर में श्रद्धालुओं ने अपनी जिज्ञासाओं के सटीक समाधान प्राप्त किए। आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

19 अगस्त। साध्वी श्री मर्यादाश्रीजी म.सा. ने **'कर्मों में उलझा जीवन'** शिविर में मार्गदर्शन प्रदान करते हुए फरमाया कि सब मेरे कर्मों का दोष है। ये कर्म अनादिकाल से चल रहे हैं। अब आगे नहीं चलने चाहिए। आत्मा में इतनी ताकत है कि कर्मों को रोक देती है। मुझे और कोई नहीं, मेरे कर्म ही परेशान करते हैं। कर्मबंध का मूल कारण राग-द्वेष हैं। हमें बांधने का नहीं, अपितु कर्म तोड़ने का कार्य करना है।

विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''कृष्ण वासुदेव का जन्म भादवा बदी अष्टमी को हुआ। कितनी विकट परिस्थितियां थी। कंस के विपरीत किसी की बोलने की हिम्मत नहीं थी। ऐसे समय में कृष्ण का जन्म होता है और देवकी कहती है- हे नाथ! इसकी रक्षा कीजिए। कहते हैं कि मारने वाले से बचाने वाले के हाथ लंबे होते हैं। मन में यदि संकीर्णता होगी तो हम कभी भी सुरक्षा और रक्षा के लिए तैयार नहीं होंगे। कृष्ण वासुदेव के जीवन में छह लोग सामने आते हैं- शिशुपाल, कालिया नाग, पूतना, जरासंध, दुर्योधन और कंस। उन छहों को इस प्रकार उपमाएं दी- शिशुपाल कामवासना का प्रतीक है। कालिया नाग क्रोध का प्रतीक है। पूतना तृष्णा की प्रतीक है। जरासंध मोह का प्रतीक है। दुर्योधन मद-मत्सर का प्रतीक है और कंस अहंकार का प्रतीक है। ये वहां पुरुष के रूप में उनके सामने थे और ये छह भाव हमारे सामने हर वक्त रहते हैं। यदि कृष्ण वासुदेव की

जन्म-जयंती मनानी है, उन्हें याद करना है तो अपने भीतर ऐसा पुरुषार्थ जागृत करें कि उन छह शत्रुओं पर हम अंकुश लगाने वाले बन जाएं। हम जिनेश्वर देव की आराधना कर रहे हैं। इन छह शत्रुओं को मैं अपने जीवन पर हावी नहीं होने दूंगा। क्रोध अहंकार हमें पतन की ओर ले जाते हैं। क्रोध से प्रीति का नाश होता है।''

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जैन दर्शन का सार इन बिंदुओं पर है। जीवन नित्य है, शाश्वत है। जीवन आठ कर्मों का कर्त्ता व भोक्ता है। भवी जीव कर्म खपाकर मोक्ष जाता है। सम्यग्ज्ञान-दर्शन-चारित्र मोक्ष का मार्ग हैं।

महासती श्री जलजश्री म.सा. ने **'गुरु आपकी कृपा से सब काम हो रहा है'** भाव गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि आज आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर की कृपा से महासती श्री खामेमिश्रीजी म.सा. के मासखमण की दीर्घ तपस्या पूर्ण होने जा रही है। साध्वीवृंद ने तपस्या बधाई गीत प्रस्तुत किया। सभा में उपस्थित कई भाई-बहिनों ने चातुर्मास में एक तेला एवं खुले पांच उपवास करने का संकल्प लिया।

आचार्य भगवन् ने महासती श्री खामेमिश्रीजी म.सा. के मासखमण तप पर उनके अपूर्व आत्मबल सराहना की। पर्युषण पर्व में 200 नियम **'पचखाण से निर्वाण'** से जुड़ने का आह्वान किया।

20 अगस्त। **'कर्मों में उलझा जीवन'** शिविर में साध्वी श्री मर्यादाश्रीजी म.सा. ने कर्मों की हृदयस्पर्शी व्याख्या प्रस्तुत की।

धर्मसभा में प्रशान्तमना आचार्य भगवन् ने अपनी अमृतवाणी में फरमाया कि ''क्रोध, मान, माया, लोभ आत्मा के दोष हैं। ये हमें उस सिद्धालय में जाने की योग्यता को बाधित करते हैं। इस बाधा को दूर करने का हमारा लक्ष्य होना चाहिए। हमारे भीतर अरिहंत-सिद्ध बनने की पात्रता है, किन्तु उस पात्रता को प्रकट करना है। योग्यता प्रकट करने के लिए समकित की आवश्यकता है। आज खामेमिश्रीजी म.सा. के 31 की तपस्या है। तप करने के लिए आत्मबल की आवश्यकता है।'' आपश्रीजी ने नाना गुरु के समतामय जीवन का बखाण किया।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि क्या कभी सामायिक नवकार मंत्र जाप का हमने स्पर्श किया? बोलना अलग चीज है, स्पर्श होना अलग चीज है। आपश्रीजी ने आगार धर्म, अणगार धर्म की व्याख्या की। साध्वी श्री सुखदाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि करोड़ों भव के संचित् कर्म तप के माध्यम से नष्ट हो जाते हैं। आपश्रीजी ने साध्वी श्री खामेमिश्रीजी म.सा. के मासखमण तप एवं उनकी संयमी चर्या, स्वाध्याय सेवा में विशेष रुचि की सराहना की। साध्वी मंडल ने तप गीत **'मिश्री सूं मीठो तप है थांरो, म्हे भी करणो चावां सा'** प्रस्तुत किया।

कई गुप्त तपस्याएं जारी है। नौ की लड़ी के साथ ही अन्य कई तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए।

दीक्षार्थी बहिन कविताजी बुच्चा व दिव्याजी पारख सभा में उपस्थित थी। दोपहर में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए। मुमुक्षु बहिनों की उपस्थिति में अटल सभा ग्रह में चौबीसी गीत आदि कार्यक्रम हुए।

21 अगस्त। प्रात:कालीन रविवारीय समता शाखा मंगल बेला में श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई। **'कर्मों में उलझा जीवन'** शिविर में भाई-बहिनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

नानेश पट्टधर आचार्य श्री रामेश ने भगवान महावीर के अमृत निर्झर से जन-जन को आप्लावित करे हुए फरमाया कि ''इंसान के साथ दूरियां बढ़ाई तो भगवान के साथ दूरियां बढ़ गई। इंसान के साथ बनी दूरियों को दूर करें। भगवान को प्राप्त करना है तो सरल, सहज, सरस बनें। कोई भी इंसान मेरा शत्रु नहीं है। मैं सबका हूं और सब मेरे हैं। हमारा मस्तिष्क उलझा हुआ नहीं सुलझा हुआ होना चाहिए। दीक्षा लेने के

लिए दस का मुंडन करना पड़ता है। सिर्फ सिर का मुंडन ही नहीं अपितु पांच इंद्रियों, चार कषायों और मन को भी जीतना पड़ता है। संवेग-निर्वेद की भावना को आगे बढ़ाना है। मोक्ष जाने की अभिलाषा तीव्र होनी चाहिए और कोई मेरा नहीं है यह अनुभूति गहरी होनी चाहिए। दीक्षा से पहले जैसा वैराग्य है, दीक्षा के बाद भी वैसा ही वैराग्य होना चाहिए।'' आचार्य भगवन् ने जैसे ही 11 अक्टूबर के लिए मुमुक्षु बहिन दिशाजी पगारिया सुपुत्री निलेशजी ममताजी पगारिया-जलगांव (महा.) की जैन भागवती दीक्षा की घोषणा की सम्पूर्ण सभा **'राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाठ है'** आदि जय-जयकारों से गूंज उठी।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि श्रेष्ठ एवं उत्तम संयम मार्ग है। साधु हर परिस्थिति में आनंद में रहता है। मन खुश है तो सब खुश है। साध्वी मंडल ने **'कैसी होती है देखो साधना'** गीत प्रस्तुत किया।

आचार्यदेव के मुखारविन्द से जीवन में 101 तेला करने का प्रत्याख्यान लगभग 30 भाई-बहिनों ने ग्रहण किया। साध्वी श्री खामेमिश्रीजी म.सा. के 31 उपवास का पारणा सानंद सम्पन्न हुआ। दोपहर में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

मुमुक्षु बहिनों का भव्य वरघोड़ा एवं अभिनंदन

जा संयम रास्ते दीक्षार्थी, तेरा पथ सदा उज्ज्वल बने।
जंजीर बंधी जो कर्मों की, मुक्ति की वही वरमाल बने।।

मुमुक्षु बहिन सुश्री कविताजी बुच्चा का भव्य वरघोड़ा लक्ष्मी निवास से प्रारंभ हुआ। दीक्षार्थी बहिन एवं उनके माता-पिता एक आकर्षक रथ में सवार हो हाथ जोड़कर सभी का अभिवादन स्वीकार कर रहे थे। मार्ग में अनेक स्थानों पर मुमुक्षु बहिन का स्वागत किया गया। प्रभु एवं गुरुभक्ति गीतों तथा जयकारों से सम्पूर्ण मार्ग गूंज रहा था। उदयपुर एवं मेवाड़ सहित देश के अनेक स्थानों के श्रद्धालु धर्मप्रेमी भाई-बहिन भारी संख्या में उपस्थित थे। सभी मुमुक्षु बहिन के त्याग को देखकर नतमस्तक हो रहे थे। वरघोड़े का समापन वर्द्धमान जैन स्थानक भवन में हुआ।

मुमुक्षु बहिन कविताजी बुच्चा-देशनोक एवं मुमुक्षु बहिन दिव्याजी पारख-गंगाशहर-भीनासर एवं परिजनों का शानदार स्वागत-अभिनंदन अटल बिहारी वाजपेयी सभागृह में अपार जनमेदिनी की उपस्थिति में श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति, श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ, आरुग्गबोहिलाभं, श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता युवा संघ, बहू मंडल - उदयपुर एवं वर्द्धमान स्था. जैन श्रावक संघ द्वारा भव्य रूप से किया गया।

प्रारंभ में समता बहू मंडल एवं समता महिला मंडल ने मंगलाचरण व स्वागत गीत प्रस्तुत किया। चातुर्मास संयोजकजी ने स्वागत भाषण में कहा कि आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर की कृपा से चातुर्मास में धर्म-ध्यान, त्याग-तपस्या के साथ दीक्षाओं का भी ठाठ लग रहा है। आचार्य भगवन् के अतिशय का जिक्र करते हुए महेश नाहटा ने दीक्षार्थी बहिनों का परिचय प्रस्तुत किया। दीक्षार्थी अभिनंदन पत्र का पठन सह-संयोजक ने किया।

दीक्षार्थी बहिनों, परिजनों व अतिथियों का स्वागत संघ अध्यक्षजी, मंत्रीजी सहित संघ प्रमुखों ने तिलक, माला, शॉल से किया। अतिथि गुलाबचंदजी कटारिया, नेता प्रतिपक्ष, राजस्थान सरकार ने अपने उद्बोधन में कहा कि गुरुओं के आशीर्वाद से ये मुमुक्षु बहनें अपना सर्वस्व समर्पित कर जैन धर्म को आलोकित करेंगी। उपमहापौर पारसजी सिंघवी ने दीक्षार्थी बहिनों परिजनों के आदर्श त्याग की सराहना की। प्रमोदजी ने कहा कि जैन संस्कृति बेजोड़ है। जहां कठिन तपस्या, संयम साधना की भव्य आराधना होती है।

मुमुक्षु बहिन कविताजी बुच्चा ने अपने भावोद्गार में कहा कि ''आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर तथा परिजनों के उपकारों से आज संयम जीवन में कदम बढ़ा रही हूं। विषय-कषाय से ऊपर उठकर

वीतरागता की ओर हमारा हर कदम बढ़ता रहे, ऐसा आशीर्वाद आप सभी से चाहती हूं।''

मुमुक्षु दिव्याजी पारख ने कहा कि जब तक बुढ़ापा न आ जाए, बीमारी ना आ जाए, उससे पूर्व धर्म की आराधना कर लेनी चाहिए। युवावस्था धर्माराधना व संयम साधना के लिए अत्यंत उपयुक्त अवस्था है। त्याग-नियम व पचखाण से जीवन को आगे बढ़ाना चाहिए। इस पंचम आरे में चौथे आरे की झलक दिखाने वाले आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का हमेशा संबल मिला है। पारिवारिकजनों का सहयोग अनवरत मिलता रहा है। उसी के फलस्वरूप कदम आगे बढ़ा रही हूं। यह स्वागत हमारा नहीं त्याग, संयम, वैराग्य, भगवान महावीर एवं आचार्य श्री रामेश का है।

इस अवसर पर राष्ट्रीय उपाध्यक्षजी सहित अनेक गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति रही।

युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश के मुखारविंद से मुमुक्षु बहिन कविताजी बुच्चा एवं मुमुक्षु बहिन दिव्याजी पारख की जैन भागवती दीक्षा सोल्लास सम्पन्न

भगवान के तीर्थ को कर रहे हैं दीपायमान। बढ़ा रहे हैं आप, जिनशासन की शान।।
अष्ट कर्मों को खपाने, करना पुरुषार्थ अपार। कि जल्दी मिल जाए, मोक्ष रूपी धाम।।

22 अगस्त। सांसारिक सुख भोग व वैभव को तथा आधुनिक संसाधनों को छोड़कर दो वीर बालाएं महान् संयम पथ पर आरूढ़ हो गई। परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. की उत्कृष्ट संयम साधना से प्रभावित होकर अनेक भव्यात्माएं पावन चरणों में समर्पित हो रही हैं। इसी कड़ी में 29 वर्षीय वीर बाला मुमुक्षु बहिन कु. कविताजी बुच्चा सुपुत्री श्री मोतीलालजी चंदादेवी बुच्चा-देशनोक एवं वीर बाला मुमुक्षु बहिन कु. दिव्याजी पारख सुपुत्री श्री हनुमानजी जयश्रीजी पारख-गंगाशहर-भीनासर ने अपना सम्पूर्ण जीवन ऐसे दिव्य पावन चरणों में स्व-पर कल्याण की भावना से समर्पित कर जैन भागवती दीक्षा ग्रहण करके सबके लिए एक मिसाल बन गईं।

नवकार महामंत्र के जाप के बाद अनुपम दीक्षा प्रदाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''सूर्योदय की लालिमा एहसास करा देती है कि अब सूर्योदय होने वाला है। किन्तु अध्यात्म जीवन की सुबह तब खिलती है जब 'तुझ-मुझ में भेद न पाऊं, ऐसा हो संधान'। ऐसी खोज प्रारंभ हो जाती है कि मैं कौन हूं, मेरा स्वरूप क्या है और सिद्ध-परमात्मा का स्वरूप क्या है? सिंह जब तक भेड़ों के साथ रहता है तब तक उसे अपने स्वरूप का एहसास नहीं हो पाता है। मैं शुद्ध चैतन्य आत्मा हूं, मैं शुद्ध स्वरूपी आत्मा हूं। न पुरुष हूं,न स्त्री हूं, न नपुंसक हूं। कर्मों के कारण भिन्नता बनी रहेगी। उस चैतन्य को प्रकट नहीं किया जा सकेगा। जब विराट स्वरूप को प्रकट करने की भावना जग जाती है तो मोह के दलदल से चेतना ऊपर उठती है और बाहर निकलने की कोशिश करती है। दोनों मुमुक्षु आत्माएं कविता बुच्चा और दिव्या पारख, देखने में दो परिवार लग रहे हैं किन्तु कहीं न कहीं एकत्व का भाव है। सुश्रावक आईदानजी बुच्चा की एक पौत्री है तथा एक दोहित्री है। इनके मन में भी भावना जगी कि शुद्ध की आराधना करूं, उसको प्रकट करूं। उसके लिए इन्होंने अपने कदम आगे बढ़ाए हैं। हीरे की दलाली करने से हाथ में हीरा आता है और कोयले की दलाली करने से हाथ में कोयला आता है। दलाली करते हुए अनुमोदन करते हुए हमारे मन में ये तरंगें उठनी चाहिए कि मेरे जीवन में ऐसा अवसर कब आएगा? वह दिन मेरा धन्य कब होगा? जिस दिन मैं भी इस डगर को पार करके आगे बढ़ूंगा, इस राह पर आगे कदम बढ़ाऊंगा। वही दिन मेरे लिए सोने का सूरज होगा, वही मेरी सुप्रभात होगी। बाकी तो सुबह उठते

ही हम आरंभ-परिग्रह की जकड़न में जकड़ जाते हैं किन्तु ये सुप्रभात आरंभ-परिग्रह से मुक्त कराने वाली होगी।'' आचार्य भगवन् ने संयम भाव गीतिका **''संयम कोई खेल नहीं, जो टी.वी. में दिखाते हैं''** प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि संयम जीवन में हर परिस्थिति में शांत रहना है।

आचार्य भगवन् ने 7 बजकर 5 मिनट पर दीक्षा विधि प्रारंभ की। दोनों मुमुक्षु बहिनों से दीक्षा की तैयारी के बारे में पूछा तो दोनों बहिनों ने तुरंत ही हां में स्वीकृति प्रदान करते हुए कहा कि शीघ्र कृपा कराओ भगवन्! परिजनों, उदयपुर संघ, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, महिला समिति, समता युवा संघ एवं उपस्थित जनता ने हाथ उठाकर दीक्षा की अनुमोदना की। दोनों दीक्षार्थी बहिनों ने जाने-अनजाने में हुई भूलों के लिए सभी से क्षमायाचना की। प्रात: 7 बजकर 20 मिनट पर आचार्य भगवन् ने दोनों मुमुक्षु बहिनों को तीन बारे करेमि भंते के पाठ से सम्पूर्ण सावद्य योगों का त्याग करवाकर पंच परमेष्ठी मंत्र के पंचम् पद पर आरूढ़ किया। नवीन नामकरण नवदीक्षिता साध्वी श्री तृप्तिश्रीजी म.सा. एवं नवदीक्षिता साध्वी श्री दीप्तिश्रीजी म.सा. के नाम की जैसे ही घोषणा हुई पूरी सभा जय-जयकारों व केसरिया-केसरिया गीतों से गूंज उठी।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने **'बधाई हो बधाई हो राम गुरु को'** गीत प्रस्तुत किया। केशलुंचन का कार्य शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. ने संपन्न किया।

इस अवसर पर बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि **''हम किसी व्यक्ति, वस्तु, वातावरण में सुख का अनुभव कर रहे हैं, पर जब वह व्यक्ति मुंह मोड़ता है, वस्तु दूर होने लगती है और वातावरण बदलने लगता है तो हमको दु:ख होता है। ये तीन चीजें न हमारे नियंत्रण में थी, न है और न भविष्य में रहेगी। ये स्थिर नहीं रहेगी। हमें सुख को हमारे ऊपर स्थापित करना है। मैं हमेशा मेरे पास रहूंगा। मैं कभी भी विचलित नहीं होऊंगा। मेरा अपना (सिद्ध) तत्त्व स्वतंत्र है, कभी मिटेगा नहीं। संयम सुख शांति और आनंद देने वाला है। साधु का ही सिद्धांत है कि मुझे सबके साथ अच्छा करना है। चाहे हमारे साथ कोई बुरा करे या अच्छा, हमको अच्छा ही करना है। दुनिया में क्या हो रहा है ये नहीं देखना अपितु मेरे भीतर क्या हो रहा है ये देखना है। मुझे 18 पाप नहीं करने हैं।''**

साध्वी श्री जलजश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि गुरु के आशीर्वाद से ही जीवन का कल्याण होता है। गुरु के प्रति हमारी अटूट श्रद्धा-भक्ति व समर्पणा होनी चाहिए। आरुग्गबोहिलाभं की बहिनों ने अपने भाव गीतिका **'संयम का पथ अतिदुष्कर है, मार्ग यहीं तो सुखकर है'** के माध्यम से रखे।

दीक्षार्थी परिवार की ओर से कु. पूजा बुच्चा एवं सुमित्रादेवी बोथरा ने संयम मार्ग को श्रेष्ठ मार्ग बताते हुए गुरु आज्ञा का सदैव पालन करने एवं जिनशासन को दीपाने की बात कही। संघ मंत्रीजी व महेश नाहटा ने राम महोत्सव की अलौकिक छटा का बखान किया।

सभा में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी सहित अनेक स्थानों के गणमान्यजनों ने उपस्थिति दर्ज कराई।

केन्द्रीय मंत्री श्री अर्जुनरामजी मेघवाल आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन दर्शनार्थ उपस्थित हुए। आपने धार्मिक, सामाजिक विभिन्न विषयों पर द्वय महापुरुषों से चर्चा का लाभ लेकर अपने ज्ञान में अभिवृद्धि की। उदयपुर संघ द्वारा श्री मेघवालजी का साहित्य भेंट कर स्वागत किया गया।

इस प्रकार यह विराट दीक्षा महोत्सव उदयपुर के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया।

23 अगस्त। प्रात:कालीन मंगल बेला में प्रार्थना के पश्चात् आयोजित धर्मसभा में प्रशान्तमना आचार्यदेव ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि ''अहंकार नहीं नमेगा तो कोई कितनी भी तपस्या कर ले, कितनी भी साधना कर ले, उससे बदलाव नहीं हो पाएगा। क्रोध, मान, माया, लोभ बड़े खतरनाक होते हैं, जो हमें संसार

में रोके रखते हैं। यदि उनको नमा लिया गया, कंट्रोल कर लिया गया तो वे दु:ख देने वाले नहीं बनेंगे। उनकी शक्ति क्षीण हो जाएगी और आत्मशक्ति जागृत होगी। मेरा ये लक्ष्य बने कि मैं भी सिद्ध भगवान जैसा बनूं।''

श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने धर्मी एवं अधर्मी जीव की व्याख्या करते हुए नरक निगोद से बचने का आह्वान किया। महिला मंडल एवं वीर माता चंदादेवी गुलगुलिया ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। तपस्या के अनेक प्रत्याख्यान हुए।

दोपहर में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि धार्मिक कार्यक्रम हुए। पर्वाधिराज पर्युषण को सफल बनाने के लिए संघ द्वारा विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व का शानदार आगाज

धन, पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान से कल्याण होने वाला नहीं है -आचार्य श्री रामेश

पर्युषण पर्व हमें जगाने आया है, सालभर का लेखा-जोखा करने आया है।

भूल से भी अगर हुई हो भूल तो, सबसे क्षमायाचना का अवसर आया है।।

24 अगस्त। 22 वर्षों बाद धर्मनगरी उदयपुर को आचार्य श्री रामेश एवं बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. के पावन सान्निध्य में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व मनाने का सौभाग्य प्राप्त होने से चारों ओर खुशियों का माहौल था। प्रवचन पांडाल भी छोटा पड़ रहा था। न केवल उदयपुरवासी अपितु भारतवर्ष के अनेक क्षेत्रों एवं विदेशों से भी श्रद्धालु धर्मप्रेमी जनता भारी संख्या में उपस्थित हुई। श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने तत्त्वज्ञान की कक्षा ली। 24 घण्टे का अखण्ड नवकार महामंत्र जाप अतिथि भवन में ऊपर-नीचे भाई-बहिनों का अलग-अलग कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।

अष्ट दिवसीय जाप के कार्यक्रम में सभी ने उत्साह से भाग लिया। इसके अलावा सवा करोड़ नवकार जाप भी प्रारंभ हुआ। 1-1 व्यक्ति ने नवकार महामंत्र की प्रतिदिन 11-11 माला की जाप साधना की। कई भाई-बहिनों ने अठाई एवं नौ उपवास की तपस्या प्रारंभ की। प्रतिदिन 9 सामायिक की साधना में सैंकड़ों भाई-बहिनों ने लाभ लिया। प्रतिदिन संवर, पौषध, एकासन, दया, आयंबिल, नीवी, उपवास, स्वाध्याय में लोग बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं।

विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''जो अपने आपको नमा लेता है वो परम मंजिल की तरफ आगे बढ़ जाता है। मस्तिष्क ही नहीं अपितु अहंकार को नमाना है। सम्यग्दृष्टि भाव बिना नमाये हो ही नहीं सकता। हमें अहंकार, क्रोध को नमाना है। सम्यक्त्व के पांच लक्षण- सम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा और आस्था हैं। सम यानी समाधि भाव, शान्त भाव, कोई ऊहापोह नहीं, क्रोध नहीं, माया नहीं। वह छल-कपट से हमेशा दूर रहता है। लोभ, लालच आंखों में झलकते नहीं हैं। धन, पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान से कल्याण होने वाला नहीं है। अपने कर्तव्य पर दृष्टि रहनी चाहिए। अपना परीक्षण-निरीक्षण सदैव करते रहना चाहिए। सरलता, सहजता, विनम्रता से अपना जीवन ओत-प्रोत रहना चाहिए। दुनिया की संतुष्टि नहीं अपितु अपनी आत्मसंतुष्टि होनी चाहिए। मुझे अपनी आत्मा को निर्मल और पवित्र बनाना है। 24 घंटे में हम कितना पापकर्म कर रहे हैं और कितना धर्म कर रहे हैं? यह विचारणीय है। संसार के कार्य में उदासीन बनें। किसी भी प्राणी को दु:खी देखकर अनुकंपा भाव रखें। पर्युषण पर्व आत्मा को जगाने के लिए उपस्थित हुआ है। मन, वचन, काया के योग कर्म बांधने के लिए नहीं अपितु कर्म काटने के लिए होने चाहिए। तीर्थंकर वाणी शंका रहित है। इसे बेधड़क स्वीकार किया जा सकता है। इस मार्ग पर चलने से परम

मंजिल की प्राप्ति निश्चित है।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने अपनी दिव्यवाणी में- **'आचार्य हमारे उज्ज्वल सितारे चमके देश में'** गीतिका से महान आचार्यों की गौरवशाली परम्परा का दिग्दर्शन उपस्थित धर्मप्रेमी जनता को कराया। तीर्थंकर देवों की आज्ञा में चलने वाले आचार्यों का दिव्य जीवन सभी के लिए प्रेरणास्पद है। हमारा सौभाग्य है कि ऐसे ज्ञानी, ध्यानी, तपस्वी, कठोर संयम का पालन करने वाले आचार्यों का सान्निध्य हमें प्राप्त हो रहा है। महान क्रियोद्धारक आचार्य पूज्य श्री हुक्मीचंदजी म.सा. की गौरवशाली जीवन गाथा की प्रभावशाली झलक प्रस्तुत की।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने **'जिन वचनों को सुनना, गुरु वचनों को सुनना मिलेगा कहां'** भजन प्रस्तुत किया। आपश्रीजी ने अष्टदिवसीय कार्यक्रम एवं प्रतिदिन नौ सामायिक, उभयकाल प्रतिक्रमण, दो घंटा मौन, 1 घंटा स्वाध्याय, 108 वंदना, नवकार जाप एवं संवर में अधिक से अधिक कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक भाग लेने का आह्वान किया।

संत श्री राजनमुनिजी म.सा. ने अंतकृद्दशांगसूत्र के मूल अर्थ का विवेचन करते हुए फरमाया कि पर्युषण काल में अंतकृद्दशांगसूत्र के वाचन की परंपरा रही है। तपस्वी साधकों के जीवन चरित्र से प्रेरणा लेकर हमें भी अपना जीवन उन्नत बनाना है। शास्त्र के प्रति हमारा श्रद्धा भाव होना चाहिए। यही कल्याण करने वाला है और जीवन को पावन बनाने वाला है। महिला मंडल ने **'जिनशासन के वीरों को वंदन है, अभिनंदन है'** गीत प्रस्तुत किया।

कई भाई-बहिनों ने उपवास, बेला, तेला, पौषध, दया, संवर एवं बड़ी तपस्याओं के पच्चक्खाण लिए। कई गुप्त तपस्याएं निरंतर जारी है। पर्युषण काल में 8 दिन के लिए टी.वी., मोबाइल त्याग, बाहर होटल एवं घूमने जाने का त्याग, रात्रिभोजन त्याग, सचित्त का त्याग, बड़ा स्नान का त्याग, संवर की अठाई, नवकार महामंत्र का अखण्ड जाप आदि करने का नियम सैंकड़ों भाई-बहिनों ने लिया।

उदयपुर के उपनगरों एवं बाहर के श्रद्धालु गुरुचरणों में उपस्थित होकर उत्साहपूर्वक धर्माराधना में लीन हो गए हैं।

दोपहर में श्री अटलमुनिजी म.सा. ने समीक्षण ध्यान प्रयोग विधि करवाते हुए फरमाया कि क्रोध को क्षमा से, मान को नम्रता से, माया को सरलता से और लोभ को संतोष से जीतें। प्रतिदिन यह आत्मचिंतन करें कि मैं कहां से आया हूं? मैं क्या कर रहा हूं? और मुझे कहां जाना है?

रात्रि में श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने जिज्ञासुओं के प्रश्नों के सटीक समाधान किए। आबूधाबी (यू.ए.ई.), दुबई, विराटनगर (नेपाल) के भी श्रद्धालु पर्युषण पर्व की आराधना के लिए उपस्थित हुए।

25 अगस्त। पर्युषण के द्वितीय दिवस प्रात: प्रार्थना पश्चात् **'महामंत्र नवकार करे जीवन साकार'** शिविर में साध्वी श्री सुसौम्याश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि नवकार महामंत्र में अपार शक्ति है। इसके स्मरण मात्र से ही जीवन पावन हो जाता है। इसमें व्यक्ति नहीं गुणों की पूजा की गई है।

विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी मधुरवाणी में फरमाया कि ''आराधक बनने के दो उपाय हैं। संसार को सीमित करने के भी ये ही दो उपाय हैं- परमार्थ भक्ति और सुपात्रदान। यह सरल और आसान तरीका है। (1) द्रव्य की शुद्धि, (2) दान देने वाला भी विशुद्ध और (3) दान लेने वाला भी विशुद्ध। ये त्रिपुटी जहां मिलती है, वहां संसार सीमित हो जाता है। परमार्थ भक्ति का उद्देश्य धन, परिवार, पद-प्रतिष्ठा नहीं, ये सब संसार है। भावपूर्वक जो शुद्धि होगी उसमें आत्मप्रेरणा जगेगी। 'तुझ में मुझ में भेद न पाऊं, जो भेद है वो समाप्त हो जाएं'। स्तुति करने से ज्ञान, दर्शन, चारित्र का बोधि लाभ होता है। स्तुति स्मरण करने से हमारी विचारधारा व परिणामों की धारा निर्मल होती है। अरिहंत-सिद्ध भगवान की स्तुति करते हुए उत्कृष्ट रसायन आने पर तीर्थंकर नामकर्म

का उपार्जन कर लेता है। उनके संयम जीवन की सुरक्षा करने वाला श्रमणोपासक कहलाता है।'' जैसे ही आचार्य भगवन् ने-

''पर्युषण की आई बहार उदयपुर नगरी में, जागो-जागो करें मनुहार उदयपुर नगरी में''

गीत उच्चारित किया तो समस्त जनता भावविभोर हो गई।

उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि गुरु-भगवंतों का सान्निध्य जीवन में परिवर्तन लाता है। गुरुदर्शन का अभाव मार्ग से भटका देता है। परम पूज्य आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म.सा. को गुरु का सान्निध्य मिलने से जीवन में बहुत बड़ा बदलाव आया। गुरु के इंगित इशारों पर चलने वाला सच्चा गुरुभक्त और संघभक्त है। आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म.सा. के जीवन में अनन्य भक्ति थी। आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म.सा. महान साधक थे। उनकी दृष्टि अपने लक्ष्य की ओर टिकी थी।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् का पावन सान्निध्य उदयपुरवासियों को व बाहर के अन्य श्रद्धालुओं को पर्युषण पर्व गोल्डन चांस के रूप में प्राप्त हुआ है। व्यर्थ समय नहीं गंवाना है। धर्म, तप, आराधना के साथ जीवन को ऊंचाइयों पर पहुंचाना है। 29-30-31 अगस्त को तेले तप की आराधना का विशेष आह्वान किया।

श्री राजनमुनिजी म.सा. ने अंतकृद्दशांगसूत्र के मूल और अर्थ का विवेचन करते हुए फरमाया कि तपस्या से कर्मों की निर्जरा होती है एवं मनोबल बढ़ता है। ज्ञानपूर्वक तपस्या मोक्ष की ओर ले जाने वाली है।

शासन दीपिका साध्वी श्री विमलाकँवरजी म.सा., शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (मोड़ी वाले), साध्वी श्री सुमित्राश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विवेकश्रीजी म.सा., साध्वी श्री चिंतनप्रज्ञाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत **'मनवा रुक मत जाना मग में-2, पुण्य से पाए गुरुवर राम'** प्रस्तुत किया।

दोपहर में श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आज चारों ओर वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और न जाने क्या-क्या प्रदूषण फैल रहा है, लेकिन जब तक आत्मा का प्रदूषण यानी राग-द्वेष दूर नहीं होगा, तब तक आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा नहीं बन सकते। दोपहर में साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. ने महामंत्र नवकार करे जीवन साकार शिविर में नवकार महामंत्र की महिमा बताई।

रात्रि में श्री नीरजमुनिजी म.सा. ने जिज्ञासा समाधान कार्यक्रम में श्रद्धालुओं को आत्मसंतुष्ट किया। सामायिक, प्रतिक्रमण, संवर, प्रार्थना, प्रवचन में लोगों की अनुकरणीय उपस्थिति रही।

26 अगस्त। **'महामंत्र नवकार करे जीवन साकार'** शिविर में साध्वी श्री सुसौम्यश्रीजी म.सा. ने गीतिका ''नवकार मुख से बोल तेरा जीवन है अनमोल'' के साथ फरमाया कि नवकार मंत्र का स्मरण भौतिक लक्ष्य के लिए नहीं अपितु आत्मकल्याण की दृष्टि से होना चाहिए।

विशाल जनमेदिनी की उपस्थिति में धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि ''सुख-सम्पत्ति की चाहना हमेशा रहती है। सुख-सम्पत्ति मिले तो हम कहीं भी नम सकते हैं, लेकिन सम्पत्ति के छह अर्थ बताए हैं- सम, दम, तितिक्षा, उपरति, समाधान और श्रद्धा। निंदा-प्रशंसा से समभाव रखने से हमारी प्रसन्नता बनी रहनी चाहिए। इंद्रियों और मन पर नियंत्रण हो। सहनशीलता से धैर्यता और निर्भयता बढ़ती है। हमने उपदेश बहुत सुने पर समय पर उपयोग लेने से ही हमारा जीवन सार्थक बनेगा। 2012 के सर्वे में लिंग जांच और गर्भपात में जैन का नाम सबसे ऊंचा है। जैन कुल में ही नहीं अपितु मानव जाति में ही ऐसी घटना नहीं घटनी चाहिए। कानून जब पक्ष लेना शुरू कर देते हैं तो ऐसे अपराध बढ़ने लग जाते हैं। कत्ल करने की बात एक समझदार इंसान नहीं कर सकता और जैन धर्म में

रहने वाले ऐसे कृत्य करें, पाप करें, वह पानी में आग लगने जैसी बात है।'' उपस्थित हजारों श्रद्धालुओं ने गर्भपात नहीं करवाने और घृणित कार्य में सहयोग नहीं करने का संकल्प आचार्य भगवन् से ग्रहण किया। गर्भपात न करना, न करवाना और न अनुमोदना करना।

उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि बड़ा कौन होता है? बड़ा वही होता है जो छोटा होता है। महान व्यक्ति हमेशा छोटे रहते हैं ओर छोटे व्यक्ति हमेशा फूल रहते हैं। जो ज्ञान गुरु के विनय से मिलता है उसकी महिमा निराली होती है। आपश्रीजी ने **'आचार्य हमारे उज्ज्वल सितारे चमके देश में'** विषयान्तर्गत आचार्यों की गौरवशाली परम्परा में आचार्य श्री उदयसागरजी म.सा. के आदर्श जीवन के बारे में हृदय स्पर्शी व्याख्या प्रस्तुत की।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि महापुरुषों के पावन सान्निध्य में अधिक से अधिक तप-त्याग करके आचार्य भगवन् के चरणों में समर्पित करना है। श्री राजनमुनिजी म.सा. ने अंतकृद्दशांगसूत्र के मूल अर्थ का विवेचन करते हुए फरमाया कि शास्त्र रसीला सुन लीजिए शुद्ध भाव से।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) के राष्ट्रीय पर्यावरण प्रमुख राकेशजी जैन-आगरा गुरुचरणों में उपस्थित हुए। सामायिक, संवर, पौषध, प्रार्थना, प्रवचन एवं पक्खी प्रतिक्रमण सहित नवकार जाप में भारी संख्या में लोगों ने भाग लिया।

दोपहर में साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. ने **'महामंत्र नवकार करे जीवन साकार'** शिविर में एवं श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने जिज्ञासा समाधान कार्यक्रम में जन-जन को सुंदर मार्गदर्शन प्रदान किया। रात्रि में श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने ज्ञानचर्चा में सभी को आत्मतृप्त किया। 'पचखाण से निर्वाण' एवं प्रतिदिन धार्मिक प्रश्न-पत्र सम्पन्न हो रहे हैं।

27 अगस्त। साध्वी श्री सुसौम्यश्रीजी म.सा. ने महामंत्र नवकार की महिमा बताई। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य प्रवर ने अपनी मधुरवाणी में दिव्यदेशना देते हुए फरमाया कि ''धर्म की आराधना निर्भयता एवं स्पष्टता से होती है। मेरे जीवन की पुस्तक स्पष्ट होनी चाहिए। कहीं पर भी चेप नहीं होना चाहिए। जहां चेप होता है वहां भीतर भय व्याप्त होने लगता है। रात को आराम से सो नहीं पाता और दिन में भी आदमी चौकन्ना रहता है कि मुझे कोई देख तो नहीं रहा है, मेरे विषय में कोई बात तो नहीं कर रहा है। वह आशंकित रहता है। यह हमारे मानसिक असंतुलन की बात है। सबसे बड़ा कारण हमारी अपनी समझ है। आत्मा के विषय में गहरी सोच नहीं है। आत्मानुभूति होने के बाद वहां भय नहीं रह पाएगा। भय काया और माया का होता है। तन जाए तो जाए, मेरा सत्य धर्म नहीं जाना चाहिए। अरण्यक श्रावक, सेठ सुदर्शन, कामदेव श्रावक धर्म पर दृढ़ रहे। बहुत कम लोग होते हैं जो नैतिकता और ईमानदारी पर डटे रहते हैं। सत्य को जिसने प्राप्त कर लिया उसको कोई भ्रम नहीं सताएगा। पर्व पर्युषण में अंतकृद्दशांगसूत्र हमें निरंतर नई-नई प्रेरणा प्रदान कर रहा है। कृष्ण वासुदेव, गजसुकुमाल, देवकी महारानी इन तीनों के चरित्र हमारे सामने रहते हैं। कृष्ण सारे कार्यों को गौण करके सबसे पहले अरिष्टनेमि भगवान के दर्शन करते हैं। हमारा भी पहला लक्ष्य आत्महित होना चाहिए। सबसे पहले धर्म कार्य को महत्त्व देना चाहिए।'' आचार्य भगवन् के आह्वान पर कई भाई-बहिनों ने दीक्षा में, तपस्या में व ज्ञान-ध्यान सीखने में अंतराय नहीं देने का संकल्प लिया।

उपाध्याय प्रवर ने **'आचार्य हमारे उज्ज्वल सितारे चमके देश में'** के अंतर्गत आचार्य श्री चौथमलजी म.सा. एवं आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा. के जीवन चरित्र का वर्णन करते हुए विचार शुद्धि और आचार शुद्धि पर जोर दिया।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने तप-त्याग व नवकार जाप करने की अद्भुत प्रेरणा दी। श्री राजनमुनिजी म.सा. ने अंतकृद्दशांगसूत्र में गजसुकुमाल के जीवन पर प्रकाश डालते हुए संयम साधना को सर्वश्रेष्ठ बताया।

साध्वी श्री कमलश्रीजी म.सा. ने गीतिका **'दुनिया का सहारा क्या लेना तेरा एक सहारा काफी है'** प्रस्तुत की। साध्वी श्री महकश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि हमें नोटों की गडियां नहीं अपितु तपस्या की, दया, संवर, पौषध की लड़िया देनी हैं। तपस्या के अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए। जैसे ही आचार्य भगवन् ने चारित्रात्माओं की विभिन्न तपस्याओं की घोषणा की, पूरी सभा जय-जयकारों एवं केसरिया-केसरिया गीतों से गूंज उठी। पूरी सभा अनुमोदना-अनुमोदना बारंबार-बारंबार, शुभकामना-शुभकामना बारंबार-बारंबार से गुंजायमान हो गई।

चित्तौड़गढ़ के सांसद श्री सी.पी. जोशी, भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष दिनेशजी भट्ट आदि कई राजनेताओं ने गुरुदर्शन, प्रवचन व चर्चा का अपूर्व लाभ लिया। दोपहर में साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. ने **'महामंत्र नवकार करे जीवन साकार'** शिविर में फरमाया कि अरिहंत बनने के लिए क्रिया-प्रतिक्रिया से दूर रहें। प्रतिक्रिया से शांत रहे। समाधान अपने भाव से करो और सिद्ध बनने के लिए कषाय रहित जानना और कषाय रहित देखना चाहिए।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने दोपहर एवं रात्रि में जिज्ञासुओं के प्रश्नों का सुंदर समाधान दिया।

28 अगस्त। विशाल धर्मसभा में उपस्थित गुरुभक्तों को संबोधित करते हुए आचार्य प्रवर ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''बुद्धि अगर सही दिशा में लग रही है तो अच्छे रास्ते की ओर कदम बढ़ेगा और बुद्धि सही दिशा में काम नहीं कर रही है तो गलत रास्ते पर भी जा सकते हैं। 24 तीर्थंकर को नमने से बुद्धि पावन-पवित्र हो जाती है। आजकल पैसा परमेश्वर हो गया है। अंतकृद्दशांगसूत्र में श्री कृष्ण की धर्मदलाली की चर्चा करते हुए आचार्यदेव ने फरमाया कि श्रीकृष्ण ने ऐलान किया था कि जो भी दीक्षा लेना चाहे उसके परिवार की जिम्मेदारी मेरी होगी। हम भी संयम मार्ग में बढ़ने वालों के सहयोगी बनें। आज सारी बीमारी की जड़ नशा है। नशे के कारण अपराध की घटनाएं बढ़ रही हैं। तन, मन, धन की बर्बादी हो रही है। सरकार को टैक्स मिलता है किंतु उससे भी ज्यादा बीमारी में लगता है। सूरा, अग्नि, द्वैपायन ऋषि के कारण द्वारिका का विनाश हुआ। जब तक आयंबिल तप चलता रहा तब तक द्वारिका का विनाश नहीं हुआ। दौलत का नशा बहुत खतरनाक नशा है। पैसे संग्रह नहीं करना, अपितु आमदनी को खर्च करना है।''

कुछ भाई-बहिनों ने आमदनी को बढ़ाना नहीं, अपितु खर्च करने का संकल्प लिया। कुछ भाइयों ने 15 ड्रेस से अधिक और बहिनों ने 100 साड़ी से कम रखने का संकल्प खड़े होकर लिया। नशा नहीं करने का भी संकल्प उपस्थित सारी जनता ने लिया। कई भाई-बहिनों ने एक-एक व्यक्ति को व्यसनमुक्त कराने का संकल्प लिया। आचार्य भगवन् के हृदयस्पर्शी प्रवचन का लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने **'आचार्य हमारे उज्ज्वल सितारे चमके देश में'** के माध्यम से महान् क्रांतिकारी युगपुरुष आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. के जीवन चरित्र को मार्मिक व्याख्या देते हुए फरमाया कि **जब तक जीवन में दुःख नहीं आता तब तक ज्ञान नहीं होता। यह जरूरी है कि हमारे जीवन में दुःख नहीं होने से सुख को प्राप्त करने की दिशा में मन की वृत्ति नहीं बढ़ पाती है। सभी व्यक्ति अपने-अपने पुण्य-पाप लेकर आते हैं।**

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने भजन **'निर्मल जल सा मन है जिनका, सागर सा गंभीरा है'** प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि आपकी नजर दूसरों के गुणों पर जानी चाहिए, न कि छिद्रान्वेषण पर। हमारा सबसे बड़ा दुर्गुण है दूसरों के दोषों को देखना। दोष दूसरों का नहीं अपना देखें। ये दुर्गुण बढ़ते भावों को गिराते हैं।

श्री राजनमुनिजी म.सा. ने अंतकृद्दशांगसूत्र के मूल एवं अर्थ का सुंदर विवेचन किया। शासन दीपिका साध्वी श्री

विमलाकँवरजी म.सा., साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा., साध्वी श्री विवेकश्रीजी म.सा. ने **'गवरा का नन्दन सुहाना, जग उजियारा है'** मधुर गीत प्रस्तुत किया।

दोपहर में श्री गगनमुनिजी म.सा. ने धार्मिक क्रियाओं की शुद्ध विधि एवं दया, संवर, पौषध के नियम आदि की सुंदर समझाइश दी। आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए। रात्रि में जिज्ञासा समाधान कार्यक्रम में श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने अत्यंत सारगर्भित समाधान दिए।

29 अगस्त। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि यह पर्व पर्युषण तप-त्याग, संयम की प्रेरणा देने वाला पर्व है। जो अवसरों का उपयोग कर लेता है वह गुरु बनता है। गुरु के वाक्य कसौटी पर कसने के लिए नहीं अपितु जीवन की कसौटी में उतारने के लिए होते हैं। गणेशाचार्य महान् क्रांतिकारी युगपुरुष थे।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आध्यात्मिक आरोग्यम् आगमों का, शास्त्रों का सार है, जो जीवन को आमूलचूल परिवर्तन करता है। गुणपरक दृष्टि रखते हुए छिद्रान्वेषण का जहां त्याग है, वहां जिनशासन है। हमें किसी का अवगुण नहीं देखना है। भाषा में कभी गाली नहीं आनी चाहिए। साथ में रहने वालों के साथ हमें अच्छा व्यवहार रखना चाहिए और भाषा व वचन का सुन्दर प्रयोग करना चाहिए।

श्री गगनमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि **'अपने जीवन के जौहरी स्वयं ही बनें, ना जाने कि ये मौका मिले, ना मिले'** फिर ये पर्व पर्युषण बंधे हुए वैर की गांठ को खोलने आया है। वैर-विरोध से कल्याण होने वाला नहीं है। वैर-विरोध हटा दें तो आत्मा उच्चगामी बनेगी। महापुरुषों के सान्निध्य में अपने जीवन को सरल बनाएं। श्री राजनमुनिजी म.सा. ने अंतकृद्दशांगसूत्र के मूल व अर्थ का सुंदर विवेचन करते हुए फरमाया कि सेठ सुदर्शन की तरह हमें धर्म पर सुदृढ़ होना चाहिए। महान तपोधनी आचार्य भगवन् के मुखारविंद से चारित्रात्माओं एवं श्रावक-श्राविका वर्ग में चल रही तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए।

नवदीक्षिता साध्वीवर्याओं की बड़ी दीक्षा सम्पन्न

अनुपम दीक्षा प्रदाता आचार्य भगवन् के मुखारविंद से नवदीक्षिता साध्वी श्री तृप्तिश्रीजी म.सा., नवदीक्षिता साध्वी श्री दीप्तिश्रीजी म.सा. की बड़ी दीक्षा अत्यन्त धर्मोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुई। आचार्य भगवन् ने दशवैकालिक सूत्र के 4 अध्ययन का पठन करते हुए नवदीक्षिता साध्वीवर्याओं को तीन करण तीन योग से अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का पूर्ण पालन करने हेतु प्रतिज्ञाबद्ध किया। नवदीक्षिता साध्वीवर्याओं ने अपने संकल्प-पत्र गुरुचरणों में समर्पित करते हुए भावोद्गार में फरमाया कि आचार्य भगवन् और उपाध्याय प्रवर की महती कृपा से अनमोल संयम रत्न प्राप्त हुआ है। हम सदैव गुरु आज्ञा एवं सेवा हेतु तत्पर रहेंगे। महापुरुषों के आशीर्वाद से शुद्ध संयम का पालन करते हुए हम अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करें, यही मंगलकामना करते हैं।

इस अवसर पर साध्वी मंडल ने बधाई गीत प्रस्तुत किया। सभा में देश-विदेश के श्रद्धालुओं के अलावा वीर बुच्चा परिवार-देशनोक एवं वीर पारख परिवार-गंगाशहर सहित अपार जनसमूह दीक्षा की अनुमोदनार्थ उपस्थित रहा। दोपहर में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए।

30 अगस्त। परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने विशाल धर्मसभा में उपस्थित ज्ञानपिपासु जनता को संबोधित करते हुए फरमाया कि "भवसागर से पार होने के लिए एक नमन काफी है। एक नमस्कार सारे पापों का नाश करने वाला है। एक द्रव्य नमस्कार दूसरा भाव नमस्कार। द्रव्य नमस्कार में हाथ जोड़ना, सिर झुकाना, उठना, बैठना आदि एवं भाव वंदन हृदय की गहराइयों के साथ होना चाहिए। वंदन करते समय मन, वचन, काया का एकाकार होना चाहिए। इससे अहंकार गलेगा, क्रोध निकट नहीं आएगा। माया,

लोभ दूर हो जाएंगे एवं राग-द्वेष की ग्रंथी टूटेगी। तब निर्वाण की ओर बढ़ेंगे। जैसे माता मरुदेवी सिद्ध बन गई। धर्म की दृढ़ता से धैर्य सहनशीलता आती है। कोई कितना ही प्रहार करे सहनशील रहना चाहिए। मुनि को पृथ्वी के समान सहनशील होना चाहिए। वंदना करने से सब गुण प्रकट होते हैं। क्षमा, नम्रता, सरलता, संतोष हमारे भीतर हैं, पर हम उन्हें प्रकट नहीं कर पा रहे हैं। कोई कितना ही बुरा व्यवहार करे, गालियां देवें, प्रतिकार नहीं करना, आक्रोश नहीं करना। आत्मा का स्मरण रहेगा तो गलत कार्य नहीं होगा। एवंता मुनिवर की कथा के अनुसार हमें किसी का उपहास नहीं करना चाहिए। हम जैसा बीज बोएंगे हमें वैसा फल मिलेगा।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने समता विभूति आचार्य श्री नानेश के अनेक गुणों का स्मरण करते हुए फरमाया कि गुरु का काम है शिक्षा देना, शिष्य का काम है जीवन में उतारना। नाना गुरु ने मात्र दो ही प्रवचन सुने और जीवन में उतार लिए। नाना गुरु को नाना गुण की खान बताया गया है।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त आध्यात्मिक आरोग्यम् के नौ सूत्रों- **गुणपरक दृष्टि, छिद्रान्वेषण का त्याग, इन्द्रिय निग्रह का लक्ष्य, आत्मानुशासन का विकास, विवाद विग्रह से पराङ्मुखता, मैत्रीभावों का विकास, जीवन नियमन, सामूहिक साधना और स्वाध्याय, तत्वानुप्रेक्षा अर्थात् आत्मचिंतन का प्रभाव** आदि की व्याख्या करते हुए फरमाया कि हमें पाप को घटाना है और पुण्य को बढ़ाना है। हमें चाहे कोई देख रहा हो या कोई नहीं देख रहा हो, हमारा जीवन गलत दिशा में न बढ़े।

श्री राजनमुनिजी म.सा. ने अंतकृद्दशांगसूत्र के मूल और अर्थ का विवेचन प्रस्तुत करते हुए अतिमुक्तककुमार की जीवनगाथा का वर्णन करते हुए फरमाया कि जिसने जन्म लिया है वह अवश्य मरेगा, पर मौत कब आएगी यह पता नहीं। अपने किए कर्मों का फल हमें निश्चित ही प्राप्त होता है।

शासन दीपिका साध्वी श्री विमलाकँवरजी म.सा., शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (मोड़ी वाले) आदि साध्वी मंडल ने '**आछो रे आछो घणो लागे रे आछो, राम गुरुवर रो दरबार**' गीतिका प्रस्तुत की।

आचार्य भगवन् के मुखारविंद से चारित्रात्माओं एवं श्रावक-श्राविकाओं के दीर्घ तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए। सभा में अमेरिका से अनुजजी जैन ने गुरुचरणों में उपस्थिति दर्ज कराई।

द्वय महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए। दोपहर में साध्वी श्री सुसौम्याश्रीजी म.सा. ने वर्षभर में जाने-अनजाने में हुई भूलों, अपराधों के लिए गुरुदेव के समक्ष आलोचना करने की अद्भुत प्रेरणा दी। उपस्थित जनता ने 18 पापों की आलोचना मिच्छामि दुक्कडम् उच्चरित कर की।

संवत्सरी महापर्व

31 अगस्त। संवत्सरी महापर्व के पावन अवसर पर धर्मपिपासु जनता गुरुचरणों में कर्मनिर्जरा के उद्देश्य से अपार जनमेदिनी के साथ उपस्थित हुई। धर्मसभा में अपार जनसमुदाय को संबोधित करते हुए प्रशांतमना आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''अपेक्षा दु:ख की जड़ है। अपेक्षा इतनी गहरी न हो जो हमें तनाव में ले जाने वाली बन जाए। जहां अपेक्षा है वहां उपेक्षा सहन करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। तब अपेक्षा दु:ख और तनाव में नहीं ले जाएगी। आज संवत्सरी महापर्व है। संवत्सरी पर्व सारे विश्व को शांति देने वाला है। विश्वशांति के लिए संवत्सरी की मुख्य भूमिका है। पर्यावरण को लेकर विश्व के वैज्ञानिक चिंतित हैं। संवत्सरी पर्व पर्यावरण को कभी भी दूषित करने वाला नहीं है। पर्यावरण में प्रदूषण फैलता है मनुष्य के मन से। मनुष्य का मन यदि पवित्र है तो पर्यावरण दूषित नहीं होगा। झूठ, छल-कपट, मार-

काट से पर्यावरण दूषित होता है। यह पर्व मैत्रीभाव का संदेश देने वाला है। कोई मेरा शत्रु नहीं है। सभी जीव मुझे क्षमा करें। लड़ने के लिए, निंदा करने के लिए मनुष्य तैयार है, लेकिन झुकने के लिए तैयार नहीं है। संवत्सरी पर्व हमें झुकना सिखाता है। यदि किसी के साथ बोलना बंद हो गया है या मन में कोई गांठ है तो सबसे क्षमायाचना कर लें। प्रेम व्यवहार बनाएं रखें। संवत्सरी प्रतिक्रमण तो अवश्य करना ही है। आज सारा पाप धोकर साफ कर लें। हमारा मन पवित्र और साफ होना चाहिए। संयम और तप से कर्मों का क्षय करके सिद्ध मार्ग पर आरुढ़ होकर हम गंतव्य तय करेंगे तो हमें मंजिल मिलेगी। हमें दुनिया की नजरों में नहीं अपनी नजरों में नहीं गिरना है।'' आपश्रीजी ने नाना गुरु के उपकारों का सुखद स्मरण करते हुए तीर्थंकर भगवान, सिद्ध भगवान, अरिहंत भगवान एवं सभी पूर्वाचार्यों के प्रति क्षमायाचना का प्रसंग उपस्थित किया।

आओ-आओ खमा लें, आज संवत्सरी आई। हल्का कर लें बोझ, आज संवत्सरी आई।।

गीत की प्रस्तुति से सम्पूर्ण सभा का माहौल क्षमापना भावों से भर गया।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने फरमाया कि महापुरुषों का जीवन समुद्र के समान है। आत्मविश्वास जब सशक्त होता है तो सारी दुनिया पैरों में खड़ी रहती है और आत्मविश्वास कमजोर होता है तो सारी दुनिया हमारे पैरों को काटती है। अगर तुम सफलता चाहते हो तो सफलता की गति दोगुनी कर दो। आपश्रीजी ने आचार्य श्री नानेश और आचार्य श्री रामेश के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रभावी प्रकाश डाला।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने आध्यात्मिक आरोग्यम् को व्यक्ति, परिवार व देश कल्याण के लिए प्रभावी सूत्र बताते हुए फरमाया कि हमें समस्या नहीं समाधान का अंग बनना है। आपश्रीजी ने शासन नायक आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के निर्लिप्त जीवन की हृदयस्पर्शी व्याख्या करते हुए श्रेष्ठ विचार, श्रेष्ठ आचरण एवं विनय-विवेक से स्मार्ट बनने का आह्वान किया। श्री राजनमुनिजी म.सा. ने अंतकृद्दशांगसूत्र के मूल व अर्थ का विवेचन करते हुए तपस्या को आत्मशुद्धि का श्रेष्ठ उपाय बताया।

श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने पूर्वाचार्यों व वर्तमान शासन नायक की कठोर संयम साधना तथा उपाध्याय प्रवर के अलौकिक जीवन का दिग्दर्शन कराते हुए फरमाया कि सत्य को स्वीकार करना एवं सत्य में अनुरक्ति बहुश्रुत का महत्त्वपूर्ण गुण होता है। ये महापुरुष प्रशंसा से बहुत दूर होते हैं। उपाध्याय प्रवर के आसक्ति रहित तपस्या, साधनामय जीवन को सभी के लिए प्रेरणास्रोत बताया। श्री नीरजमुनिजी म.सा., श्री लाघवमुनिजी म.सा., श्री मयंकमुनिजी म.सा. आदि ने **'जिनपथ लहे'** गीत प्रस्तुत कर सभी को भावविभोर कर दिया।

साध्वी श्री सुमित्राश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि चारों ओर से कषायों को समाप्त करके जीवन को अपने भीतर प्रकट करना ही पर्युषण पर्व मनाना है। धन्य है तपस्विनी आत्माएं, जिन्होंने तप करके अपनी आत्मा को भावित किया है।

शासन दीपिका साध्वी श्री विमलाकँवरजी म.सा. ने फरमाया कि संयम आराधना करने वाले महापुरुषों के सान्निध्य में जाने से संयम की शुद्धता बढ़ती है। साध्वी मंडल ने **'निर्मल जीवन सुहाना, आगम ज्ञान का दिव्य खजाना'** गीत प्रस्तुत किया।

साध्वी श्री सौम्यसुगंधाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि गुरु राम की जितनी महिमा गाई जाए उतनी कम है। आज इन बहिनों ने इतनी बड़ी तपस्या करके अपने जीवन का उद्धार किया है। साध्वी श्री जलजश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि सम्यक्त्व की जीवंत प्रेरणा आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर से साक्षात् मिलती है। हमारी आत्मा संयम और तप से भावित होती है। सरल आत्मा ही शुद्ध आत्मा होती है।

आरुग्गबोहिलाभं की बहिनों ने तपस्या गीत **'तपस्या गुरुचरणों में आई, मासखमण सूं प्रीत लगाई'** प्रस्तुत किया। चातुर्मास समिति संयोजकजी ने कहा कि 22 वर्षों बाद परम उपकारी आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का

चातुर्मास हमें प्राप्त हुआ है। इस **'राम महोत्सव-2022'** में धर्म-ध्यान, त्याग-तप का कीर्तिमान प्रतिदिन स्थापित हो रहा है। हम उभय गुरु-भगवंतों एवं सभी चारित्रात्माओं के उपकारों को कभी नहीं भूल पाएंगे।

संघ मंत्रीजी ने तपस्वी आत्माओं के अपूर्व आत्मबल की सराहना की। महेश नाहटा ने कहा कि आज महान् तपोधनी आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की महती कृपा से 53 मासखमण पूर्ण होने जा रहे हैं और कई तप गतिमान हैं। आचार्य भगवन् के आह्वान से उपस्थित हजारों की संख्या में धर्मप्रेमी जनता ने क्षमाभाव को जीवन में आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। उपस्थित सभी ने जाने-अनजाने में हुई भूलों के लिए आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर सहित समस्त चारित्रात्माओं व चतुर्विध संघ से क्षमायाचना की। दोपहर सवा एक बजे तक धर्मसभा गतिमान रही।

दोपहर में श्री नीरजमुनिजी म.सा. ने आलोयणा पाठ व पाटावली का विवेचन कर गौरवशाली आचार्य परम्परा का बखान किया। आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए। रात्रि में ज्ञानचर्चा हुई। 24 घंटे का अखंड नवकार महामंत्र जाप भाइयों व बहिनों में अलग-अलग आठ दिन तक चलता रहा। सवा करोड़ नवकार जाप भी हुआ। 100 से अधिक अठाई व नौ की तपस्याएं हुई।

पौषध, एकासन, संवर, बेला, तेला, उपवास आदि भारी संख्या में हुए। उदयपुर से बाहर से पधारे धर्मप्रेमी श्रद्धालुओं ने गुरुचरणों में पर्युषण पर्व मनाकर जीवन धन्य किया। दूसरे दिन सामूहिक क्षमायाचना कार्यक्रम संपन्न हुआ।

अहमदाबाद, सूरत, प्रतापगढ़, मोरवन, बम्बोरा, ब्यावर, अजमेर, जयपुर, बीकानेर, देशनोक, गंगाशहर-भीनासर, बालोद, कोयंबटूर, चैन्नई, मुम्बई, कोलकाता, सवाईमाधोपुर, दिल्ली, मैसूर, जोधपुर, किशनगढ़, नीमच, छोड़ीसादड़ी, इंदौर, रतलाम, नागदा, उदयपुर, रायपुर, सूरत, कपासन, जावरा, निम्बाहेड़ा, उज्जैन, नागौर, हावड़ा, नन्दुरबार, जलगांव, मानपुर, दांता, मंदसौर आदि अनेक स्थानों के धर्मप्रेमी भाई-बहिनों ने आराध्यदेव के दर्शन कर वंदन, सेवा एवं प्रवचन श्रवण का लाभ लिया।

तपस्या सूची

संत-सती वर्ग-

श्रद्धेय श्री हेमगिरीजी म.सा.	30 उपवास	श्रद्धेय श्री इभ्यमुनिजी म.सा.	09 उपवास
साध्वी श्री श्रुतिश्रीजी म.सा.	36 उपवास	साध्वी श्री तरुलताश्रीजी म.सा.	30 उपवास
साध्वी श्री पुनिताश्रीजी म.सा.	30 उपवास	साध्वी श्री विशाखाश्रीजी म.सा.	30 उपवास
साध्वी श्री प्रज्ञप्तिश्रीजी म.सा.	30 उपवास	साध्वी श्री खामेमिश्रीजी म.सा.	27 उपवास

श्रावक-श्राविका वर्ग-

उपवास- 56- आशाजी बाबेल, **55-** पुलकितजी गुलगुलिया, **50-** सुनीलजी कदमालिया, **36-** युवा संघ रा. अध्यक्ष अतुलजी पगारिया, चंचलदेवी गोलछा, **31-** सुरेन्द्रजी चौधरी (14 उपवास के दिन 31 के प्रत्याख्यान), **30-** श्रीमती मधुजी कोठारी, गौरवजी चपलोत, सीमाजी पोखरना, नुपुरजी भूरा, सुंदरदेवी मेहता, इन्द्रादेवी डागा, मंजुलताजी मोगरा, गीताजी कोठारी, सुजानमलजी पोखरना, **21-** मंजूजी गांग, **16-** गौरवजी डूंगरपुरिया, पारुलजी जारोली, **15-** मोनिनजी सुराना, तेजसिंहजी पितलिया, शशिजी मेहता, **13-** रजनीजी नाहर, इन्द्राजी नाहर, **11-** चंदादेवी नाहटा, रमेशजी लसोड़, सुनीताजी बोरदिया, चन्द्रकलाजी हिंगड़, मंजूजी वया, नेहाजी बोलियां, **10-** चन्द्रप्रभाजी मोदी, सुप्रियाजी जैन, रेणुजी कदमालिया, धर्मलताजी जारोली, **9-** मंजूजी हिंगड़, नीलमजी वया, दिलीपजी वया, अक्षयजी सहलोत, मुकेशजी कंठालिया, निर्मलजी सिंघवी, हर्षिताजी बाफना, सुनिताजी नलवाया,

चांदमलजी नलवाया, विनम्रजी मोगरा, सुशीलाजी भाणावत, कुसुमजी चावला, नीतूजी जैन, कल्पनाजी जारोली, दियाजी बाफना, रेणुजी हरलावत, प्राचीजी बाफना, कमलाबाई गादिया, सुमनजी नलवाया, सुखीबाई चौपड़ा, पुनमजी वया, योगेशजी कोठारी, शिल्पाजी कोठारी, दिलीपजी वया, **अठाई–** पंकजजी शाह, सौरभजी चपलोत, रेखाजी पगारिया, मधुजी बोलिया, अंजलीजी जारोली, ललिताजी बागमार, शान्ताजी खेमलीवाला, जीतलजी खेमलीवाला, रेनलजी पोरवाल, गुलाबबाई पोखरना, पूजाजी जैन, कुसुमजी पामेचा, ऊषाजी मेहता, संजूजी कोठारी, प्रियलजी जारोली, बिन्दुजी चौधरी, संगीताजी भंसाली, संध्याजी बडाला, संगीताजी मेहता, रचितजी सिंघवी, प्रेमलताजी नाहर, रानीजी मोदी, लताजी चौधरी, दियाजी शाह, ऋतुजी बागरेचा, भावनाजी सहलोत, आलोकजी पोरवाल, आकांक्षाजी नागौरी, उमेशजी दक, लीनाजी कोठारी, चन्द्राजी तातेड़, आयुषीजी कदमालिया, भगवतीजी कावड़िया, कमलादेवी जारोली, विजयजी भाणावत, दिनेशजी डूंगरपुरिया, अर्चिताजी खेमलीवाला, निर्मलाजी खोखावत, शैफालीजी खोखावत, संगीताजी भंसाली, चन्द्राजी जैन, शिखाजी लसोड़, नीलूजी रायसोनी, नन्दप्रभाजी मेहता

क्र. प्रत्याख्यान का नाम	आचार्य प्रवर के सान्निध्य में प्रत्याख्यान ग्रहण करने वाले श्रावक-श्राविकाओं के नाम
1. **आजीवन शीलव्रत**	42 वर्षीय दीपकजी (राष्ट्रीय महामंत्री, श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ) अल्काजी मोगरा-उदयपुर, अजीतजी कांठेड़-नागदा, मोहनलालजी सरलादेवी बाफना-रायपुर, बाबुलालजी कटारिया-रावटी, सज्जनसिंहजी सवितादेवी कोठारी-अहमदाबाद/कानोड़, पारसमलजी चौपड़ा-पाली, सोहनलालजी कटारिया-रावटी, कन्हैयालालजी आंचलिया-बेगूं, वरदीचंदजी धर्मपाल जैन-जावरा, कन्हैयालालजी इच्छुदेवी पारख-सूरत, राजकुमारजी गोलछा-बीकानेर, रोशनलालजी जैन, पुनमचंदजी खटोड़-गुडली, मंजूदेवी गांग, राजेन्द्रजी आशादेवी चंडालिया, अनिलजी डांगी, राजमलजी पुष्पादेवी नलवाया, सरिताजी जैन-पुर, कमलाजी विनायकिया-कांकरोली, गौतमचंदजी नगिनादेवी कटारिया-रतलाम, अरुणा सेठिया-गंगाशहर, लीलाजी कांकरिया-अमलनेर
2. **1 साल में 4 मासमखण**	विजयजी सांड-देशनोक
3. **लगातार 101 सामायिक**	पारसमलजी नागौरी-बड़ीसादड़ी
4. **रात्रिभोजन त्याग**	गुलाबचंदजी सेठिया-गंगाशहर, भावनाजी कोटड़िया-नंदुरबार, प्रवीणजी जैन-सवाईमाधोपुर, सपनाजी मुणोत-रतलाम, विजयकुमारजी गोलछा, धर्मचंदजी बम्बकी-बैंगलोर (जमीकंद त्याग एवं चौविहार भी)
5. **जमीकंद त्याग**	मणिकांताजी ओस्तवाल, भगवतीलालजी सेठिया-भीलवाड़ा (सचित्त का भी त्याग), वरुणजी पितलिया-जावद, गहरीलालजी सहलोत-निकुंभ
6. **चौविहार**	आजीवन- जयश्रीजी कोटड़िया-नंदुरबार, सुनीलजी पगारिया-रतलाम (100 संवर भी)
7. **पक्की नवकारसी**	**आजीवन–** विजयलक्ष्मीजी भूरा-जयपुर, पुष्पाजी पगारिया-शिवगढ़ (100 एकासन भी), सोहनबाई-कंजार्ड़ा, सुशीलाबाई लुणावत-खेतिया (2 हजार सामायिक भी), किरणबाई लुणावत-खेतिया (2 हजार सामायिक भी), भंवरीदेवी सिसोदिया-भीलवाड़ा **350–** सुशीलाजी सहलोत-निकुंभ, नीलूजी चेलावत-जावद

	301– सीमाजी कोठारी–मुम्बई
	300– हेमलताजी डांगी–भीलवाड़ा
	250– जतनजी लोढ़ा
	200– कंचनजी आंचलिया–अहमदाबाद, बेबीबाई पंवार–कानवन
	100– पिंकीजी सेठिया–गंगाशहर, सुनीताजी मुणोत–रतलाम, सरोजजी मांडोत, शोभाजी कटारिया–रावटी, रेखा जी कटारिया, अरुणाजी कटारिया–रावटी, रुचिक बैद मूथा–नासिक, संतोषजी भूरा–देशनोक, अंजनाजी सियाल, लविनाजी धमानी, प्रीतमजी कासमां–रतलाम, सुशीलाजी बैद, अंगूरबालाजी कांठेड़–महिदपुर, चंपालालजी चंडालिया–हावड़ा (साथ में वर्ष में 50 उपवास), मीनाजी पंवार–कानवन, उर्मिलाजी चावत–सावा, राजेन्द्रजी दक–प्रतापगढ़, जेठमलजी मिन्नी–गंगाशहर, चन्द्रकलाजी हिंगड़–आकोला, **50–** धीरजजी सांड–लुधियाना
8. पौरसी	**250–** बसंतीलालजी बरड़िया–रायपुर (25 एकासन भी)
	100 पक्की– मंजूजी बैद मूथा–नासिक
9. दया	**50–** इचियाजी भूरा–गंगाशहर
10. एकासन	**एक साल–** लक्ष्मीदेवी मगनमलजी छाजेड़–हावड़ा (17 साल से जारी), पालीबाई दक (100 एकासन व 100 पक्की पौरसी)
11. सामायिक	**1600–** अचिताजी खेमलीवाला
12. गाथा का स्वाध्याय	**1 लाख–** रानीबाई संचेती–रायपुर, पुष्पाजी चौपड़ा–जबलपुर, राजकुमारीजी पगारिया–जावरा, आशाजी कांठेड़–उज्जैन, गीताजी पामेचा–अहमदाबाद, पूजाजी बुच्चा–देशनोक
	400 प्रतिदिन– हेमलताजी मोगरा
13. 36 उपवास, 51 एकासन	मधुदेवी सुराणा–रायपुर
14. एक वर्ष में 36 उपवास	भगवतीलालजी नौलखा
15. बड़े स्नान का त्याग	**360 दिन–** ताराजी डागलिया–सूरत
	300 दिन– अंजनाजी खींवसरा–चैन्नई (आजीवन चप्पल का भी त्याग), चंदाजी मुकीम–रायपुर, लीलाजी कांकरिया–अमलनेर
16. मोबाइल त्याग	**आजीवन–** राजमलजी मठा–चिकारड़ा
17. वर्षीतप	मंजूजी सेठिया–खंडवा, रंजिताजी ओस्तवाल, अल्काजी सेठिया, अर्चनाश्रीजी कांठेड़, ऊषाजी चौहान–जावरा
18. तेला	**जीवन में 51–** वर्द्धमानजी कटारिया–भीलवाड़ा
19. मिठाई का त्याग	वीर माता नीताजी डांगी–बड़ीसादड़ी, **बाजार की–** प्रकाशजी डांगी–भीलवाड़ा

–महेश नाहटा

।। जय गुरु नाना।। ।। जय महावीर।। ।। जय गुरु राम।।

राम चमकते भानु समाना

60वाँ संघ समर्पणा महोत्सव एवं वार्षिक अधिवेशन-2022

दिनांक : 26-27-28 सितम्बर 2022 **कार्यक्रम विवरण** **स्थान** : उदयपुर (राज.)

26 सितम्बर 2022 - सायं 8:00 बजे से

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ
कार्यसमिति बैठक
आमंत्रित

शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, सह संयोजक, संयोजन मण्डल सदस्य, कार्यसमिति सदस्यगण एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति
कार्यसमिति बैठक
आमंत्रित

शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्षा व मंत्री, प्रवृत्ति संयोजिका, कार्यसमिति सदस्या, पूर्व अध्यक्षा व महामंत्री, महिला समिति आजीवन-साधारण सदस्या एवं विशेष आमंत्रित सदस्या

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ
कार्यसमिति बैठक
आमंत्रित

शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, कार्यसमिति सदस्यगण, स्थानीय शाखा प्रमुख, लीड मेंबर एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

संयुक्त वार्षिक अधिवेशन

(सत्र-1)
27 सितम्बर 2022
मंगलवार
दोपहर 12:15 बजे से

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति
श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ
आमंत्रित : साधुमार्गी परिवार एवं सकल जैन समाज

(सत्र-2)
28 सितम्बर 2022
बुधवार
दोपहर 12:15 बजे से
वार्षिक आम सभा
दोपहर 2:30 बजे से

27 सितम्बर 2022 - सायं 8:00 बजे से

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ
संघ विकास - सर्वांगीण विकास
आमंत्रित

शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, सह संयोजक, संयोजन मण्डल सदस्य, कार्यसमिति सदस्यगण, विशेष आमंत्रित सदस्य एवं स्थानीय संघ अध्यक्ष व मंत्री।

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति
वार्षिक आम सभा
आमंत्रित

शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्षा व मंत्री, प्रवृत्ति संयोजिका, कार्यसमिति सदस्या, पूर्व अध्यक्षा व महामंत्री, महिला समिति आजीवन-साधारण सदस्या एवं विशेष आमंत्रित सदस्या

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ
वार्षिक आम सभा
आमंत्रित

श्री अ.भा.सा.जैन संघ समता युवा संघ के सभी स्तम्भ सदस्यगण एवं सभी साधारण सदस्यगण

आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है ।

निवेदक

राष्ट्रीय महामंत्री
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति **श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ**

स्वार्थ–मान को छोड़ संघ की, सेवा जो नर करता है।
इह–पर लौकिक कष्ट दूर कर, सौख्य संपदा वरता है।।21।।

।। जय महावीर ।।

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय गुरु राम ।।

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

Minority Cell Present's

अल्पसंख्यक स्कॉलरशिप

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक मंत्रालय द्वारा प्रस्तावित

21 जुलाई 2022 से ऑनलाइन आवेदन शुरू हो चुके हैं।

प्रीमेट्रिक 2022-23

अंतिम दिनांक 30-09-2022

पोस्ट मेट्रिक एवं मेरिट कम मीन्स 2022-23

अंतिम दिनांक 31-10-2022

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति फॉर्म भरने के लिए इस पोर्टल का उपयोग करे – https://scholarships.gov.in/

आवश्यक डॉक्यूमेंट्स

- पासपोर्ट साइज फोटो
- मूल निवासी प्रमाण पत्र
- बैंक पास बुक की फोटो कॉपी
- अल्पसंख्यक स्वघोषणा पत्र
- आय प्रमाण पत्र
- पिछली कक्षा की मार्कशीट
- फीस की रसीद

सभी जैन विद्यार्थी अवश्य ध्यान दें

अपने प्रश्न या शंकाएं नीचे दिए गये लिंक पर सबमिट करें

Link - https://forms.gle/FKAFHYDyezEFx8z76

Minority Cell Helpline - 9503571100

Kiran Kankaria - 7999588730, Tanu V Singavi - 9822286444

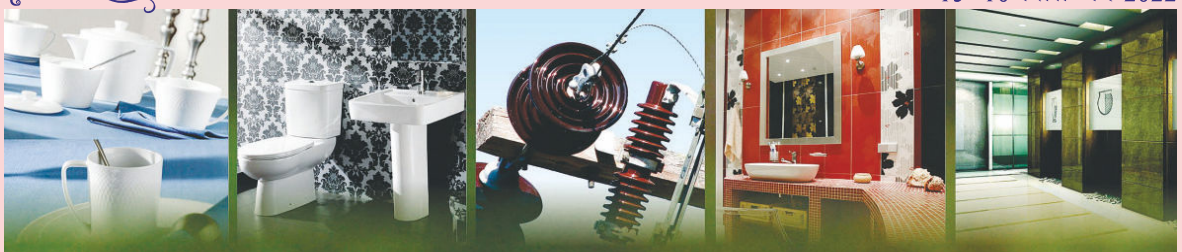

Serving Ceramic Industries Since 1965

हु शि उचौ श्री जग नाना राम चमकते भानु समाना
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, आचार्य-प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिशः वंदन

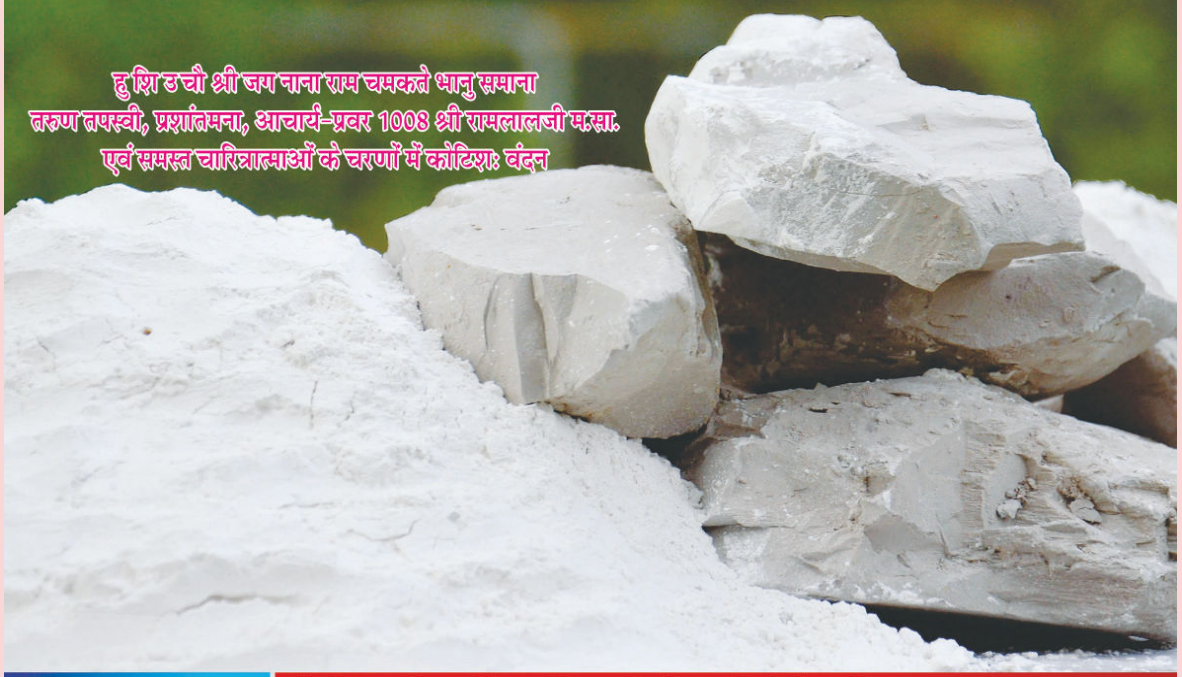

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

CONTRIBUTING TOWARDS THE CANCER TREATMENT

PATIENT ROOM

RECEPTION HALL WITH PARENTS' PHOTO

RK Sipani and Daga Family donated a 390 bed charitable hospital for the poor and needy at KIDWAI Memorial Institute of Oncology.

The block was inaugurated by Shri Kumaraswamy, the honourable Chief Minister of Karnataka on 22nd Dec 2018.

We look forward to contributing to a better world with our upcoming charitable ventures.

RK Sipani Foundation

#439, 18th Main, 6th Block, Koramangala, Bangalore - 560 095
Contact: Prakash 9448733298, Sipani Office: 08041158525 I Email: sipanigrand@gmail.com

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) फोन : 0151-2270261

helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

गौतम चन्द जैन, मुम्बई

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

आजीवन (अर्द्ध मूल्य)	(केवल भारत में)	500/-
	(विदेश हेतु)	10,000/-
वार्षिक	(केवल भारत में)	60/-
	(विदेश हेतु)	1,000/-
वाचनालय वार्षिक	(केवल भारत में)	50/-
प्रस्तुत अंक मूल्य		10/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681

IFSC Code : SBIN0003401

Branch : G.S. ROAD, Bikaner

Mob. : 7073311108

E-mail : accounts@sadhumargi.com

व्हाट्सएप्प और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक	: 9799061990	
साहित्य	: 8209090748	: publications@sadhumargi.com
महिला समिति	: 7231033008	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231933008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय- प्रात: 10.00 से सायं 6.30 बजे तक

लंच- दोपहर 1.00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप्प करें।

जय गुरु नाना जय महावीर जय गुरु राम

YOUR TRUST

RAKSHA PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

FLEXIBILITY IS OUR STRENGTH
RAKSHA
SHAND GROUP
•SINCE 1977•

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand
SHAND GROUP OF INDUSTRIES
No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com

Diamond Duroflex
Diamond DUROLON
DURO RING LEAK PROOF SEAL TECHNOLOGY
Now with new M.R.O. Technology Resists high impact
LEAK PROOF
IS 15778 : 2007
CM/L NO : 2526149
ENVIRONMENT FRIENDLY LEAD FREE
cftri CERTIFIED
UV STABILIZED
LUCALOR FRANCE

FIRST TIME IN INDIA
ISI FITTINGS WITH ADVANCED CO-MOULDED DURO RING SEAL

www.shandgroup.com रक्षा जीवन भर की सुरक्षा www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए भण्डारी ऑफसेट, जोधपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24900

प्रेषक :श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261